हिन्दी

शीराज़ा

जून - जुलाई 2023

प्रमुख संपादक
भारत सिंह (जे.के.ए.एस.)
संपादक
डॉ. रत्न बसोत्रा
सह संपादक
रीटा खडयाल
यशपाल निर्मल

जे.एंड के. अकैडमी आफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजज़, जम्मू

द्विमासिक

शीराज़ा

हिन्दी

प्रमुख संपादक
भारत सिंह (जे.के.ए.एस.)
संपादक
डॉ. रत्न बसोत्रा
सह संपादक
रीटा खडयाल
यशपाल निर्मल

जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, जम्मू

SHEERAZA Regn. No : 28871/76 June - July 2023
(Hindi)

वर्ष : 59 अंक : 02 पूर्णांक : 275

© जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इन से जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रकाशक : सचिव, जे एंड के अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, कैनाल रोड़, जम्मू–180016
फोन : 2542640, 2577643, 2579576

पत्र–व्यवहार : संपादक हिन्दी, जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, कैनाल रोड़, जम्मू–180016

मुद्रक : गवर्नमेंट रणबीर प्रैस, जम्मू।

शुल्क दर : एक प्रति 10रुपये; वार्षिक 50 रुपये।

संपादकीय

कितना अच्छा लगता है जब पानी की नन्हीं बूंदें जादू भरा स्पर्श और मोहक सुगंध लिये आ जाती हैं प्रतीक्षा में तपती धरती को आलिंगन करने, धरती में प्राण फूंकने और तब धरती उत्सव मनाने लगती है। और धरा के साथ–साथ पशु, पक्षी, वृक्ष, जीव–जंतु सभी इस में सम्मिलत हो जाते हैं। मानव मन की हलचलों का तो उस समय कहना ही क्या। बारिश की बूंदें पत्ते पर गिरीं तो ओस और सीप से जा मिली तो मोती। तपती धरती के लिए बारिश का आना किसी संजीवनी बूटी से कम नहीं होता। यूं तो बारिश का सभी को इंतज़ार रहता है। किसान जेठ की तपती धूप में जलती धरती को निहारता है तो आसमान ताकने लगता है। उसे प्रतीक्षा रहती है बरसात की, बारिश की बूंदें धरती पर आते ही उसका रूप बदलने लगता है, सूखी बेजान निष्प्राण सी पड़ी धरा पर हरियाली छाने लगती है। सभी बड़े प्रेम और हर्षोल्लास से अपने पीहर आई बरखा रानी का स्वागत करते हैं।

हमारे गीतों में बरखा को रानी कहकर संबोधित किया जाता है, क्योंकि बारिश में श्रृंगार रस में डूबी नायका किसी मल्लिका से कम नहीं होती। बारिश के प्रति सभी का प्यार अपनी–अपनी तरह से जग ज़ाहिर है किंतु एक पक्षी ऐसा है जो साल भर मानसून की पहली बूंद की प्रतीक्षा करता है क्योंकि बारिश की पहली बूंद का आलिंगन ही उसकी प्यास बुझाता है। क्योंकि वह तो बारिश की पहली बूंद का दीवाना है। वह वर्ष भर बादलों को निहारता है और बादलों की पहली बूंद को खुद में समाना सही अर्थों में उस के प्रेम को दर्शाता है। प्रकृति से अपने प्रेम का रिश्ता यही एक पक्षी निभाता है। ऊंचे वृक्ष की ऊंची फुंनगी पर बैठा चातक बादलों को देखता रहता है इस उम्मीद से कि स्वाति नक्षत्र में बारिश की बूंद उसकी आत्मा को तृप्त करेगी।

जीवन के लिये पानी की याचना करने के साथ ....पीहु....पीहु....करता चातक ऋतुराज बसंत में नहीं अपितु वर्षा काल में ही अपना मुंह खोलता है। उस की इस विरह व्याथा को महादेवी वर्मा इस प्रकार से व्यक्त करती हैं–

''शून्य अंबर लघु भरी से तप गागर
प्रिय बसा उर में सुमग सुधि
खोज की बस्ती कहां ?
रे पपीहे पी कहां ?''

सावन के शुभागमन के शुभ अवसर पर शीराज़ा का प्रस्तुत अंक आप को अर्पित करते हुए हम भी बड़े हर्षित हो रहे हैं। चूंकि हम जानते हैं जिस प्रकार स्वती में पड़ी बारिश की बूंद पपीहे की प्यास बुझाती है, उसी प्रकार साहित्य की पीपासा में निहार रहे हमारे पाठक भी पत्रिका पाते ही तृप्ती का अनुभव करने लगते हैं। हमारा भी यही प्रयास रहता है कि हम साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं से पाठकों को सराबोर करते रहें। हमारा यह अंक आप को कैसा लगा इस विषय में हमें अवगत ज़रूर कराएं। हमें आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. रत्न बसोत्रा
संपादक

इस अंक में

आलेख

- तुलसी की समन्वय भावना / डॉ. बबीता रानी श्रीवास्तव / 08
- जम्मू–कश्मीर में हिन्दी में अनूदित कविता / डॉ. सपना देवी / 19
- हिन्दी व्यंग्य में महिला उपस्थिति / विवेक रंजन श्रीवास्तव / 29
- रसखान के प्रेम की अवधारणा / राजेन्द्र परदेसी / 43

कहानियां

- गुफा / डॉ. गौरी शंकर रैणा / 50
- पहलवान की मूंछ / महाराज कृष्ण संतोषी / 55
- वर्जिनिटी / नीना अंडोत्रा पठानिया / 58
- भूत–प्रेत एक मिथ्या / सतीश कुमार शर्मा / 73

कविताएं

- कोई भी नाम दे दो / डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी / 76
- गज़ल / निर्मल विनोद / 78
- हड़प्पा से छूटा हुआ आदमी / डॉ. सतीश विमल / 79
- कतौते / डॉ. रत्न बसोत्रा / 80
- कविता / नरेश कुमार उदास / 82
- गज़ल / अनिला सिंह चाड़क / 85
- एक नदी / गोवर्धन यादव / 86
- हाइकु / यशपाल निर्मल / 87
- इंसानियत / हेमा चंदानी अंजुलि / 92
- संबंध / केशव मोहन पांडेय / 93
- कुछ छूट तो नहीं रहा / आशा पांडेय / 95

- आज की रात / राजऋषि वर्मा / 97
- सूरज / गौरीशंकर वैश्य विनम्र / 98
- अपना ही छप्पर / डॉ. सतीश चंद्र शर्मा ''सुधांशु'' / 100
- हाइकु / सत्येन्द्र छिब्बर / 101
- पेट की भूख / सरोज बाला / 103

लघुकथाएं

- वेलेंटाइन डे / अश्विनी कुमार अलोक / 105
- जवाब / कृष्ण चंद्र महादेविया / 107
- उम्र / हरीश कुमार ''अमित'' / 109
- साया / बिंदिया रैना टिक्कू / 110

बाल साहित्य

- किस्सा तरकीबूराम का / दिविक रमेश / 112
- समुद्री ईगलों की अद्‌भुत उड़ान / डॉ. राकेश चक्र / 119

निबंध

- कला मांगने की / नंदन पंडित / 124

संस्मरण

- बेटियोत्सव / आर्यावर्ती सरोज ''आर्या'' / 128

व्यंग्य

- पांडेय जी और पुस्तक मेले का शगल / लालित्य ललित / 133

पुस्तक समीक्षा

- सुविचार संग्रह : मेरी नज़र में / डॉ. चंचल भसीन / 143

आलेख

तुलसी की समन्वय भावना

-डॉ. बबीता रानी श्रीवास्तव

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' की विमल कथा का गान सात सोपानों में वर्णित किया गया है | प्रत्येक सोपान भारतीय दर्शन के विभिन्न मतों की पुष्टि करते हुए उनके समन्वय का संदेश देता है|

'सप्त प्रबंध सुभग सोपाना, ज्ञान नयन निरखत मन माना |'

-रामचरितमानस, बालकांड 37

मानस पियूष के आधार पर इन सोपानों की व्याख्या दर्शनशास्त्र के आधार पर की है | इसके आधार पर पहला सोपान सांख्यशास्त्र, दूसरा वैशेषिकशास्त्र , तीसरा मीमांसा शास्त्र , चौथा योगशास्त्र, पांचवां न्याय शास्त्र , छठा वेदांत और सातवाँ साम्राज्य शास्त्र है |

-मानस पियूष, बालकांड, 1/37/1

तुलसी की कृतियों में सर्वत्र समन्यवादी दृष्टि प्रतिबिंबित होती है | मानस में भी 'कर्म-ज्ञान-उपासना' तीनों के निर्मल प्रवाह से ईश्वरीय साक्षात्कार होता है | ज्ञान+योग+कर्म का पारस्परिक समन्वय ही भक्ति का एकमात्र आधार व जीवन दर्शन है | ज्ञान रहित भक्ति कोरी भावुकता है, योग रहित भक्ति सार रहित विवशता, कर्म रहित भक्ति परोपजीवी निरीहता है |

-विद्यानिवास मिश्र – 'रामायण का काव्य मर्म' पृष्ठ -392

कर्म की गति प्रबल है | ज्ञान और योग के समन्वय से व्यक्तित्व का विकास होता है | सुख – दुख कर्मों के आधार पर ही निश्चित होते हैं | अच्छे कर्म, अच्छा संग ही विकास की सर्वप्रथम सीढ़ी है | 'मानस' में कहा गया है –

"मुद मंगलमय संत समाजू | जो जग जंगम तीरथ राजू |
रामभगति जहं सुरसरि धारा | सरसइ ब्रहम विचार प्रचारा |
विधि – निषेध मय कलिमल हरनी , करम कथा रवि नंदनि वरणी |

-रामचरितमानस, बालकांड, दोहा 7

तुलसी सच्चे लोक नायक कवि थे | महात्मा बुद्ध के समान वे समन्वयकारी थे| पाश्चत्य मार्क्स वादी दर्शन जहाँ द्वंदात्मकता में समस्याओं का हल खोजता है वहाँ भारतीय दर्शन और संस्कृति भिन्न – भिन्न विरोधी तत्वों के सुंदर समन्वय में हल ढूंढ़ते हैं | यही भारत का पाश्चत्य जगत से मौलिक अंतर है और यही भारत की विशेषता है | तुलसी भारतीय संस्कृति के एक ज्वलंत प्रतीक हैं , वे कलिकाल के वाल्मीकि हैं | मुग़ल शासन काल के सबसे बड़े व्यक्ति और कदाचित महात्मा बुद्ध के पश्चात् भारत के सबसे बड़े लोकनायक हैं| तुलसी ने जिस समाज को देखा था वह बड़ा विचित्र - सा था | तुलसी के ग्रंथों में इस बात का स्पष्ट आभास मिलाता है कि उस समय का समाज किसी ऊँचे आदर्श पर नहीं चल रहा था | उच्च स्तर के लोग विलासिता में चूर थे और निचले स्तर के लोग अशिक्षित थे |

पंडितों और ज्ञानियों का समाज से कोई सरोकार नहीं ही था | जाति प्रथा कठोर होती जा रही थी | सामाजिक मर्यादाओं का खुल कर अतिक्रमण हो रहा था | जीवन एक संघर्ष न रह कर पलायन का पर्याय बनता जा रहा था |

'नारी मुई घर संपति नासी, मूंड मुंडाय भये संन्यासी इस प्रकार वैरागी या संन्यासी हो जाना साधारण सी बात थी | इन्हीं के द्वारा वेद , पुराण, शास्त्र, धर्म, साधु-संतों तथा पुरातन भारतीय संस्कृति के आदर्शों और मर्यादाओं पर व्यंग्य किए जाते थे । दूसरी ओर देश का धार्मिक क्षेत्र नाना प्रकार के सम्प्रदायों और अखाड़ों से भर चुका था | जहाँ एक ओर अलख जगाने वाले नाथ पंथी योगियों का अशिक्षित वर्ग पर प्रभाव पड़ रहा था तो वहीं दूसरी ओर जात-पात विरोधी कबीर अलखोपासना का संदेश दे रहे थे | इधर शाक्त संप्रदाय दो भागों में विभक्त हो गया | एक ओर शैवों और वैष्णवों में विरोध था तो दूसरी ओर वैष्णवों में राम और कृष्ण के अनुयायियों में परस्पर मतभेद था | द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद और शुद्धाद्वैतवाद न जाने कितने दार्शनिक मतवाद परस्पर टकरा रहे थे|

कट्टर शासकों के अत्याचार प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे | सूफी फकीरों की प्रेमोपाख्यानों की चाशनी ऊपर से मीठी अवश्य थी , किंतु उसमें भी आम जनता के लिए कोई दिशा नज़र नहीं आ रही थी | इस प्रकार जनता धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में उचित पथ प्रदर्शन के अभाव में आदर्शविहीन, उच्छृंखल, पंगु एवं विश्रृंखल हो चुकी थी|

तत्कालीन समाज आर्थिक रूप से भी कोई कम विपन्न नहीं था। इस संबंध में तुलसी के साहित्य में अनेक स्थलों पर संकेत हैं-

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि ।
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।।'

'जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस
कहैं एक एकन सौं कहाँ जाएँ का करी।'

तुलसी लिखते हैं कि एक तो कलिकाल था दूसरे उसमें अनेक शूल थे। वेद और धर्म दूर हो चुके थे। भूप भूमि चोर बन चुके थे । सज्जन सर्वत्र दुखित और व्यथित थे । सर्वत्र पाप ही पाप था । कहने का तात्पर्य यह है कि तुलसी के समय का समाज नैतिक , धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से ह्रासोन्मुख था।

प्रबुद्धचेता, स्वतंत्र कलाकार एवं जनता के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास के सम्मुख एक महान कार्य था जिसे कि उन्हें अत्यंत कौशल और कलात्मकता से संपन्न करना था । जिस प्रकार महाभारत देश की विभिन्न जातियों में सामंजस्य स्थापित करके जीवन , साहित्य और दर्शन सभी क्षेत्रों में योगिराज कृष्ण ने ज्ञान , कर्म और भक्ति के समन्वय से तत्कालीन जन समूह का मार्ग प्रशस्त किया , और जिस प्रकार महात्मा बुद्ध ने वैदिक कर्मकांड और हिंसावाद का घोर विरोध जनता का नेतृत्व करके किया, उसी प्रकार तुलसी ने भारत देश की भिन्न विचार पद्धतियों , साधनाओं, विरोधी संस्कृतियों और भिन्न जातियों में सामंजस्य स्थापित करके जीवन , साहित्य, और दर्शन सभी क्षेत्रों में समन्वयवाद का विराट आदर्श स्थापित किया है।

उन्होंने यह महति कार्य करके सही अर्थों में अपने आप को लोकनायक सिद्ध कर दिया| आचार्य द्विवेदी का कहना है –

"लोकनायक वही हो सकता है जो समवाय कर सके | क्योंकि भारतीय जनता में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ , साधनाएँ, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतियाँ प्रचलित हैं | बुद्धदेव समन्वयकारी थे|" आगे चल कर वे लिखते हैं – "उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है | लोक और शास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ्य और वैराग्य का समन्वय , पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय, रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय काव्य है| इस समन्वय कार्य में उन्हें आशातीत सफलता मिली | कारण एक , समन्वयवादी लोकनायक में समझौते की जो प्रवृति अपेक्षित होती है वह उनमें थी| तुलसीदास को ऐसा करना पड़ा है|

ऐसा करने की जिस असामान्य दक्षता की ज़रुरत थी वह उनमें थी |" उनमें समन्वय करने का अपार धैर्य था और साथ – साथ उन्होंने भारतीय समाज की नाना संस्कृतियों, साधनाओं, आचार-विचारों एवं पद्धतियों को खुली आँख से देखा था | वे स्वयं समाज के नाना स्तरों में रह चुके थे | उच्च ब्राह्मण कुल में उनका जन्म हुआ | दरिद्रता के कारण उन्हें दर-दर भटकना पड़ा | एक ओर जहाँ इन्हें काशी के दिग्गज विद्वानों का सानिद्ध्य प्राप्त हुआ वहीं दूसरी ओर अशिक्षित वर्ग के साथ रहने का भी अवसर मिला | एक ओर इन्होंने जीवन के प्रति आसक्ति की पराकाष्ठा देखी वहीं दूसरी और उन्हें तप और संन्यास का भी अनुभव मिला | उन्होंने पुराण और लोकप्रिय साहित्य का गहन अध्ययन किया था | भारत के नाना धर्म , दर्शन,

समाज और साहित्यगत विरोधों और विसंगतियों को देखकर उनकी समन्वयात्मक बुद्धि में सहिष्णुता का उदय हुआ | यह उनकी एक मनोवैज्ञानिक सूझ- बूझ थी और उसका सदुपयोग करते हुए अपने युग की नब्ज़ को टटोला | इस प्रकार उन्होंने अपने युग के सभी विरोधी तत्वों का परिहार एवं समाज के विकृत रूप का परिष्कार करते हुए धर्म, दर्शन, साहित्य और समाज में समन्वय की भावना को मूर्त रूप दिया तथा सच्चे लोक धर्म की प्रतिष्ठा करके प्रशस्त लोकनेतृत्व का दायित्व पूरा किया | इस सब का श्रेय उनकी सार ग्राहिणी समन्वयात्मिका बुद्धि को है।"

तुलसीदास के समन्वय की भावना भिन्न –भिन्न क्षेत्रों में देखने को मिलती है –

धार्मिक क्षेत्र में समन्वय

तुलसी एक महान स्रष्टा एवं जीवन द्रष्टा कवि हैं | उन्होंने मध्ययुगीन भारत की संपूर्ण चेतना को काव्यमयी वाणी दी है | तुलसी ने कतिपय सम्प्रदायों की निंदा इसलिए की क्योंकि उनमें लोक विद्वेष था और धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार था –

"तजि श्रुति पंथ वाम पंथ चलहीं , वंचक विरचि वेष जग छलहीं।"

वर्ण व्यवस्था के समर्थक तुलसी ने कबीर की जात – पात विरोधी अलखोपासना को जन-सामान्य के लिए अश्रेयस्कर समझा और कहा-

"हम लखि, लखहि हमार, लखि हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहि का लखहि, राम नाम जपु नीच।।"

उन्होंने नाथ पंथियों की कृ च्छ्र योग साधना को लोक विद्वेषिनी मान कर उसे अनुचित ठहराया –

"गोरख जगायो जोग, भगति भगायो भोग।"

इधर प्रेम मार्गियों की उपासना पद्धति को श्रेयस्कर न समझते हुए **–"कहि-कहि उपाख्यान ------- ।"** कह कर अवांछनीय ठहराया । तुलसी के समय शैवों और वैष्णवों में पर्याप्त कटुता आ चुकी थी। उन्होंने अपने 'रामचरितमानस' में अनेक स्थलों पर राम को शिव का और शिव को राम का उपासक बताकर उनकी अभिन्नता द्वारा पारस्परिक वैमनस्य का परिहार किया है । तुलसी के राम की स्पष्ट घोषणा है –

"शिव द्रोही मम दास कहावा।
सो नर मोहे सपनेहु नहीं भावा।।"

उन्होंने सगुण, अगुण, ज्ञान, भक्ति, कर्म का उचित स्थान निर्धारित करते हुए उनके महत्त्व का प्रतिपादन किया है । गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति एकमात्र अभीष्ट है । भक्ति का साधन ज्ञान है और ज्ञान की प्राप्ति के लिए जप , तप, व्रत, अध्ययन और संत समागम आदि कर्म आवश्यक हैं -

"अगुनहि, सगुनहि , नहीं कछु भेदा , गावहिं श्रुति पुराण बुध वेदा।
अगुण, अरूप अलख जगजोई, भक्ति प्रेम बस सगुनसो होई ।।"

तुलसी ने यह सब कुछ पक्षपात रहित होकर कहा है । इनमें कहीं भी गर्व और गुमान नहीं है। उन्होंने लोक संग्रहात्मक वेद पुराण तथा संतमत का बखान किया है । उन्होंने द्वैतवाद, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद तथा शुद्धाद्वैतवाद – अपने समय के सभी दार्शनिक सिद्धांतों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए सब में समन्वय प्रस्तुत किया है। उनका सभी मतावलंबियों से विनम्र निवेदन है –

"कोउ कह सत्य, झूठ कह कोउ, जुगल प्रबल कोई भावै।
तुलसी परिहरहि तीनि भ्रम, सो आपुन पहिचानै।।"

तुलसी का विश्वास है कि जगत को सत्यासत्य , सत्य और मिथ्या मानने वालों के भ्रम से ऊपर उठने पर ही सियाराम मय जगत की पहचान हो सकती है। जो कि परम काम्य है –

"सियाराम मय सब जग जानि, करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी।"

इस प्रकार तुलसी ने अपने समय में प्रचलित विभिन्न देवी – देवताओं की वंदना पौराणिक प्रतीकों के रूप में की है और लोक प्रचलित मंगलकारी ईश्वर के सभी रूपों की वंदना की है। किंतु अनेक दार्शनिक समन्वय को देखते हुए यह नहीं भूलना चाहिए कि तुलसी लोक मर्यादा, वर्ण व्यवस्था, सदाचार व्यवस्था – सबका श्रुति सम्मत होने का सदा ध्यान रखते हैं|

सामाजिक क्षेत्र में समन्वय

तुलसी के समय का समाज आदर्श विहीन , संस्कृति रहित, पथ भ्रष्ट, मर्यादा पतित, तथा नितांत ह्रासोन्मुख था | उनके 'कलिमहिमा' वर्णन में तत्कालीन अधोमुख समाज का चित्रण है और उनके 'रामराज्य' में उसके आदर्श रूप की कल्पना की गई है | तुलसी ने सामाजिक जीवन का मूल्यांकन आचार की कसौटी पर किया है | तुलसीदास का दृढ़ विश्वास है कि पुरातन धार्मिक तथा सांस्कृतिक मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाले समाज का नाश अवश्यम्भावी है | व्यक्ति और परिवार आदर्श समाज की आधारशिलाएँ हैं | तुलसी के राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श प्रजापालक और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं | सीता आदर्श पत्नी हैं| कौशल्या आदर्श माता हैं | लक्ष्मण और भरत आदर्श भाई हैं | हनुमान आदर्श सेवक हैं | और सुग्रीव आदर्श सखा हैं|

तुलसी की मान्यता के अनुसार आदर्श समाज के लिए वर्ण व्यवस्था का पालन आवश्यक है –

"वरनाश्रम निज –निज धरम, निरत वेद पथ लोग|
चलहिं सदा पावहिं सुख, नहीं भव शोक न रोग||"

तुलसीदास लोकमंगल भावना की दृष्टि से समाज में समर्याद छोटी-बड़ी श्रेणियों का विधान अनिवार्य मानते हैं | मर्यादा के बिना समाज उच्छृंखल हो जाता है | और उसका शरीर जीर्ण - शीर्ण हो जाता है | समन्वयवादी होते हुए भी वे मर्यादावाद के प्रबल समर्थक हैं | आदर्श और स्वस्थ जीवन में वे संतुलन के पक्षपाती हैं| उनके राम में शील, शक्ति, सौंदर्य का समन्वय है| राम मर्यादा के पथ से तिल भर भी नहीं हटते | तुलसी ने अपने समय की सामाजिक

परिस्थितियों का निदान वर्ण व्यवस्था के प्रतिपादन के साथ – साथ उदार भक्ति परंपरा के निरूपण में उचित समझा। उन्होंने न्याय और समता की व्यवस्था का आदर्श सामने रखकर लोक संघर्ष को प्रेरणा दी।

साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय

तुलसी ने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपने अद्भुत कौशल का परिचय दिया है । डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में – "उन्होंने नाना पुराणों और निगमागमों का अध्ययन किया था और साथ ही लोकप्रिय साहित्य और साधना मार्ग की नाड़ी पहचानने का अवसर उन्हें मिला था । उस युग में प्रचलित सब प्रकार की काव्य पद्धतियों को उन्होंने विनय के पद , सूरदास और विद्यापति की लीला गान विषयक भाव प्रधान गीति पद्धति , जायसी, केशवदास को अपनी शक्तिशाली भाषा की सवारी पर चढ़ाया था । उनकी काव्य पद्धति का अध्ययन करने से उनकी अद्भुत समन्वयात्मिका बुद्धि का परिचय मिलता है । शिक्षित जनता में जितने प्रकार की काव्य पद्धतियों का प्रचलन था ; उन सबको उन्होंने सफलतापूर्वक अपनाया था । चंद के छप्पय कुंडलियाँ, कबीर के दोहे और, ईश्वरदास आदि की दोहा–चौपाइयों की शैली, गंग आदि भाट कवियों की सवैया कवित्त की पद्धति काव्य रूपों को उन्होंने अपनाया है ।"

इस प्रकार उनमें प्रबंध और मुक्तक, श्रव्य और दृश्य, ब्रज और अवधी, भाषा और संस्कृति , रहीम के बरवै , सबको उन्होंने अपनी अद्भुत ग्राहिका शक्ति के द्वारा आत्मसात किया । उस समय पूर्व भारत में अनेक प्रकार के मंगल काव्य प्रचलित थे ।

.....तुलसीदास ने इस शैली को भी अपनाया | उन्होंने 'पार्वती मंगल' और 'जानकी मंगल' नाम के काव्य लिखे थे | इस प्रकार उन दिनों साधरण जनता में प्रचलित सोहर, नहछू गीत, चांचर, थैली बसंत आदि रागों में भी उन्होंने काव्य लिखे | इस प्रकार साधारण जनता में प्रचलित गीति पद्धति से लेकर शिक्षित वर्ग में प्रचलित संस्कृति, भाषा और भाव, छंद और अलंकार, भक्ति और कविता, लोकहित और मर्यादा सबका कलात्मक सामंजस्य है | समाज, साहित्य, संस्कृति और दर्शन क्षेत्रों में तुलसीदास के समन्वयकारी व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण है |

प्रोफेसर बलदेव प्रसाद मिश्र के शब्दों में – "गीता का अनासक्ति योग, बौद्धों और जैनों का अहिंसावाद, वैष्णवों और शैवों का अनुराग, शाक्तों का जप, शंकर का अद्वैतवाद, रामानुज की भक्ति भावना, निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद , रामोपासना, बालकृष्णोपासना, चैतन्य का प्रेम, गोरख आदि योगियों का संयम, कबीर आदि संतों का नाम माहात्म्य, रामकृष्ण परमहंस का समन्वयवाद, ब्रह्म समाज की ब्राह्म कृपा, आर्य समाज का आर्य संगठन और गांधीवाद की सत्य अहिंसा मूलक आस्तिकतापूर्ण लोकसेवा आदि सब कुछ तो उसमें है ही, साथ ही मुसलमानों का मानव बंधुत्व और ईसाईयों की श्रद्धा तथा करुणा से पूर्ण सदाचार भी क्रीड़ा कर रहा है।"

ooo

सहायक निदेशक (भाषा)
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
नई दिल्ली

जम्मू कश्मीर में हिन्दी में अनूदित कविता

-डॉ. सपना देवी

'अनुवाद शब्द का सम्बन्ध 'वद' धातु से है जिसका अर्थ होता है 'बोलना 'या 'कहना' । अनुवाद का मूल अर्थ है ' पुनः कथन ' या ' किसी के कहने के बाद कहना '। किसी भाषा से अभिव्यक्त विचारों को दूसरी भाषा से यथावत प्रस्तुत करना अनुवाद है । इस विशेष अर्थ में ही 'अनुवाद' शब्द का अभिप्राय सुनिश्चित है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, वह मूलभाषा या स्रोतभाषा है। उससे जिस नई भाषा में अनुवाद करना है , वह 'प्रस्तुत भाषा' या 'लक्ष्य भाषा' है। इस तरह, स्रोत भाषा में प्रस्तुत भाव या विचार को बिना किसी परिवर्तन के लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करना ही अनुवाद है। इसे संस्कृत एवं हिन्दी में 'अनुवाद' कहा है , पंजाबी में उथला , उर्दू में तर्जमा, कश्मीर में तरजमु , सिंधी में तर्जुमों , मराठी में भाषान्तर , अंग्रेज़ा में 'ट्रांस्लेशन' कहा जाता है ।

अनुवाद स्रोत भाषा के पाठ के कथन और कथ्य को लक्ष्य भाषा के सहज एवं समतुल्य अभिव्यक्ति है । भोलानाथ तिवारी के शब्दों में 'किसी भाषा में प्राप्त सामग्री को दूसरी भाषा में भाषान्तरण करना अनुवाद है , दूसरे शब्दों में एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथा सम्भव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है। ' दूर - दूर सीमाओं में बंटा मानव, अनुवाद के माध्यम से ही समीप आता है । अनुवाद के

माध्यम से प्रेमचंद , टैगोर, चेखव, टालस्टाय, पारुलो नेरूदा आदि रचनाएं संसार भर में जानी मानी गईं और इसके फलस्वरूप साहित्य एवं कला की विश्व चेतना का विकास हो रहा है ।

काव्य अर्थात् कविता का अनुवाद विवाद का विषय रहा है। इसे 'असंभव' भी कहा जाता है । लेकिन इसके बावजूद काव्यानुवाद होते रहे हैं और हो रहें हैं। जम्मू-कश्मीर की कविताओं को हिन्दी में अनूदित कर देश के पाठकों तक पहुंचाने का श्रेय यहां के अनुवादकों को जाता है। कविताओं के अनुवादक प्रायः कवि ही होते हैं। जम्मू-कश्मीर के हिन्दी काव्यनुवादकों में कवि भी हैं , कविता प्रेमी भी , समीक्षक और प्राध्यापक भी हैं और जो कवि नहीं हैं या जिनकी पहचान कवि के रूप में नहीं है ऐसे अनुवादकों ने सांस्कृतिक दायित्व निभाने के लिए मानो इस जोखिम को उठाया है । जरूरी नहीं की सफल अनुवादक हो लेकिन कवि के लिए यह कठिन कर्म सहज हो जाता है क्योंकि कवि को सृजन प्रक्रिया से गुज़रने का अभ्यास होता है। उसे कविता के अंतरंग संसार की बाहरी पहचान होती है। इस बात को गिरिजा कुमार माथुर सरल शब्दों में कहते हैं - " जब तक मूल कवि की समस्त प्रेरणा और संवेदनाभूति में अनुवादक पूरी तरह डूब नहीं जाता जिस सृजन पर मूल खड़ा है ..... तब तक कविता का सफल और सही अनुवाद नहीं हो सकता ।" जम्मू कश्मीर में लगभग 60 के दशक से हिन्दी में अनूदित काव्य सामने आया है । लेकिन इस लेख में हम समकालीन अनूदित हिन्दी काव्य पर ही चर्चा करेंगे ।

साहित्य अकादमी ने 2004 में कार्यशाला आयोजित की एवं डोगरी कविताओं को अनूदित कर हिन्दी में एक संग्रह प्रकाशित किया जिसका सम्पादन डॉ. ओम गोस्वामी जी ने किया इसमें मुख्यत: कविताएं डोगरी के वरिष्ठ कवियों व साहित्यकारों की थी । उदाहरण स्वरुप प्रो. रामनाथ शास्त्री जी की ' बाम्बिया' व अन्य कविताओं को डोगरी व हिन्दी में कवि सुनील शर्मा ने अनूदित किया था । इसके साथ इसमें पद्मा सचदेव की कुछ चयनित कविताओं का हिंदी अनुवाद कर पाठक चर्चा तक पहुंचाने का अदभुत व सराहनीय कार्य भी उन्होंने किया ।

'उजला राजमार्ग 'नामक साहित्य अकादमी द्वारा 2005 में प्रकाशित पुस्तक के लिए कश्मीर से हिन्दी में दर्जन भर कविताओं का अनुवाद डॉ. निंदा नवाज़ ने किया है । इसमें रफीक राज की कश्मीरी कविता का ' पिकनिक' नाम से, मोतीलाल साकी की 'मन्दोर' का भवन , काजी गुलाम मोहम्मद की ' अरब प्रोन शहर ' का 'एक प्राचीन शहर ', मजफ्फर आज़िम की 'वहम' का 'भ्रम' में हिन्दी अनुवाद किया है ।

'भवन' कविता का उदाहरण_____

"इस भवन में लगे हैं चूहे
ऊपर भी
और नीचे भी
एक युग से
ये भीतर ही भीतर

कुरेद रहे हैं इसे ।"

उनका स्वयं का मानना है--- ' जहां तक कविताओं के अनुवाद का प्रश्न है, एक अनुवादक की महत्वपूर्ण भूमिका शब्द अनुवाद नहीं बल्कि भाव अनुवाद को प्राथमिकता देनी होती है जहां संवेदनाओं का तोड़ - फोड़ न हो , बिम्ब विकृत न हों , कविता का बुनियादी विचार आहत न हो और प्रतीक, उपमा आदि अलंकार न लंगड़ाएं ।' इनके अनुवाद का प्रयास प्रशंसनीय कहा जा सकता है । अनुवाद कर्म एक निष्ठा की मांग करता है । यह निष्ठा भाषा के प्रति , कथ्य के प्रति और यथासंभव शैली के प्रति भी उपेक्षित है ।

अग्निशेखर ने 14 वीं शताब्दी की आदि कवियत्री लल्लेश्वरी की प्रतिनिधि वाखों का हिंदी अनुवाद , नुंद ऋषि के कुछ प्रतिनिधि ´श्रोखु' का श्लोक नाम से हिन्दी अनुवाद किया है । साथ ही आधुनिक कश्मीरी कविता के लगभग सभी ' श्रोखु ' श्लोक नाम से हिन्दी अनुवाद किया है । जिसमें आरिफ वेग , दीनानाथ नाज़िम ,अर्जुन देव महजूर , मोतीलाल साकी, अमीन कामिल आदि से लेकर समकालीन कवि रशीद शाहनाज , अदहन कौल तक सभी कवियों की कविताओं को हिन्दी में अनूदित किया है । यह कविताएं हिंदी की प्रमुख प्रत्रिकाओं पहल, समकालीन भारतीय, साहित्य, वागर्थ आदि में 2009-2010 तक प्रकाशित हो चुकी हैं । अग्निशेखर के अनुवादों को केन्द्र में रखकर ' पहल ' पत्रिका का 36वां अंक तथा ' वसुधा ' का विशेषांक भी चर्चित रहे हैं । इनके कश्मीरी से हिन्दी में किए गए अनुवाद की पुस्तक शीघ्र ही पाठकों के समक्ष उपलब्ध होगी । डॉ. गोपीनाथ के शब्दों में 20-21 वीं सदी अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति की

शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है । संप्रेषण के नए माध्यमों के अविष्कारों ने 'वसुधैव कुटुंबकम् ' की उपनिषदीय कल्पना को साकार बना दिया। अग्निशेखर द्वारा किया गया कश्मीरी कविताओं का हिंदी अनुवाद सम्भवतः इस ओर इशारा करता है ।

बलजीत सिंह रैना ने अपनी पंजाबी कविताओं के हिन्दी अनुवाद स्वयं किए हैं । उन्होंने ' सुपणे ' का ' सुपने ' , 'उसने केसा हां ' का ' उसने कहा हां ', आरसी बिच लुटेरा आदमी का ' आईने में छुपा आदमी ' नाम से हिन्दी अनुवाद किया है । जबकि ज़िंदगी, निमंत्रण, बोध, लोहा के हिन्दी पंजाबी शीर्षक एक ही हैं । यह सारी कविताएं 2015 में प्रकाशित हो चुकी हैं । उनकी 'सपने' का हिंदी काव्य अनुवाद -----

'मैं कैसी दौड़ में हूं उल्टा
व्यस्त किस कार्य में सदा हूं
ह्रदय का चैन क्यों है खोया
उदासी है अंधेरा है
मैं जिसकी चाह रखता हूं
कहीं तो वो सवेरा है ।'

जम्मू - कश्मीर के समकालीन पंजाबी काव्य को हिन्दी में अनूदित कर पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास प्रशंसनीय है । मानव के पास

आयु, समय और साधन की एक सीमा रहती है । हर व्यक्ति संसार की प्रत्येक भाषा नहीं सीख सकता । ऐसी स्थिति में अनुवादक ही वह माध्यम है जिसके द्वारा सभी भाषाओं से संपर्क स्थापित कर सकते हैं ।

यशपाल निर्मल ने मूल डोगरी के प्रतिष्ठित नाटककार , कहानीकार, कवि, आलोचक श्री मोहन सिंह द्वारा लिखित 'घड़ी ' कविता का अनुवाद किया है । निधि पब्लिकेशन्स जम्मू की तरफ से 2015 में 'घड़ी' पुस्तक रूप में सामने आई । यशपाल निर्मल ने इसे हिन्दी में अनूदित कर एक प्रशंसनीय कार्य किया है । उन्होंने अनुवाद करते हुए मूल को पूरी तरह से सहज संभव कर हिन्दी भाषा में अनूदित किया है । उदाहरण –

"जित्तियै बी हारा करना ।

मन्ना बाजी मिगी चढ़ी ।।

पर फ्ही भी तूं नौलियां बट्टें ।

चाढ़ी रक्खें त्रीऊढ़ी ।।

जानी बुज्झी हारां इस तै ।

जे ओंठे पर हास्सा लब्भै ।।

नज़र नशीली मिलै मेरे नै।

तां हारा ना घड़ी - घड़ी ।।"

''जीत – जीत कर हार रहा हूं ।

बाजी मेरे सिर चढ़ी ।।

फिर भी मुंह फुला के बैठी ।

रहती मुझे से चिढ़ी- चिढ़ी ।

जानबूझ कर हारूं ताकि ।

तेरे होठों पे मुस्कान दिखे ।

नयन नशीले मुझ से मिल जाएं ।

हारूं प्रियतम घड़ी - घडी ।"

उक्त उदाहरण से अनूदित पाठ में मधुरता बरकरार है । काव्यानुवाद के सन्दर्भ में प्रभाकर मा चवे के शब्दों में , " सर्वत्र यह दिखाई देता है कि अनुवाद वहीं सफल हुआ है जहां अनुवादक ने मूल छवि की भावना कल्पना + अभिव्यंजना के रसायन को ठीक तरह से ग्रहण किया और उसे (अनुवाद में) उतारने का यत्न किया है ।

ललित मगोत्रा का 'शब्द से मौन' डोगरी से हिन्दी में अनूदित कविता है। यह पुस्तक रूप में 2018 में 'कुंवर वियोगी मेमोरियल ट्रस्ट' दिल्ली द्वारा विमोचित को गई। इसमें जीवन के सभी पक्षों पर खोज की गई है। जैसे आदमी , भगवान, रिश्ते, मौत , छल- प्रपंच इत्यादि।

वर्ष 2019 में यशपाल निर्मल ने अश्विनी मगोत्रा की लंबी डोगरी कविता **''लैहरां''** का **''लहरें''** शीर्षक से हिन्दी अनुवकद किया। इसमें जीवन रुपी लहरों का वर्णन है। एक अनुवादक के तौर पर उनका कहना है कि यह एक प्रकार का पुनर्सृजन है । इस अनुवाद में भी मूल का भाव व सौंदर्य बरकरार है। यह पुस्तक रूप में लोकोदय प्रकाशन, लखनऊ से वर्ष 2019 में पाठक वर्ग के समकक्ष उपलब्ध हुई थी। निर्मल जी अनुवाद को एक प्रकार की पुनर्रचना मानते हैं। सहजता और सरलता निर्मल जी के अनुवाद की विशेषता है-

मूल पाठ-

''मची उसलै खलबली जन इक
सुन्ने अंबरै उप्पर
धरत लगदी ही
इक तत्ता
जलदा बलदा
अंगार
सुहामापन जरा वी नेईं हा-
चबक्खै
कुतै बी''

अनुवाद-

''मची तब खलबली सी एक
सूने आकाश पर
धरती प्रतीत होती थी
गर्म-
जलता हुआ

अंगारा-
सुहावनापन जरा भी न था-
चारों ओर कहीं भी।''

वर्ष 2020 में यशपाल निर्मल ने जगदीश चंद्र साठे की लंबी डोगरी कविता **''बभौर''** का हिन्दी अनुवाद किया। इस पुस्तक को सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है। बभौर डुग्गर की सांस्कर्तिक विरासत है। इस पुस्तक से अनुवाद का एक मिसाल देखें-

''तेरी क्या बात करनी
जो इतना महान और
आलीशान था-
जिसे
इन पत्थरों
और शिलाओं ने
रखा हुआ है संभालकर
आज तक।
उधर त´वी
और उसके दूसरे किनारे के
साथ-साथ
स्पर्श करती जल-धाराओ-
और त´वी के इस किनारे पर
तेरी ऊंची छाती वाली
जंगली जमीन पर
बसने वाले
वह सभी लोग भी

मर-मिट चुके हैं
बहुत पहले के।''

अतः हम कह सकते हैं कि जम्मू - कश्मीर में हिन्दी में अनूदित कविताओं का एक दौर व्यापक रूप लेने की ओर अग्रसर है । अनूदित साहित्य किसी भी साहित्य के इतिहास का अपरिहार्य अंग है। वस्तुत: भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अन्य भाषाओं देशी अथवा विदेशी को नि:संकोच स्वीकार करने की आवश्यकता है। किसी भी भाषा में साहित्य स्वीकार करने की आवश्यकता है। कोई भी भाषा साहित्य स्वावलंबी और स्वत:पूर्ण नहीं मानी जा सकती। संसार के विविध भाषा साहित्यों के परस्पर सम्पर्क एवं आदान - प्रदान से उनकी परिधि व्यापक होती है और यह कार्य अनुवादों द्वारा सम्पन्न होता है। वस्तुत: अनुवादों द्वारा ही संसार में विचार क्रांति आती है ।

ooo

हिन्दी व्यंग्य में महिला उपस्थिति

-विवेक रंजन श्रीवास्तव

विश्व की आबादी आठ सौ करोड़ पार होने को है , कमोबेश इसमें महिलाओं की संख्या पचास प्रतिशत है । यद्यपि भारत में स्त्री-पुरुष के इस अनुपात में स्त्रियों की सँख्या अपेक्षाकृत कम है । पितृसत्तात्मक समाज होने के चलते प्रायः सभी क्षेत्रों में लंबे समय से पुरुष स्त्री पर हावी रहा है । सिमोन द बोउवार का कथन है , "स्त्री पैदा नहीं होती , बनाई जाती है ", समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार स्त्री को ढालता आया है । उसके सोचने से लेकर उसके जीवन जीने के ढंग को पुरुष नियंत्रित करता रहा है और आज भी करने की कोशिश करता रहता है। किंतु अब महिलाओं को पुरुषों के बराबरी के दर्जे के लिये लगातार संघर्षरत देखा जा रहा है । विश्व में नारी आंदोलन की शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दि में हुई। नारी आंदोलन लैंगिक असमानता के स्थान पर मानता है कि स्त्री भी एक मनुष्य है। वह दुनिया की आधी आबादी है। सृष्टि के निर्माण में उसका भी उतना ही सहयोग है जितना कि पुरुष का । स्त्री सशक्तिकरण, स्त्री विमर्श से जन चेतना जागी हैं । अब जल , थल , नभ , अंतरिक्ष हर कहीं महिलायें पुरुषों से पीछे नहीं रही हैं ।

विभिन्न भाषाओं के साहित्य में भी महिला रचनाकारों ने महत्वपूर्ण मुकाम हासिल किया है । अनेक महिला रचनाकारों को

नोबल पुरस्कार मिल चुके हैं । 2022 का नोबल फ्रेंच लेखिका एनी एनॉक्स को मिला है । 82 वर्षीय एनॉक्स साहित्य का नोबेल पाने वाली सत्रहवीं महिला हैं । पूरी दुनिया में हर साल आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है ।

हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य की पंक्ति है कि "दिवस कमजोरों के मनाए जाते हैं, मजबूत लोगों के नहीं" सशक्त होने का आशय केवल घर से बाहर निकल कर नौकरी करना या पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना भर नहीं है । वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता साहित्य और खास कर किसी पर व्यंग्य कर सकने की क्षमता और स्वतंत्रता में निहित है । भारत में ऐसी ढ़ेरों विसंगतियां हैं जिनसे सीधे तौर पर महिलायें प्रभावित होती हैं, उदाहरण के लिये सबरीमाला या अन्य धर्म के स्थलों पर महिलाओ के प्रवेश पर रोक , धर्म-जाति के गठजोड़, रूढ़ि व अंधविश्वास ने महिलाओं को लगातार शोषित किया है । इन मसलों पर जिस तीक्ष्णता से एक महिला व्यंग्यकार लिख सकती है पुरुष नहीं । कहा गया है जाके पांव न फटे बिवाई बा क्या जाने पीर पराई । किंतु विडम्बना है कि लम्बे समय तक व्यंग्य पर पुरुषों का एकाधिकार रहा है। यह और बात है कि लोक जीवन और लोकभाषा में व्यंग्य अर्वाचीन है । सास बहू, ननद भौजाई के परस्पर संवाद या, बुन्देलखण्ड, मिथिला, भोजपुरी में बारात की पंगत को सुस्वादु भोजन के साथ हास्य और व्यंग्य से सम्मिश्रित गालियां तक देने की क्षमता महिलाओ में ही रही है । हिमाचल और जम्मू में ये विवाह गीत सीठणी कहे जाते हैं जिनमें यहि भाव भंगिमा और व्यंग्य सजीव होता है। साहित्यिक इतिहास में

भक्ति आंदोलन के समय में महिला रचनाकारों ने खूब लिखा , मीरा बाई की रचनाओ में व्यंग्य के संपुट ढूंढ़े भी जा सकते हैं ।

आज साहित्य में व्यंग्य स्वतंत्र विधा के रूप में सुस्थापित है । समाज की विसंगतियों , भ्रष्टाचार, सामाजिक शोषण अथवा राजनीति के गिरते स्तर की घटनाओं पर अप्रत्यक्ष रूप से तंज किया जाता है । लघु कथा की तरह संक्षेप में घटनाओं पर व्यंग्य होता है, जो हास्य और आक्रोश भी पैदा करता है । विद्वानों के अनुसार प्राचीन काल से ही साहित्य में व्यंग्य की उपस्थिति मिलती है । चार्वाक के 'यावद जीवेत सुखं जीवेत, ऋणं कृत्वा घृतम् पिवेत्' के माध्यम से स्थापित मूल्यों के प्रति प्रतिक्रिया को इस दृष्टि से समझा जा सकता है ।

सर्वाधिक प्रामाणिक व्यंग्य की उपस्थिति कबीर के 'पात्थर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार ' तथा ' कांकर पाथर जोड़ कर मस्जिद दयी बनाय ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा भया खुदाय ' आदि के रूप में देखी जा सकती है । हास्य और व्यंग्य का नाम साथ-साथ लिया जाता है पर उनमें व्यापक मौलिक अंतर है । साहित्य की शक्तियों अभिधा, लक्षणा, व्यंजना में हास्य अभिधा, यानी सपाट शब्दों में हास्य की अभिव्यक्ति के द्वारा क्षणिक हंसी तो आ सकती है, लेकिन स्थायी प्रभाव नहीं डाल सकती । व्यंजना के द्वारा प्रतीकों और शब्द-बिम्बों के द्वारा किसी घटना , नेता या विसंगितयों पर प्रतीकात्मक भाषा द्वारा जब व्यंग्य किया जाता है , तो वह अपेक्षकृत दीर्घ कालिक प्रभाव छोड़ता है । श्रेष्ठ साहित्य में

व्यंग्य की उपस्थिति महत्वपूर्ण है । व्यंग्य सहृदय पाठक के मन पर संवेदना, आक्रोश एवं संतुष्टि का संचार करता है । स्वतंत्रता पूर्व व्यंग्य लेखन की सुदीर्घ परंपरा मिलती है।

भारतेंदु हरिशचंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालकृष्ण भट्ट तथा अन्य लेखकों का बड़ा व्यंग्य समूह था , इनमें बाबू बालमुकुंद गुप्त के धारावाहिक 'शिव शंभू के चिट्ठे' युगीन व्यंग्य के दिग्दर्शक हैं। वायसराय के स्वागत में उस समय उनका साहस दृष्टव्य है- "माई लार्ड, आपने इस देश में फिर पदार्पण किया , इससे यह भूमि कृतार्थ हुई। विद्वान, बुद्धिमान और विचारशील पुरुषों के चरण जिस भूमि पर पड़ते हैं, वह तीर्थ बन जाती है । आप में उक्त तीन गुणों के सिवा चौथा गुण राज शक्ति का है। अतः आपके श्रीचरण स्पर्श से भारत भूमि तीर्थ से भी कुछ बढ़कर बन गई। भगवान आपका मंगल करे और इस पतित देश के मंगल की इच्छा आपके हृदय में उत्पन्न करे। ऐसी एक भी सनद प्रजा-प्रतिनिधि शिव शंभु के पास नहीं है, तथापि वह इस देश की प्रजा का , यहां के चिथड़ा पोश कंगालों का प्रतिनिधि होने का दावा रखता है । गांव में उसका कोई झोंपड़ा नहीं, जंगल में खेत नहीं .... हे राज प्रतिनिधि , क्या उसकी दो-चार बातें सुनिएगा?" ... इसमें अंतर्निहित कटाक्ष व्यंग्य की ताकत हैं । रचना के इस व्यंग्य कौशल को आधुनिक व्यंग्य काल में परसाई , शरद जोशी, रवीन्द्र नाथ त्यागी , शंकर पुणतांबेकर, नरेंद्र कोहली, गोपाल चतुर्वेदी, विष्णुनागर जैसे लेखको ने आगे बढ़ाया है।

डा. शैलजा माहेश्वरी ने एक पुस्तक लिखी है " हिंदी व्यंग्य में नारी " इस किताब की भूमिका सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखक और

संपादक यशवंत कोठारी ने लिखी है । इस भूमिका आलेख में उन्होंने आज की सक्रिय महिला व्यंग्यकारों का उल्लेख किया है । डा. प्रेम जनमेजय व्यंग्य पर सतत काम कर रहे हैं , उन्होंने पत्रिका "व्यंग्य यात्रा" का जनवरी से मार्च २०२३ अंक ही " हिन्दी व्यंग्य में नारी स्वर " पर केंद्रित किया है । मैं लंबे समय से पुस्तक चर्चा करता आ रहा हूं और विगत कुछ वर्षो में प्रकाशित व्यंग्य की प्रायः किताबें मेरे पास हैं, इन सीमित संदर्भों को लेकर कम शब्दों में आज सक्रिय व्यंग्य लेखिकाओं के कृतित्व के विषय में लिखने का यत्न है । यद्यपि मेरा मानना है कि व्यंग्य में महिला हस्तक्षेप और अवदान पर शोध ग्रंथ लिखा जा सकता है । जिन कुछ सतत सक्रिय महिला नामों का लेखन पत्र , पत्रिकाओं, सोशल मीडिया में मिलता रहा है उनकी किताबों के आधार पर संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास है ।

स्नेहलता पाठक ... शंकर नगर, रायपुर की निवासी स्नेहलता पाठक की व्यंग्य की किताबें " सच बोले कौआ काटे ", द्रौपदी का सफरनामा, एक दीवार सौ अफसाने, प्रजातंत्र के घाट पर, बाकी सब ठीक है, बेला फूले आधी रात, लोनम् शरणम् गच्छामी, व्यंग्यकार का वसीयतनामा, उन्होंने उपन्यास लाल रिबन वाली लड़की भी लिखा है , और "व्यंग्य शिल्पी लतीफ घोंघी" किताब का संपादन भी किया है । उन्हें छत्तीसगढ़ की पहली गद्य व्यंग्य लेखिका सम्मान मिल चुका है । वे निरंतर स्तरीय लेखन में निरत दिखती हैं ।

सूर्य बाला जी ने बहुत व्यंग्य लिखे हैं , उनकी व्यंग्य की पुस्तकें " यह व्यंग्य कौ पन्थ ", 'अजगर करे न चाकरी ', 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'देशसेवा के अखाड़े में ', 'भगवान ने कहा था ', 'झगड़ा निपटारक दफ़्तर', आदि चर्चित हैं । वे बड़ी कहानीकार हैं और इतनी ही ज़िम्मेदारी तथा गम्भीरता से व्यंग्य भी लिखती हैं । कलम के पैनेपन से उन्होंने व्यंग्य को भी तराशा है वे व्यंग्य की सारी शर्तों को, अपनी ही शर्तों पर पूरा करने वाली मौलिकता का दामन किसी भी व्यंग्य रचना में कभी नहीं छोड़तीं । उनका सफल कहानीकार होना उनको एक अलग ही क़िस्म का व्यंग्य शिल्प औज़ार देता है। व्यंग्य के परम्परागत विषय भी सूर्यबाला के क़लम के प्रकाश में एकदम नये आलोक में दिखाई देने लगते हैं। विशेष तौर पर, तथाकथित महिला विमर्श के चालाक स्वाँग को , लेखिकाओं का इसके झाँसे में आने को तथा स्वयं को लेखन में स्थापित करने के लिए इसका कुटिल इस्तेमाल करने को उन्होंने बेहद बारीकी तथा साफ़गोई से अपनी कई व्यंग्य रचनाओं में अभिव्यक्त किया है।

शांति मेहरोत्रा ने भी काफी लिखा है । वे पिछली सदी के पाँचवें-छठे दशक में सामने आईं कवयित्री , कथाकार, लघुकथा और व्यंग्य की सशक्त हस्ताक्षर रही हैं । ठहरा हुआ पानी उनका नाटक है

सरोजनी प्रीतम की हंसिकाएं काव्य भी खूब पढ़ी गयीं । लौट के बुद्धू घर को आये , श्रेष्ठ व्यंग्य, सारे बगुले संत हो गये आदि उनकी चर्चित पुस्तके हैं ।

समीक्षा तैलंग .. मुझे स्मरण है तब मैं अपने पहले वैश्विक व्यंग्य संग्रह "मिली भगत" पर काम कर रहा था । इंटरनेट के जरिये अबूधाबी में समीक्षा तैलंग से संपर्क हुआ । फिर जब उन्होंने उनकी पहली किताब छपवाने के लिये पान्डुलिपि तैयार की तो " जीभ अनशन पर है " यह नामकरण करने का श्रेय मुझे ही मिला , इस किताब में मेरी टीप उन्होंने फ्लैप पर भी ली है । उसके बाद उनकी दूसरी किताब व्यंग्य का एपीसेंटर, संस्मरण की किताब कबूतर का केटवाक आदि आई हैं । वे निरंतर उत्तम लिख रही हैं ।

मीना अरोड़ा का संबंध हल्द्वानी से हैं । उन्होंने पुत्तल का पुष्प बटुक व्यंग्य उपन्यास लिखा है , जिसकी चर्चा करते हुये मैने लिखा है कि "पुत्तल का पुष्प वटुक " बिना चैप्टर्स के विराम के एक लम्बी कहानी है । जो ग्रामीण परिवेश, गांव के मुखिया के इर्द गिर्द बुनी हुई कथा में व्यंग्य के संपुट लिये हुये हैं । उनकी कविताओं की किताबें "शेल्फ पर पड़ी किताब" तथा " दुर्योधन एवं अन्य कवितायें " पूर्व प्रकाशित तथा पुरस्कृत हैं । मीना अरोड़ा की लेखनी का मूल स्वर स्त्री विमर्श है ।

डा. अलका अग्रवाल सिंग्तिया, का "मेरी तेरी सबकी" व्यंग्य संग्रह प्रकाशित है , इसके सिवा अनेक सहयोगी संग्रहों में उन्होंने शिरकत की है, उनका उल्लेख इस दृष्टि से महत्व रखता है कि उन्होंने हाल ही में परसाई पर पी एच डी मुम्बई विश्व विद्यालय से की है ।

अनिला चाड़क जम्मू कश्मीर से हैं । जम्मू कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी ने इनके कविता संग्रह 'नंगे पांव ज़िन्दगी' को

बेस्ट बुक के अवार्ड से सम्मानित किया है । इनकी व्यंग्य की पुस्तक 'मास्क के पीछे क्या है' प्रकाशित हुई है ।

अनीता यादव का व्यंग्य संग्रह " बस इतना सा ख्वाब है " आ चुका है, इसके सिवा कई संग्रहो मे सहभागी हैं तथा फ्री लांस लिखती हैं ।

चेतना भाटी - साहित्य की विभिन्न विधाओं व्यंग्य , लघुकथा, कहानी, उपन्यास, कविता में लिखने वाली श्रीमती चेतना भाटी की अब तक कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें व्यंग्य संग्रह - दिल है हिंदुस्तानी, दुनिया एक सरकारी मकान है, विक्रम - बेताल का ई - मेल संवाद प्रमुख हैं। इसके सिवाय कहानी संग्रह - एक सदी का सफरनामा , नए समीकरण, जब तक यहाँ रहना है , ट्रेडमिल पर जिंदगी , एवं लघुकथा संग्रह - उल्टी गिनती , सुनामी सड़क, खारी बूँदें और उपन्यास - चल, आ चल जिंदगी, चंद्रदीप, बिग बॉस सीजन कोरोना प्रकाशित है ।

सुनीता शानू...एक व्यंग्य संग्रह "फिर आया मौसम चुनाव का (प्रभात प्रकाशन- 1915)" , एक कविता संग्रह...मन पखेरू फिर उड़ चला (हिंद युग्म- 1913), कई सांझा कविता एवं व्यंग्य संग्रह , वे पुरानी हिन्दी ब्लागर हैं ।

डा. नीरज सुधांशु .. आप वनिका प्रकाशन की संस्थापिका हैं । लिखी तो व्यथा कही तो लघुकथा आदि उनकी कृतियां हैं , मूलतः लघुकथा लिखती हैं जिनमें व्यंग्य के संपुट पढ़ने मिलते हैं । वे पेशे से डाक्टर हैं ।

सीमा राय मधुरिमा का व्यंग्य संग्रह " खरी मसखरी", " ब्लाटिंग पेपर" डायरी लेखन और कविता संग्रह मुखर मौन तथा मैं चुनुंगी प्रेम आ चुके हैं ।

डा. शशि पाण्डे ,किताबें हैं चौपट नगरी अंधेर राजा (संग्रह), मेरी व्यंग्य यात्रा (संग्रह), व्यंग्य की बलाएं (संपादन), बकैती गंज (हास्य साक्षात्कार संपादन) ।

नीलम कुलश्रेष्ठ .. महिला चटपटी बतकहियाँ (व्यंग्य संग्रह) के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करती हैं ।

कीर्ति काले का संग्रह "ओतेरेकी" तैंतीस व्यंग्य लेखों का संकलन है । वे व्यंग्य जगत में जानी पहचानी लेखिका हैं ।

वीणा वत्सल सिंह प्रतिलिपि डाट काम पर जाना पहचाना सक्रिय नाम हैं वे कहानियां लिखती हैं और अपने लेखन में व्यंग्य प्रयोग करती हैं ।

नुपुर अशोक ... पचहत्तर वाली भिंडी उनका व्यंग्य संग्रह है और मेरे मन का शहर उनकी कविता की प्रकाशित पुस्तकें हैं ।

आरिफा एविस अपने व्यंग्य उपन्यास नाकाबन्दी के संदर्भ में लिखती हैं " पिछले दिनों कश्मीर में जो हुआ उसे लेकर भारतीय मीडिया की अलग-अलग राय है । ऐसे में कश्मीर के जमीनी हालात को करीब से देखना, जहाँ फोन नेटवर्क बंद हो, कर्फ्यू लगा हुआ हो

एक मुश्किल काम था । मैं कश्मीर की मौजूदा स्थिति पर लेख , व्यंग्य, कहानी लिखने की सोच रही थी लेकिन उपरोक्त माध्यमों से पूरी बात कहना बड़ा ही मुश्किल था । इसलिए मैंने कश्मीर के नये हालात और उनसे उपजी कश्मीर की राजनीतिक , आर्थिक और मनोस्थिति बयान दर्ज करते हुए इसे उपन्यास की शक्ल में लिखा है। मास्टर प्लान उनका एक और उपन्यास है । राजनीतिक होली, जांच जारी है उनके व्यंग्य संग्रह हैं ।

अनीता श्रीवास्तव का व्यंग्य संग्रह - बचते- बचते प्रेमालाप , कविता संग्रह- जीवन वीणा , कहानी संग्रह- तिड़क कर टूटना , बालगीत संग्रह- बंदर संग सेल्फी छप चुके हैं । वे संभावनाशील व्यंग्यकार हैं ।

अंशु प्रधान का व्यंग्य संग्रह हुक्काम को क्या काम , उपन्यास रक्कासा और कहानी संग्रह कफस प्रकाशित है ।

इंद्रजीत कौर का संग्रह " चुप्पी की चतुराई " प्रकाशित है , मठाधीशी और कठमुल्लापन के विरोध में लिखना साहस पूर्ण होता है । वे स्वयं सिक्ख धर्म से होते हुये भी अपने ही धर्म की कमियों पर बहुत साहस के साथ पंजाबी पत्रिका 'पंजाबी सुमन ' में स्तम्भ लिखती रहीं हैं। उन्होंने एक अन्य व्यंग्य संग्रह ईमानदारी का सीजन, तथा पंचतंत्र की कथायें भी लिखे हैं ।

अनामिका तिवारी जबलपुर से हैं ... उन का प्रकाशित व्यंग्य संग्रह एक ही है ' दरार बिना घर सूना ' 2005

में दिल्ली शिल्पायन से प्रकाशित हुआ था । नाटक 'शूर्पनखा ' भी उन्होंने लिखा है ।

अलका पाठक की पुस्तक - किराये के लिए खाली है ।

पल्लवी त्रिवेदी पुलिस अधिकारी हैं। उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं–'अंजाम-ए-गुलिस्तां क्या होगा ' (व्यंग्य-संग्रह); 'तुम जहाँ भी हो ' (कविता-संग्रह)। उनकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं। लेखन के अतिरिक्त वे यात्राओं, संगीत व फ़ोटोग्राफ़ी का शौक रखती हैं. 'तुम जहाँ भी हो ' पुस्तक के लिए उन्हें 2020 में मध्यप्रदेश के 'वागीश्वरी सम्मान' से सम्मानित किया गया।

साधना बलवटे ने समीक्षात्मक कृति "शरद जोशी व्यंग्य के आर पार " लिखी है. उनका व्यंग्य संग्रह " ना काहू से दोस्ती हमरा सबसे बैर " सदयः प्रकाशित है ।

अर्चना चतुर्वेदी का व्यंग्य उपन्यास गली तमाशे वाली बहू चर्चित है ।

कांता राय मूलतः लघुकथायें लिखती हैं । जिनमें वे व्यंग्य का सक्षम प्रयोग करती हैं । उनकी विभिन्न विधाओ की कई किताबें प्रकाशित हैं ।

शेफाली पाँडे, दलजीत कौर, सक्रिय बहुपठित लेखिकायें हैं । सुषमा व्यास राजनिधि की यद्यपि व्यंग्य केंद्रित किताब अब तक

नहीं है पर वे व्यंग्य मंचो पर सक्रिय रहती हैं , मेधा झा स्फुट व्यंग्य लिखती हैं, वे अनेक संग्रहों में सहभागी हैं । सारिका गुप्ता स्फुट व्यंग्य लिख रही युवा व्यंग्यकार हैं , वे कानूनी विषय पर एक किताब लिख चुकी हैं ।

डा. शांता रानी ने हिंदी नाटकों में हास्य तत्व पुस्तक लिखी है. लक्ष्मी शर्मा मूलतः व्यंग्यकार नहीं हैं पर उनके उपन्यास, एकांकी में व्यंग्य की झलक है । सिधपुर की भक्तिनें , स्वर्ग का अंतिम उतार, उपन्यास, कथा संग्रह आदि लिखे हैं ।

डा. शैलजा माहेश्वरी ने " हिंदी व्यंग्य में नारी " किताब लिखी है । यह पुस्तक हिंदी व्यंग्य में नारी के योगदान पर गंभीर समालोचनात्मक कृति है। बीकानेर की मंजू गुप्ता के संपादन में भी एक पुस्तक व्यंग्य समालोचना पर आई है । जबलपुर में महाविद्यालय में हिन्दी की विभागाध्यक्ष डा स्मृति शुक्ल ने व्यंग्य आलोचना सहित, साहित्यिक समालोचना के क्षेत्र में बहुत काम किया है । उन्हें म प्र साहित्य अकादमी से आलोचना पर पुरस्कार भी मिल चुका है । उन्होंने " विवेक रंजन के व्यंग्य समाज के जागरुख पहरुये के बयान " शोध आलेख लिखा है । स्वाति शर्मा, जबलपुर डा. नीना उपाध्याय के निर्देशन में विवेक रंजन के व्यंग्य के सामाजिक प्रभाव पर जबलपुर विश्वविद्यालय से शोध कार्य कर रही हैं । आशा रावत की पुस्तक - हिंदी निबंध-स्वतंत्रता के बाद शीर्षक से प्रकाशित है जिसमें महिला व्यंग्य समालोचना पर भी लिखा गया है ।

दीपा गुप्ता ने अब्दुल रहीम खानखाना पर विस्तृत कार्य किया है। उनकी कई किताबें प्रकाशित हैं । यद्यपि व्यंग्य केंद्रित पुस्तक अभी तक नहीं आई है । इसके अतिरिक्त भारती पाठक , गरिमा सक्सेना, पूजा दुबे, ऋचा माथुर ,आदर्श शर्मा, अनीता भारती, विभा रश्मि, जयश्री शर्मा, पुष्प लता कश्यप , निशा व्यास, मीरा जैन, प्रभा सक्सेना, रेनू सैनी, डा निर्मला जैन , उषा गोयल, पूनम डोगरा, नीलम जैन, ललिता जोशी, अर्चना सक्सेना, कुसुम शर्मा, सीमा जैन , विदुषी आमेटा , दीपा स्वामिनाथन , आदि लेखिकायें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सोशल मीडीया प्लेटफार्मस् एवं पत्र पत्रिकाओं में जब तब स्फुट रूप से सक्रिय मिलती हैं। भले ही इनमें से कई पूर्णतया व्यंग्य संधान नहीं कर रही किन्तु अपनी विधा कविता, कहानी, ललित लेख, लघु कथा आादि में व्यंग्य प्रयोग करती हैं ।

व्यंग्य-लोचन पुस्तक में डा. सुरेश महेश्वरी ने रीतिकालीन कवियों के मार्फत उपालम्भ के रूप में महिलाओं द्वारा किये जाने वाले व्यंग्य को विस्तार दिया है । इसी प्रकार व्यंग्य चिन्तना और शंकर पुणताम्बेकर विषयक पुस्तक में भी काफी विस्तार से महिला व्यंग्य की चर्चायें की गई है। डा. बालेन्दु शेखर तिवारी ने भी महिला व्यंग्य लेखन पर अपने विचार दिए हैं।

अस्तु, सीमित संदर्भों को लेकर कम शब्दों में आज सक्रिय व्यंग्य लेखिकाओ के कृतित्व के विषय में यह आलेख एक डिस्क्लैमर चाहता है, मैने यह कार्य निरपेक्ष भाव से महिला व्यंग्य लेखन को रेखांकित करने हेतु सकारात्मक भाव से किया है, उल्लेख, क्रम, कम

या ज्यादा विवरण मात्र मुझे सुलभ सामग्री के आधार पर है , त्रुटि अवश्यसंभावी है जिसके लिये अग्रिम क्षमा । कई नाम जरूर छूटे होंगे जिनसे अवगत कराइये ताकि यह आलेख और भी उपयोगी संदर्भ बन सके ।

महिला व्यंग्य लेखन स्वच्छंद रुप से विकसित हो रहा है , और संभावनाओ से भरपूर है । महिला व्यंग्यकार राजनीती , घर परिवार, मोहल्ला, पड़ोस, रिश्ते नाते , बच्चे, परिवेश, पर्यावरण, स्त्री विमर्श , लेखन, प्रकाशन, सम्मान की राजनीति आदि सभी विसंगतियों पर लिख रही हैं । महिला लेखन में विट है ह्यूमर है , आइरनी है , कटाक्ष, पंच आदि सब मिलता है । हर लेखिका की रचनाओं का कलेवर उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता और अनुभव के अनुरूप सर्वथा विशिष्ट है । व्यंग्य लेखन को ये लेखिकायें पूरी संजीदगी से निभाती नजर आती हैं। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि महिला व्यंग्य लेखन में कहीं प्राक्सी नहीं है जैसा महिलाओं को लेकर अन्य क्षेत्रो में प्रायः होता दिखता है उदाहरण के लिये गांवों में महिला सरपंच की जगह उनके पति भले ही सरपंचगिरी करते मिलें किन्तु संतोष है कि महिला व्यंग्य लेखन में पूर्ण मौलिकता है । महिलायें व्यंग्य के पंच की अपने आप में सक्षम सरपंच स्वयं हैं।

ooo

ए २३३, ओल्ड मीनाल रेजीडेंसी,
भोपाल ४६२०२३
मो ७०००३७५७९८

रसखान के प्रेम की अवधारणा

–राजेन्द्र परदेसी

मनुष्य की दो मौलिक प्रवृत्तियां हैं–स्वार्थ और परार्थ, पहली है–व्यक्तिगत, आत्मव्यंजक और परिग्रही, दूसरी है– सामाजिक, आत्मत्यागी और लोकसंग्रही। ये प्रवृत्तियां दो स्तरों पर आधारित हैं–शारीरिक और मानसिक अर्थात् वैचारिक, हमारे मनीषियों ने इन प्रवृत्तियों को ही तीन नामों से अभिहित किया है–वित्तेषणा, लोकेषणा और कामेषणा।

वित्तेषणा शारीरिक स्तर पर आहारेषणा या भूख है और मानसिक स्तर पर परिग्रहेच्छा है। लोकेषणा शारीरिक स्तर पर यूथचारि और मानसिक स्तर पर धर्म और नैतिकता है। इसी तरह कामेषणा शारीरिक स्तर पर यौवन संबंध, संतोनोत्पत्ति एवं कामना है और मानसिक स्तर पर इंद्रिय–लभ्य–आनंद–भोग है। इन तीनों प्रवृत्तियों के स्वरूप रागात्मिक हैं, क्योंकि संपत्ति एवं स्त्री–पुरुष के प्रति राग–प्रेम, करुणा, सेवा, सहानुभूति, हर्ष, शोक, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, संघर्ष आदि के भाव उत्पन्न करते हैं। अतएव प्रेम एक कामेषणाजनक रागात्मिक प्रवृत्ति है। इसकी उत्पत्ति के संबंध में डॉ. बच्चन सिंह ने कहा है–''प्रेम वह अनुकूल वंदनीय मनोवृत्ति है, जो किसी अन्य जीव या पदार्थ के सौंदर्य, गुण, शक्ति, सामीप्य आदि के कारण उत्पन्न होती है।''

जहां तक प्रणयानुभूति का प्रश्न है, प्रेम दो प्रकार का होता है–पार्थिव प्रेम या लौकिक और अपार्थिव या अलौकिक। पार्थिव प्रेम को ही प्राकृत प्रेम और अपार्थिव प्रेम को सात्विक प्रेम कहते हैं। पार्थिव प्रेम शुद्ध, नैसर्गिक, अनाध्यात्मिक और लौकिक है। लौकिक आलंबन के कारण प्राकृत प्रेम में वासनात्मक प्रणय की अभिव्यक्ति रहती है।

इसमें प्रिय और प्रेमी का सहज आकर्षण मिलता है। अतः शारीरिक भोग की प्रबल इच्छा से प्रणय निवेदन किया जाता है। इसके विपरीत अपार्थिव प्रेम पूर्ण निर्दोष, आध्यात्मिक और यौन–भाव से मुक्त होता है। इसमें प्रिय और प्रेमी के शरीर, मन और आत्मा का पूर्ण तादात्म्य स्थापित होता है। अतः यह सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् है।

हिंदी का पूर्व मध्यकाल जिसमें भक्ति और प्रेम के काव्यों की रचनाएं हुई, भक्तिकाल के नाम से अभिहित है। इस काल में काव्य की तीन धाराएं प्रवाहमान थीं–भक्तिधारा, रीतिधारा और स्वच्छंद वृत्तिधारा। स्वच्छंद वृत्तिधारा के कवियों ने स्वच्छंद वृत्तिधारा की सिद्धि के लिए काव्य को एक साधना माना। ये काव्य–रचना के लिए विशेष साधना नहीं करते थे। प्रेमवेग या भावावेग में विभोर होने पर ही उनमें काव्य–प्रवाह स्वतः प्रवाहित हो जाता था, काव्यों या रीतियों की कोई चिंता नहीं होती थी। इनके लिए काव्य कोई साध्य नहीं था। भक्ति की अभिव्यक्ति उनका अभिप्रेत नहीं था। ये कोई प्रचार भी नहीं चाहते थे। ये केवल अपनी अभिव्यक्ति को ही पसंद करते थे। अतः इन कवियों को स्वच्छंदतावादी कहा गया। स्वच्छंदतावादी कवियों में तीन प्रमुख हैं–रसखान, बोधा और घनानंद।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार कविवर रसखान स्वच्छंदवादी काव्यधारा के सबसे प्राचीन कवि हैं। ये प्रेमोभंग के गायक हैं। इनकी प्रेम–प्रक्रिया दोनों प्रकार की है–पार्थिव और अपार्थिव। किंतु इनके प्रेम का मार्ग ऋजु है, प्रत्येक व्यक्ति इसका अनुगमन नहीं कर सकता है। यौवन काल के प्रारंभिक जीवन में तथाकथित वणिक–तनय और खत्रानी पर आसक्त होने वाले रसखान का प्रेम शरीरी था–एकदम पार्थिव। इन्हीं तथ्यों के आधार पर देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय ने इनके संबंध में दो बातों को उजागर किया हैं। प्रथम यह कि ये विवाहित थे और द्वितीय कि इनके अंदर सौंदर्य के प्रति जिज्ञासा और प्रेम था। प्रथम बात की पुष्टि इनके दोहे की एक पंक्ति–''तोरि मानिनी ते हिए फोरि मोहिनी मान।'' इससे स्पष्ट होता है कि किसी छोरे या छोरी से प्रेम करने के कारण इनकी पत्नी सदैव मानिनी बनी रहती

थी। किंतु दूसरी बात की पुष्टि भी होती है, ये अविवाहित और पूर्णतः स्वच्छंद थे। जो भी हो, रसखान सौंदर्योपासक थे, परंतु इनका प्रेम सौंदर्य के आलंबन साहचर्य से नहीं, वरन् शुद्ध सौंदर्य के प्रति था। जो मांसल नहीं, सात्विक था। एक बार सौंदर्य राशि संपन्न राधा–कृष्ण के विग्रह का प्रत्यक्ष दर्शन इनको हुआ, तो राधा–कृष्ण इनकी प्रेमवाटिका के माली–मालिन बन गए–

''प्रेम अयनि श्री राधिका,
प्रेम बरन नंद–नंद
प्रेमवाटिका के दोऊ
माली–मालिन द्वंद।''

–प्रेमवाटिका

राधा–कृष्ण के अलौकिक सौंदर्य का दर्शन करने के उपरांत कविवर रसखान के अंतस की वासना काफूर हो गई और सात्विक प्रेम का स्वरूप निखर आया। जिससे भक्ति का ऐसा स्फुरण हुआ, जिसका संबल लेकर वे प्रेम का विशद परिचित्रण करने लगे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'प्रेमवाटिका' के दोहों में प्रेम के स्वरूप और उच्चतम आदर्शों की प्रतिष्ठापना की है। इसके साथ ही प्रेम की पहचान, प्रेम का प्रभाव, प्रेम प्राप्ति के साधन और प्रेम की सर्वोच्चता का भी निरूपण किया और बतलाया कि सच्चा प्रेम गुण, रूप, यौवन, धन आदि से निरपेक्ष होता है। इसमें स्वार्थ की गंध का कोई स्थान नहीं होता और न कामना का कोई अवकाश। वह तो मन की ऐसी संवेदनात्मक अवस्था है, जिसमें घटाव–बढ़ाव होता ही नहीं–

''बिनु गुण जोबन रूप धन,
बिनु स्वारथ हित जानि।
शुद्ध कामना ते रहित,
प्रेम सकल रसखानि।।''

–प्रेमवाटिका

प्रेम को कारण और स्वार्थ से निरपेक्ष बतलाते हुए उन्होंने कहा है–

''इक अंगी बिनु कारन ही,

इक रस सदा समान।
गनै प्रियहि सर्वस्य,
सोई प्रेम प्रमान।।''

–प्रेमवाटिका

इसी प्रकार उनकी अभिधारणा है, कि प्रेमी प्रेम प्राप्त कर बैकुंठ और ईश्वर की इच्छा न करे वही सच्चा प्रेम शुभ और अलौकिक है–

''जाहि पाए बैकुंठ अरु
हरिहू की नहीं चाह।
सोई अलौकिक शुद्ध शुभ
शुभ सरस सुप्रेम कहाहि।।''

–प्रेमवाटिका

प्रेम की दशा को द**र्शाते** हुए वे कहते हैं–प्रेम दशा की अंतिम परिणति वह नहीं है जिसमें दो मन मिलते हैं, वरन् दो शरीरों का भी मिलन अत्यावश्यक है। तन–मन जब एकाकार हो जाएं, एक दूसरे को आत्मसात कर लें, तभी प्रेम के सर्वोच्च शिखर का अनावरण होता है–

''दो मन इक होते सुन्यों,
पै वह प्रेम न आहि।
होहि जबै छै तन इकहू,
सोई प्रेम कहाहि।।''

–प्रेमवाटिका

एक शरीरधारी के लिए शरीर से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं, परंतु सात्विक प्रेम प्राप्ति के लिए अपने तन की ममता का त्याग करना अत्यावश्यक हो जाता है–

''जग में सबतें अधिक अति
ममता तनहि लखाय।
पै या तन हूं तें अधिक,
प्यारी प्रेम कहाय।।''

–प्रेमवाटिका

अलौकिक प्रेम दांपत्य–सुख, विषय–रस, पूजा, निष्ठा, ध्यान से परे है, बिना इनके जाने कुछ भी जाना नहीं जाता। अतः शुद्ध प्रेम का अनुभव न होना ही अज्ञानता है और उसका अनुभव ही सर्वज्ञता है–

''जोहि बिनु जाने कछुहि नहीं,
जानी जान विशेष।
सोई प्रेम जेहि जानि कै,
रहि न जात कछु शेष।।''

–प्रेमवाटिका

प्रेम–मार्ग को कविवर रसखान ने कमलतंतु से भी कोमल और खड़ग–धार से भी दुर्गम, अत्यंत सीधा और अत्यंत टेढ़ा तथा अटपटा भी बताया है–

कमल तंतु से छीन अरु,
कठिन खड़ग की धार।
अति सुधो टेढ़ो बहुरि,
प्रेम पंथ अनिवार।।''

–प्रेमवाटिका

कविवर रसखान ने कहा है कि हरि भी प्रेम के वश में हैं। अतः प्रेम उनसे भी ऊंचा है। हरि और प्रेम में कोई अंतर नहीं जैसे सूरज और धूप में–

''हरि प्रेम हरि को रूप है,
त्यों हरि प्रेम सरूप।
एक होई द्वै पौ लसै,
ज्यों सूरज और धूप।।''

–प्रेमवाटिका

वेद सब धर्मों का मूल है, सभी श्रुतियां और स्मृतियां बताती हैं, परंतु प्रेम धर्म से बड़ा है, अति अनिवार्य है–

''वेद मूल सब धर्म,
यह कहैं सबैं श्रुति सार।
परम धर्म है ताहुते,
प्रेम एक अनिवार।।''

–प्रेमवाटिका

कविवर रसखान की प्रेम अभिव्यंजना का मुख्यतः प्रतिपाद्य पक्ष है–प्रेम का गूढ़ अंतर्दशाओं का उद्घाटन, प्रेम की भावभूमियों एवं प्रेम जगत के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों का विविध परिचित्रण के लिए यह सवैया दृष्टव्य है–

''वंशी बजावत आनि कढयो,
सो गली में अली में कछु टोना सो डारै,
हेरि चितै, तिरछी करि दृष्टि,
चलौ गयो मोहन मूठी सो मारै।
ताही धरी सो परी धरी सेज पै,
प्यारी न बोलता प्रान हूं बारै,
राधिका जी हैं तो जी हैं सबै,
न तु पीहैं हलाहल नंद कै द्वारै।।''

–सुजान रसखान

उपरोक्त सवैया में कृष्ण के प्रेम से पीड़ित राधा **की** मनोदशा का वर्णन है। जब एक समय राधा की गली से बंशी बजाते हुए वे निकल जाते हैं। प्रेमियों की ऐसी प्रवृत्ति है कि जिससे वह प्रेम करते हैं, उससे संबंधित उसकी सारी वस्तुओं से भी वे प्रेम करने लग जाते हैं। फलतः कृष्ण के प्रेम में निमग्न स्वयं रसखान का मन करता है कि पुनर्जन्म में यदि मनुष्य बनूं तो ब्रज या गोकुल के गांवों में बसूं, यदि पशु बनूं तो नंद की धेनुओं के झुंड में चरूं, यदि पत्थर बनूं तो उसी पहाड़ का जिसको कृष्ण ने धारण किया और यदि पक्षी बनूं तो कालिंदी–कूल के कदंब की डालियों पर ही बसेरा बनाऊं–

''मानुष हौं तो वही रसखानि
बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो,
चरैं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हों तो वही गिरि को जौ
धरयो कर छत्र पुरंदर–धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं,

मिलि कालिंदी–कूल कदंब की डारन।।''

ऐसी ही स्थिति राधा के प्रेम में निमग्न, कृष्ण की होती है। जब राधा से उनका वियोग होता है–

''नाम समेतं कृत सङ्केतं
वादयते मृदुवेणुम।
वहु मनुते तनुते तनु सङ्गत
पवन चलितमाप रेणुम।।

–श्रीगीतगोविंदम्

श्री कृष्ण की मुरली राधा का नाम लेकर बज रही है और राधा के शरीर से स्पर्शित धूलि जो पवन द्वारा उड़कर उनके पास पहुँच रही है। उसके स्पर्श से अपने को धन्य समझ रहे हैं। कहने का अर्थ है कि कविवर रसखान की धारणा है कि प्रेम न तो काम–क्रीड़ा है और न तो कोई परिपाटी का कलात्मक चित्रण। इनके प्रत्येक सांस और प्रत्येक धड़कन में प्रेम की मधुर टीस और असह्य वेदना समाहित रहती है। इनका प्रेम कृष्णभक्ति संपृक्त एक भक्ति पथ है, जिससे होकर गोपियां छछिया भर छाछ पै कृष्ण को नचाया करती थीं–

''से, गनेस, महेस, दिनेस,
सुरेसहु जाहि निरंतर गावै।
ताहि अहीर की छोहरिया,
छछिया भरि छाछ पर नाच नचावै।।''

–सुजान रसखान

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वच्छंद काव्यधारा के प्रख्यात कवि रसखान ने रीतिकालीन कवियों की प्रवृत्तियों से विलग और लोक मर्यादा की सीमा को सुरक्षित करते हुए स्वच्छंद प्रेम की जो सलिला प्रवाहमान की वह इनके त्याग तपश्चर्यामूलक प्रेम संबंधी अवधारणाओं से संपृक्त एक नवीन नैतिक दृष्टि एवं उच्चादर्श प्रतिस्थापित करने में पूर्णतः निर्दोष एवं सफल है।

ooo

गुफा

—गौरी शंकर रैणा

गुफा लंबी थी। जैसे कि इस का कोई अंत ही नहीं था। वह सोचने लगा कि उसे अपने साथ किसी सहायक को ले आना चाहिए था। तीनों लोगों को नीचे वाली गुफा में क्या करना था, वहां तो दो आदमियों से भी काम चल जाता। टीम का लीडर होने के कारण उसी ने उन्हें आदेश दिया था, ''आप लोग इस **लोअर केव** में चले जाओ। मैं खुद उस ऊपर वाली गुफा में जाता हूं।

''सर, समीर को साथ ले जाइए।''

नहीं—नहीं, ज़रूरत नहीं। वह ऊपर वाली गुफा तो छोटी सी लगती है।''

''हां, वह तो इससे छोटी ही है।''

''तुम लोग देखना कि उस गुफा में कोई **कनेक्टिंग केव** तो नहीं है।''

''जी!''

फिर वह ऊपर वाली गुफा की तरफ आ गया था। अकेला!

हैलमेट से जुड़े, बैट्री—बल्ब की रोशनी गुफा की दीवार पर पड़ रही थी। उसने दीवार को ध्यान से देखा। ऐतिहासिक। शायद हज़ारों, वर्षों पुरानी दीवारें। उसने बैग में से एक नुकीला औज़ार निकाला और खुरदरी दीवार को खरोचने लगा। एक छोटी सी सिल उतर आई। उसके साथ ही कुछ पत्थरीली—मिट्टी भी गिरने लगी। उसने सिल और दीवार से उतरी मिट्टी को एक वाटरप्रूफ लिफाफे में रखा। लिफाफे पर एक स्टीकर चिपकाया और मार्कर से कुछ लिखा। सोचा कि लैब में पहुंचकर इसकी **रेडियोमीट्रिक डेटिंग** करेगा तो मालूम चलेगा कि यह गुफा कितनी पुरानी है। यहां आने से पहले **आर्कियालोजीकल सर्वे** के निदेशक ने इसे कहा था, "The age of the stone must be

determined. Numerical age of the earth materials is important to know the history" उस समय, यह अपने निदेशक प्रोफ़ेसर शेखर से कुछ नाराज़ भी था, इसलिए कोई उत्तर नहीं दिया और अगले दिन अपनी टीम के साथ साइट का निरीक्षण करने के लिए चल पड़ा था। इसकी नाराज़गी बेवजह न थी। यह दो ही महीने पहले अजंता की गुफाओं से दीवार पर बने चित्रों के, **लो लाइट** में खींचे गए फोटो लाया था। बहुत प्रशंसा हुई थी। वे चित्र दिल्ली के तमाम अखबारों में छपे थे। अंग्रेज़ी अखबारों में तो विशेष लेख और समीक्षाएं आई थी। फिर इसे नेशनल म्यूज़ियम के सभागार में एक व्याख्यान के लिए भी बुलाया गया था। प्रोफ़ेसर शेखर को भी खूब प्रशंसा मिली थी। दोनों बहुत खुश थे। फिर एक दिन हंसते–हंसते चाय के समय इसने प्रोफ़ेसर से कहा था, ''सर अगर कश्मीर का कोई प्रोजेक्ट हो तो मैं जाना चाहूंगा।'' उसी दिन शाम को नई साइट पर जाने का आदेश जारी हुआ। इतनी जल्दी? कुछ दिनों का तो विश्राम मिलता। आदेश–पत्र देखकर वह भिनक गया था।

उसने बैग में से कैमरा निकाला और दीवारों की तस्वीरें खींचने लगा। कई चित्र लिए। कैमरे के फ्लैश के बाद एक और दमकती हुई रोशनी कहीं से झलक गई। किसी लेज़र बीम जैसी। यह क्या था? शायद बाहर बिजली चमक रही थी और बादल भी गरज रहे थे। वह समझ गया कि अब गुफा में ज़्यादा देर तक रुकना ठीक नहीं। फिर ख़्याल आया कि क्या अभिनवगुप्त भी ऐसी ही किसी गुफा में अपने शिष्यों के साथ घुसा होगा!

कैमरा बंद करके उसने अपनी जेब से मोबाइल निकाला ताकि अपनी टीम के सदस्यों से बात करके पूछे कि वह कब तक बाहर आएंगे। मगर सिग्नल ही नहीं मिला। सोचा उसे 'वॉकी–टॉकी' का एक सेट साथ लाना चाहिए था। जल्दी में साइट टूर की व्यवस्था करो तो यही हो जाता है। कुछ ना कुछ छूट ही जाता है। यही सोचते–सोचते वह अपने **हाइकिंग** बूट का, ढीला हो चुका फीता बांधने

लगा। जब यहां आने से एक दिन पहले उसने डीकैथलान–स्टोर से यह जूता खरीदा था तब उसके साथ शक्ति भी थी। उस दिन इन दोनों ने डिनर भी बाहर ही खाया था। डिनर के समय शक्ति ने उससे पूछा था, ''कितने दिनों का टूर है?''

''जितने दिन काम चलेगा.....''

फिर भी?''

''काम तो 20–25 दिनों का रहेगा ही।''

''कितनी बड़ी टीम लेकर जा रहे हो?''

''बस यही चार पांच लोग, अच्छा यह बता तेरे लिए क्या ले आऊँ?''

''अरे राजेश! यहां, दिल्ली में सब कुछ तो मिलता है। वहां से कोई चीज़ लाने की ज़रूरत नहीं।''

''पश्मीने का शाल?''

''नहीं!''

''अरे तुम जानती नहीं क्या, **जोसेफिन** ने इसे योरूप का फैशन स्टेटमेंट बनवाया था।''

''हां सो तो है, पर मेरे पास है एक पश्मीना शाल, मां का दिया हुआ।''

''तो अब मैं अपनी पसंद का ले आऊंगा।''

''तुम भी ना.....''

शक्ति सबसे पहले इसे भीम बेटका में मिली थी। वह उन दिनों **रॉक आर्ट** पर काम कर रही थी। फिर राजेश ही उसका गाइड़ और मित्र बन गया। मित्रता रिश्ते में बदल गई और वे दोनों पति–पत्नी हो गए।

वह दीवार के सहारे खड़े होकर बैग बंद करने लगा। तभी उसने महसूस किया कि उसके **हाइकिंग** बूटों में पानी घुसने लगा है। उसने बैट्री की रोशनी नीचे की तरफ केंद्रित की। देखा तो दोनों पैर पानी में डूबे थे। पानी घुटनों के पास तक आने लगा था। सोचने लगा कि इस गुफा में निश्चित ही कहीं कोई जल स्रोत है। अब और आगे

जाना संभव नहीं था, इसलिए वह पीछे मुडने की सोचने लगा। पीछे मुड़ते–मुड़ते उसे वे जटाधारी याद आने लगे जो ऐसी कंदराओं में रहते हैं। वे कैसे रहते होंगे? आई.आई.टी का वह प्रोफ़ेसर भी याद आया जो सब कुछ छोड़कर उत्तराखंड की एक गुफा में रहने लगा है। क्यों? क्या जीवन इतना तैजस है कि कुछ व्यक्ति उसका ताप सहन ही नहीं कर पाते हैं, अकुलाहट में सब कुछ छोड़कर जाने को तत्पर हो जाते हैं। या फिर क्षमा, दम, बुद्धि, शुचि और अक्रोध की अनुभूति ऐसी ही गुफाओं में होती है?

पानी बढ़ रहा था। गुफा प्रवेश भी अभी बहुत दूर था। वह कुछ आगे बढ़ा। उसे याद आया कि उसने भी तो ज़िद की थी सब कुछ छोड़कर जाने की। तब, जब उससे मालूम हुआ था कि शक्ति के माता–पिता उसे पसंद नहीं करते हैं। वह बिल का भुगतान किए बिना ही गुस्से में रेस्तोराँ से बाहर आया था।

''रुको राजेश रुको! कहां जा रहे हो?''

''बस अब कुछ नहीं। हो गया अंत....''

''नहीं!''

''मैं यह शहर छोड़ दूंगा। नौकरी छोड़ दूंगा। हरिद्वार चला जाऊंगा या किसी गुफा में जाकर रहूंगा। मुझे यहां चारों तरफ अंधकार दिखता है।''

''शांत हो जाओ! तुम गुस्से में हो। कोई न कोई समाधान निकल आएगा। मैं मना लूंगी मम्मी–पापा को। जो गुण मुझे नज़र आ रहें हैं वे उन्हें भी नज़र आने लगेंगे। उन्हें भी वह रोशनी दिख जाएगी जो मुझे तुम में दिखती है।''

वह गुफा के प्रवेश की तरफ बढ़ रहा था। पानी का स्तर कम हो गया था। वह आगे बढ़ता गया। गुफा प्रवेश एक बिंदु सा दिख रहा था। श्वेत! गुफा प्रवेश का बिंदु बढ़ने लगा और वह कुछ ही देर में बाहर से आने वाली हवा को महसूस करने लगा। गुफा प्रवेश पर

पहुंचते ही उसके चेहरे पर बारिश की बूंदे गिरने लगी। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। उसने जेब से मोबाइल निकाला, सिग्नल मिल गया। अपने टीम के सदस्यों का नंबर मिलाया।

''हेलो सुदर्शन, मैं बोल रहा हूं।''

''हां सर बताइए! आप कहां पर हैं?''

''मैं **केव** की **एंट्री** के पास हूं।''

''सर जल्दी नीचे आइए, हम यहां बेस के पास आपका इंतिज़ार कर रहे हैं। जैसे ही हम अपनी **केव** से बाहर आए, वैसे ही ज़बरदस्त पानी बरसने लगा। मुझे लगता है हमें तंबू के बजाय शहर में जाकर किसी होटल में रहना चाहिए। मौसम का कोई भरोसा नहीं।''

''ठीक है मैं आ रहा हूं और रेनकोट पहन लेता हूं।''

''आइए सर, आइए।''

उसने अपने बैग में से रेनकोट निकाला। रेनकोट पहनकर बाहर को आने लगा तो देखा चारों तरफ पानी ही पानी है। पहाड़ की ढाल में पानी भर गया था। सामने की ढाल के पानी में से एक ऊंची शिला जलोदभव के सिर की भांति बाहर को झांक रही थी। प्रवाहित जल दो तीन दिशाओं से आ रहा था। देखते ही देखते यह हिमप्रस्थ मकरालय का रूप धारण करने लगा था। कश्यप ऋषि के सतीसर जैसा। भला कब यह प्रवाह रुकेगा और कितनी देर में सारा पानी बहकर नीचे को निकल जाएगा। वह सोचता रहा और सामने के जलवृत्त को देखता रहा।

ooo

पहलवान की मूंछ

- महाराज कृष्ण संतोषी

''कभी घर में मुंह छिपाकर नहीं बैठे....आज क्या बात हुई?"

पहलवान चुप रहा। सोचने लगा कि बताऊं या नहीं ? पर साथ ही यह ख्याल भी आया कि आज तक जिस मूंछ के दम पर वह अपनी मर्दानगी दिखाता था, वह पलभर में ढह जाएगी। अब तो युक्ति से काम लेना होगा। पति को कुछ भी न बोलते देख पत्नी वापिस किचन। कोविड काल में पहलवान खुद ही अपना नाई बन गया था। एक दिन गलती से आधी मूंछ कट गई। पहलवान अब क्या करता।।यह गलती नाई से हुई होती तो उसे डांट भी दिया होता।चांटा तक लगाया होता। उस ने एक दम गमछे से अपना चेहरा ढका। अगर पत्नी ने देख लिया तो वह खूब हंसेगी जो उसे कदापि सहन नही होगा। फिर क्या था पहलवान ने आधी बची मूंछ भी काट डाली और पूरे गमछे से मुंह लपेट लिया।

पत्नी आई ।बोली "पहले तो लौट गई।

इधर पहलवान अपने टीन के बक्से से दो मास्क लेआया। पहले अपना मुंह ढक लिया फिर अपनी पत्नी को बुला कर कहा,"भाग्यवान ! कहते हैं गांव में भी हवा ज़हरीली हो रही है और

इससे बचने के लिए बस एक ही उपाय है कि घर -बाहर हर कहीं मास्क पहनो। लो तुम भी पहनो।"

पत्नी ने मास्क तो ले लिया पर जाते-जाते विनोद में यह ज़रूर कह गई "मूंछ तो आप की कट गई, मैं क्यों मास्क पहनूं।"

पहलवान की जैसे सांस निकल गई। सोचा अब आस-पडोस में बात फैल जाएगी कि पहलवान की मूंछ कट गई है। मैं अब किसी को क्या मुंह दिखाऊं गा। मेरी मूंछ ही मेरी इज्ज़त थी।"

पति के तनाव को महसूसते हुए पत्नी बोली

"सुनो जी! मैं आप की मूंछ के बारे में किसी को नहीं बताऊंगी। आप कोई चिन्ता न करें। जब बाहर जाएं तो मास्क पहन कर लोगों को समझाइयेगा कि मुंह ढककर रहने में ही खैर है। वे आप की बात को अनसुना नहीं करेंगे। समझेंगे कि जब आप जैसा पहलवान डर गया हो तो उन की क्या बिसात"

पहलवान खुश हुआ। उसे अपनी समस्या का समाधान मिल गया। उसे इस नए रूप मे देखकर आस-पास के लोग भी गमछे या रूमाल का इस्तेमाल करने लगे।

मूंछ कटने के तीन दिन बाद।

पहलवान अपने कुछ साथियों के साथ पीपल की छांव में बैठे बतिया रहे थे कि पता ही नहीं चला कैसे एक मधुमक्खी ने नाक के पास डंक मारा। पहलवान के मुंह से हल्की चीख निकली। जेब से

चाकू निकाला। गांव में इसी हथियार से डंक का इलाज होता था । दर्द के मारे उसे होश ही नहीं रहा और उस ने एकदम अपनी मास्क उतार ली।

साथियों ने देखा तो वे डरते-डरते हंसने लगे।
पहलवान से रहा नहीं गया ।

बोला, "मेरी तरफ इस तरह क्यों देख रहे हो। समय खराब चल रहा है। शुक्र है मूंछ ही कट गई। नाक तो बच गई।"

साथियों ने सहमति में अपने सिर हिलाए । आज पहली बार पहलवान को अपनी अकलमंदी पर गर्व महसूस हो रहा था।

ooo

वर्जिनिटी

-नीना अंडोत्रा पठानिया

अगस्त की शाम बरसात लिए ढल रही थी। शाम के चार बज रहे थे। विमला अपने पति प्रमोद लाल के साथ अभी भी घर की सफ़ाई में व्यस्त थी। चेहरे पर तनाव साफ़ झलक रहा था। बतीस वर्षीय बेटी श्यामली की शादी की चिंता आजकल वक़्त- बेवक़्त विमला को घेरे रखती थी।

"माँ, पहले चाय पी लें, बाक़ी काम मिलकर कर लेते हैं।" चाय के चार कप की ट्रे मेज़ पर रखते हुए रोमा के हाथ की लाल चूड़ियां खनक रही थीं। रोमा विमला की बहू, जो कुछ महीने पहले शादी कर इस घर में आई थी।

रोमा की आवाज़ सुनते ही प्रमोद लाल हाल में लगी कुर्सी पर आकर बैठ गये। "श्यामली की माँ आ जाओ अब, पहले चाय पी लो। रोमा ने चाय बहुत अच्छी बनाई है।" बिस्किट को चाय में डिप करते हुए प्रमोद लाल ने कहा। शाम की चाय विमला, प्रमोद, बेटा मोक्ष और बहू रोमा एक साथ पीते थे।

"मां, श्यामली नहीं आई अभी तक ?" मोक्ष ने चाय का कप हाथ में लेते हुए विमला से पूछा।

"इस लड़की का कौन सा टाइम है। स्कूल से निकलकर साईमा के घर चली गई होगी।" विमला ने परेशान होते हुए कहा।

“अरे आ जायेगी क्यों परेशान होती हो।”

“परसों लड़के वाले देखने आ रहे हैं और इस लड़की को घूमने से फ़ुर्सत नहीं है , शादी की उम्र निकल रही है , पर हरकतें बचकानी ही हैं अभी तक।”

“सब सीख जाएगी वक़्त के साथ, तुमने भी तो शादी के बाद ही सब सीखा था।” प्रमोद लाल ने शरारती हँसी के साथ विमला को छेड़ते हुए कहा और जेब से मोबाइल निकाल बेटी श्यामली को फ़ोन करने लगे।

“मोबाइल पर रिंग तो जा रही है पर...। ” अभी प्रमोद लाल बोल ही रहे थे कि श्यामली के स्कूटर की आवाज़ से सभी एक-दूसरे को आंखों से कहने लगे कि श्यामली आ गई है।

बारिश तेज़ हो गई थी। दिन अभी डूबा नहीं था , पर काले बादलों ने सूरज को छिपा लिया था और हल्का-हल्का अंधेरा भी दस्तक देने लगा था।

“दो बजे तुझे छुट्टी हो जाती है और तू अब पहुंच रही है।” अंदर आते ही विमला ने अपना गुस्सा दिखाते हुए कहा। “अरे मां साईंमा के अब्बू की तबीयत ख़राब हो गई थी वही देखने चली गई थी।” प्लेट से बिस्किट उठाते हुए श्यामली बोली।

"कितनी बार कहा है रेनकोट लेकर जाया कर। बरसात का मौसम है पर इस लड़की को तो...। " भीगे कपड़ों से निचुड़ता पानी फ़र्श पर फ़ैलता देख विमला ने बेटी को टोकते हुए कहा।

"अरे मां..., लगाती हूँ पोछा।" श्यामली बोलते हुए अपने कमरे की ओर चली गई। उसके सैंडल की टक-टक की आवाज़ तेज़ थी , जिससे साफ़ पता चल रहा था कि मां का ऐसे टोकना उसको कितना बुरा लगा था।

बाक़ी सब लोगों के चेहरे पर हमेशा की तरह हँसी थी। जब भी मां-बेटी की आपस में हल्की-फुल्की बहस होती तो सब शांत रहते। सब जानते थे दोनों कुछ देर तक़रार के बाद एक-दूसरे की चहेती हो जाएंगी।

कुछ ही देर में श्यामली आसमानी नीले रंग की सलवार-कमीज के साथ सफ़ेद दुपट्टा ओढ़े हाथ में पोछा लेकर आ गई।

"आज घर की सफ़ाई कुछ ज़्यादा ही हुई है। " श्यामली ने पोछा लगाते हुए, घर के बदले हुए पर्दों और बेडशीट की ओर इशारा करते हुए कहा।

"परसों मेरे जीजा जी आ रहें हैं , इस बार कहीं तेरी बात बन जाये तो हम तुझे इस घर से निकालें।" मोक्ष अक़्सर शादी के नाम से श्यामली को चिढ़ाता था, इसलिए उसने आज भी अपने हाथ से मौक़ा जाने न दिया।

"अरे वाह... कौन ख़ुशनसीब है वो जो तेरा जीजा बनने के सपने देख रहा है।"

"आ रहा है परसों मिल लेना , सबसे बड़ी बात आपकी कुंडली मैच हो गई है ।"

"कुंडली का ही मैच होना ज़रूरी है। वो मुझसे मैच हो या न हो।" मुँह में बोलती हुई श्यामली रसोई में चली गई।

बेटी के पीछे विमला देवी भी चली गई।

चार साल से सेकेंडरी स्कूल में अध्यापिका चली आ रही श्यामली मोक्ष से दो साल बड़ी थी , पर कहीं भी उसकी कुंडली नहीं मिलती थी, इसलिए हमेशा शादी की बात बनते-बनते रह जाती। मोक्ष की शादी श्यामली ने ही माता-पिता पर ज़ोर देकर इसी साल करवाई थी।

मोक्ष रोमा को पसन्द करता है और रोमा के घर के लोग कहीं और रोमा के लिए लड़का देख रहे हैं। ये बात जब श्यामली को पता चली थी तो श्यामली ख़ुद ही रोमा के माता-पिता से शादी की बात करने चली गई थी।

"मोक्ष अच्छा लड़का है पर शादी के लिए हम लोग इतना इंतज़ार नहीं कर सकते।" रोमा की मां ने श्यामली को हिचकिचाते हुए कहा था। श्यामली उनके इशारे को समझ गई थी। वह कभी नहीं चाहती थी कि वह अपने भाई के प्रेम के असफ़ल होने का एक

कारण बने, इसलिए उसने अपने माता-पिता को दुनिया भर के तर्क देकर भाई की शादी करवा दी थी। इस शादी से मोक्ष और रोमा जितने ख़ुश थे उससे ज़्यादा श्यामली ख़ुश थी। कई बार ख़ुशी अकारण होती है और बहुत ज़्यादा होती है जब दो लोगों को मिलाया जाता है उम्र भर के लिए। श्यामली भी ख़ुश थी प्रेम भरे दो सिर जोड़कर।

"श्यामली परसों लड़के वाले आ रहें हैं। अच्छा परिवार है और तेरी कुंडली भी मिल गई है वहाँ।"
"ठीक है माँ, जैसा आप सबको ठीक लगे।"

"लड़के की तस्वीर भी व्हाट्सएप पर मंगवा ली थी मैंने," पास खड़ी रोमा के फ़ोन की ओर विमला देवी ने इशारा करते हुए कहा। रोमा ने फ़ोन की गैलरी ओपन की और फ़ोन श्यामली को देते हुए पास खड़ी हो गई।

"रोमा मैं ज़्यादा सुंदर हूँ न इस कद्दू से। " श्यामली के इस वाक्य को सुनते ही रोमा की हँसी फूट पड़ी। पास में खड़ी माँ भी अपनी हँसी न रोक सकी। समझ गई थी बेटी मज़ाक के मूड में है।

"दीदी इसको कद्दू नहीं कहते, हेल्दी कहते हैं।"

"अच्छा इसको हेल्दी कहते हैं तो फ़िर हेल्दी को क्या कहते होंगे।" इस बार दोनों की हँसी के ठहाकों से रसोईघर गूँजने लगा था।

"परसों इसको याद से पूछना है कि कौनसी चक्की का आटा खाता है।" हँसते हुए श्यामली से बात नहीं की जा रही थी। रोमा की आँखों में पानी आ गया था। माँ कभी दोनों को टोकती तो कभी दोनों के साथ हँस देती। बातों-बातों में रात का खाना तैयार हो गया था।ननद - भाभी ने मिलकर डाइनिंग टेबल पर खाना लगा दिया। बारिश तेज़ थी और रात के आठ बजे का बिजली का कट अपने समय पर लग चुका था। बिजली का कट होना जम्मू में एक सामान्य समस्या थी।

"हम लोग अपने समय से चूक सकते हैं , पर ये बिजली का कट बिना समय गँवाए , पूरे समय पर लगता है। " प्रमोद लाल ने डाइनिंग टेबल की चेयर को सीधे करते हुए कहा। सारा परिवार एक साथ खाना खाते हुए श्यामली की शादी पर अपनी - अपनी राय दे रहा था। मोक्ष खाना खाने के बाद अपने माता-पिता के साथ डाइनिंग टेबल की चेयर पर बैठ कर बातें कर रहा था। श्यामली औऱ रोमा भी रसोई का काम ख़त्म कर सब के साथ बातें करने लगीं। रात के खाने के बाद पूरा परिवार कुछ देर साथ ज़रूर बैठता। दिनचर्या पर बात होती।

"चलो अब सभी लोग सो जाओ रात बहुत हो गई है। " रोमा की आंखों में नींद को तैरते हुए देख विमला देवी ने कहा।

माँ की बात सुनते ही सब ने अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़ दी और अपने-अपने कमरे में जाने लगे।

आसमान साफ़ हो चुका था। तारों भरा आसमान चमक रहा था। भारी बारिश के बाद मौसम में ठंडक थी। जम्मू की छोटी-छोटी पहाड़ियों की हवा ने गर्मी को दूर भगा दिया था।

श्यामली रोज़ की तरह कुछ देर क़िताबों से मुलाक़ात कर रही थी। अकेलेपन को बांटने के लिए सबको कोई न कोई चाहिए। श्यामली ने अपना अकेलापन किताबों के साथ बांट लिया था। अक़्सर क़िताबें पढ़ते हुए वह सो जाती और माँ उसके सोने के बाद कमरे की लाइट बन्द करती। माँ को कहाँ नींद आती है अपने बच्चों को जागते देख। विमला देवी भी तो माँ थी। ऐसी माँ जिसको बेटी की शादी की चिंता थी।

सुबह हर घर की बहुत व्यस्त होती है। प्रमोद लाल के घर की सुबह भी भागदौड़ भरी थी। मोक्ष और श्यामली के जाने के बाद ही भागदौड़ थोड़ी थमती । प्रमोद लाल सेना से सेवानिवृत्त सूबेदार थे, इसलिए विमला के साथ घर के कामों में ही व्यस्त रहते। रोमा अपने लिए नौकरी ढूंढ रही थी। मध्यवर्गीय ये परिवार अपनी खुली सोच से ख़ुश था। दिन बीत गया था। रात का खाना खाने के बाद कुछ देर साथ बैठने के बाद सब अपने-अपने कमरों में चले गए । विमला देवी की आंखों में नींद नहीं थी। सारी रात कभी मंत्र जाप करती रही तो कभी कमरे से रसोई का सफ़र । “बिना किसी रुकावट के बेटी का रिश्ता हो जाये बस और कुछ नहीं मांगती। ” कितनी बार मुँह में बुदबुदा दिया था उसने।

सुबह भारी बारिश में भीगती हुई आयी थी। तवी का पानी पूरे शबाब पर था। मेहमानों के स्वागत की तैयारियां हो रही थी। श्यामली ने अपने कमरे में रंग-बिरंगे कपड़े फैला रखे थे। कोई उसे पसन्द करे या न करे, पहली पसंद श्यामली स्वयं थी। रोमा बार-बार श्यामली के पास आकर कद्दू बोल जाती और माहौल ख़ुशनुमा हो जाता। लड़का अपने माता-पिता के साथ आ गया था। अगस्त की हरी घास बारिश में नहा कर नवयौवना की तरह चमक रही थी। गुड़हल, मोगरे और मौसमी फूल आँगन की शोभा बढ़ा रहे थे।

दोनों परिवार आपस में बैठ कर बातचीत कर रहे थे। जैसे ही श्यामली रोमा के साथ ड्रॉइंग रूम में आई, सब चुप हो गए। लड़के की नज़र श्यामली पर ठहर गई। श्यामली ने सफ़ेद रंग के चूड़ीदार सूट के साथ सिल्क का लाल बांधनी दुप्पटा दोनों कंधों पर फैलाया हुआ था। कानों में सिल्वर लाल मोती के डोगरा झुमके उस का रूप बढ़ा रहे थे। लड़के के माता-पिता ने श्यामली से बातें कीं और दोनों परिवार के लोग धीरे-धीरे ड्रॉइंग रूम से बाहर चले गए।

अब ड्रॉइंग रूम में दो अजनबी थे। जिनको कुछ समय में एक-दूसरे से बात कर , जिंदगी भर के लिए एक-दूसरे के होने का फ़ैसला करना था।

“मेरा नाम आदि है और बैंक में पी.ओ. हूँ।” श्यामली चुप थी, बिल्कुल शांत।

“आप बहुत सुंदर लग रही हैं।”

“थैंक यू।”

“थैंक गॉड, कुछ तो बोलीं आप, मुझसे कुछ पूछना है तो पूछ सकती हैं।”

“क्या पूछूं, मैंनें तो कुछ भी नहीं सोचा।”

“अपनी हाबिज़ के बारे में बता दें , क्या करना अच्छा लगता है।”

“मुझे घूमना बहुत पसंद है , किताबें पढ़ना और फ़ुर्सत में बाग़वानी कर लेती हूँ।” धीरे-धीरे आदि और श्यामली की बातें बढ़ रही थीं। श्यामली भी अब आदि को उसकी पसंद-नापसंद पूछ रही थी। आधे घण्टे बाद आदि के माता-पिता कमरे में आ गए। उसने अपने पेरेंट्स को इशारे से हाँ कह दी थी।

आदि दरमियानी कद-काठी , भरे हुए शरीर का मालिक था , जबकि श्यामली दुबली-पतली सी आकर्षक व्यक्तित्व की धनी थी। एक ही नज़र में वो सबको पसन्द आ गई थी। आदि की भी कुंडली मैच नहीं होती थी। अग़र कहीं हो जाती थी तो लड़की पसन्द नहीं आती। श्यामली को देख ऐसा लगा जैसी लड़की उसकी हमसफ़र बनने के लिए चाहिए थी, वो बिल्कुल वैसी ही है।

दोनों परिवार ख़ुश थे। श्यामली ने भी कद्दू के लिए हाँ कह दी थी। हमारे समाज में उम्र रहते लड़कियों की हाँ को कोई नहीं पूछता और जब बात बत्तीस साल की लड़की की हो रही हो तब कौन पूछेगा। बेशक़ वह कामकाजी ही क्यों न हो। लड़के की हाँ को ही लड़की की हाँ समझ लिया जाता है और ज़्यादातर लड़कियां भी इस हाँ को स्वीकार कर ख़ुश हो जाती हैं।

दिन की व्यस्तता से सभी लोग थक चुके थे। रात का खाना ख़ाकर सभी अपने-अपने कमरे में सोने के लिए जा चुके थे। विमला श्यामली के कमरे में थी।

"श्यामली तू खुश तो है न।"

"हाँ , माँ मैं खुश हूँ, मुझे क्या होना है।"

"मेरे कहने का मतलब था लड़का कैसा लगा तुझे।"

"ठीक था, जैसे हर कोई पहली मुलाक़ात पर होता है।"

"उम्र भर का सबंध है बेटा , तेरी ख़ुशी भी ज़रूरी है।" विमला ने श्यामली का सिर सहलाते हुए कहा।

"हमारे समाज में शादी ज़रूरी है माँ, ख़ुश रहना इतना ज़रूरी नहीं है।" श्यामली माँ की गोद में सिर रखकर लेट गई थी। इस उम्र तक पहुंचते श्यामली भी रोज़ के देखने- दिखाने से थक चुकी थी । कुंडली न मिलने से पूरे घर में तनाव का वातावरण हो जाता था। आज सब ख़ुश थे और हर मध्यवर्गीय घर की बेटी की तरह श्यामली भी अपने परिवार की ख़ुशी में ख़ुश थी। बातें करते हुए माँ-बेटी गहरी नींद में थीं। विमला देवी तो जैसे कितने दिनों बाद सुकून की नींद सोयी हो। रविवार की सुबह खिल रही थी पर सब लोग सोये हुए थे। प्रमोद लाल अपने समयानुसार उठ गए थे । हर रविवार को चाय औऱ ब्रेकफस्ट बनाने का काम प्रमोद लाल और मोक्ष का होता।

"उठो श्रीमती जी , चाय पीओ।" प्रमोद लाल ने श्यामली के कमरे में आते ही कहा। विमला देवी पति की आवाज़ से उठकर बैठ गई। श्यामली लेटी हुई आंखें कभी खोलती तो कभी बन्द करती , पर सुबह की चाय का लालच सोने भी नहीं दे रहा था। आख़िरकार

उठकर बैठ गई और चाय पीने लगी। मोक्ष और रोमा भी श्यामली के कमरे में ही चाय लेकर आ गए । मोक्ष कभी श्यामली को आदि के नाम से चिढ़ाता तो कभी श्यामली के मन की जानने की कोशिश करता। कमरे में परिवार की हँसी गूंज रही थी। प्रमोद लाल के मोबाइल ने सब शांत कर दिया। जेब से फ़ोन निकाल कर देखा तो श्यामली के ससुराल वालों का फ़ोन था। प्रमोद लाल फ़ोन पर बात कर रहे थे और सारा परिवार पास बैठा सुन रहा था। बातों से अंदाज़ा तो लग गया था कि मिलने की बात हो रही है।

"लड़का मिलना चाहता है श्यामली को," प्रमोद लाल ने फ़ोन रखते हुए कहा। सारा परिवार चुप था। मिलने के लिए बाग-ए-बाहू को चुना गया था। श्यामली को भी इस जगह जाना बहुत पसन्द था। बाहू का किला जम्मू की सबसे पुरानी इमारत है। यह शहर के मध्य भाग से पांच किलोमीटर दूर तवी नदी के बायें किनारे स्थित है। ख़ूबसूरत झरनों, हरे-भरे बाग तथा फूलों से भरे हुए इस किले की शोभा देखते ही बनती है। इस किले को महाकाली के मंदिर के नाम से जाना जाता है। यह मंदिर किले के अंदर है तथा भावे वाली माता के नाम से प्रसिद्ध है।

"अच्छा है न मिलने को बोल रहा है। एक-दूसरे को जानने का मौक़ा मिलेगा," सबको चुप देख मोक्ष ने माहौल को सामान्य करते हुए कहा। सब मोक्ष की हाँ में हाँ मिलाते हुए अपने - अपने काम में व्यस्त होने लगे। दो बज रहे थे श्यामली तैयार हो रही थी।

दोनों परिवारों की रजामंदी से श्यामली को आदि का नंबर और आदि को श्यामली का मोबाइल नंबर दे दिया गया था।

पूरे चार बजकर पंद्रह मिनट पर श्यामली बाहू फ़ोर्ट के बाहर पहुंच गयी। आदि बाहर ही उसका इंतज़ार कर रहा था। आदि की नज़र बार-बार उस पर ठहर रही थी। पीले रंग के सलवार सूट के साथ खुले बालों में श्यामली ख़ूबसूरत लग रही थी। कुछ पल के लिए आदि को श्यामली के आगे बाहू फ़ोर्ट की ख़ूबसूरती फ़ीकी लगी। दोनों बाग़ के बीच में लगी बेंच पर बैठ गए। कितने लोग बाग़ की ख़ूबसूरती का आनंद ले रहे थे। कितने प्रेमी युगल सिर जोड़कर बैठे हुए थे। श्यामली रंग-बिरंगे फूलों में खोई हुई थी।

"मैं आपको पसन्द तो हूँ न।" आदि ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा। श्यामली ने 'हाँ' में सिर को हिला दिया और फ़िर से फूलों की कतारों में खो गई।

"कुछ बोलेंगी नहीं आप?"

"ये जगह मुझे बहुत पसंद है।"

"जानता हूँ, ख़ूबसूरत लोगों को ख़ूबसूरत जगह ही पसन्द होती है।"

"कभी जम्मू के बाहर गई हैं आप।"

"नहीं।"

"शादी के बाद कहाँ घूमने जाना चाहेंगी।" श्यामली ने सुनकर अनसुना कर दिया। बिल्कुल उन लड़कियों की तरह जो ऐसे सवालों के जवाब देने में संकोच करती हैं।

"आप बहुत आकर्षक हैं। कॉलेज में कोई...। " बोलते-बोलते आदि चुप हो गया।

"आप पूछिए जो भी पूछना हैं। संकोच न करें। " श्यामली ने आदि को चुप होते देख कहा।

"क्या आप अभी तक वर्जिन हैं। " आदि के मुँह से एकदम निकल गया। जैसे इसी सवाल के लिए वह श्यामली से मिलने को व्याकुल था।

"सॉरी, मेरे कहने का मतलब आप ग़लत न समझें।"

"नहीं, आपको हक़ है पूछने का।' श्यामली ने शर्म, हया, संकोच, असहजता को एक किनारे पर रख कर आदि की आंखों में आंखें डाल कर कहा।

"नहीं श्यामली मेरा ऐसा मतलब नहीं था।"

"आपको क्या लगता है ? मैं वर्जिन हूँ या नहीं ?" श्यामली ने आदि को टोकते हुए पूछा।

"हम दोनों ज़िंदगी शुरू कर रहे हैं , इसलिए एक-दूसरे के बारे में सब पता होना चाहिए।"

"और ज़िंदगी शुरू करने से पहले मुझे मेरी वर्जनिटी का सर्टिफिकेट भी आपको देना चाहिए , क्योंकि मैं एक लड़की हूँ ?" श्यामली ने सहजता से कटाक्ष करते हुए कहा।

"श्यामली मूड मत ऑफ़ करो। मैं तुम्हारा मन नहीं दुखाना चाहता था। सिर्फ़ पास्ट को जानना चाहता था।"

"पास्ट तो पास्ट है और अग़र मेरा कोई पास्ट होगा भी तो मैं क्यों बताऊं किसी को भी। आपके बारे में मैं कितना जानती हूँ अभी।"

“मतलब तुम्हारा कोई पास्ट था।”

"मुझे इस टॉपिक पर कोई बात नहीं करनी। ” बोलते हुए श्यामली खड़ी हो गई।

बाहू के सब फूल मुरझा गये, हरी घास मानो गर्मी की लू से जल गई हो।

“श्यामली...।” श्यामली ने कानों में पड़ती आवाज़ को पलट कर देखा तो साईमा थी। साईमा अपने दोस्त के परिवार को बाहू फ़ोर्ट दिखाने आई थी।

“अरे तुम यहाँ पर।”

“हाँ... सोचा आज तुम्हारा पीछा किया जाए।” बात करते हुए दोनों सहेलियां हँस पड़ीं।

“ये तेजस और तेजस के माता-पिता।” तेजस ने श्यामली को अपलक देखते ही ‘हेलो’ कहा और श्यामली ने भी सिर को झुकाकर इस नमस्ते का बड़ी नज़ाक़त के साथ उत्तर दिया।

“इनसे मिलो साइमा मिस्टर आदि।” आदि ने अनमने ढंग से हेलो कहा। जब बात किसी व्यक्ति विशेष से करने की चाह हो तो और किसी में कोई रुचि कैसे ले सकता है। कुछ देर की बातचीत के बाद साईंमा अपने मेहमानों के साथ चली गयी । सबके चले जाने के बाद आदि सामान्य था , पर श्यामली के मन में आदि का एक ही सवाल था, “क्या आप वर्जिन हैं?”

दिन ढल चुका था। रंग-बिरंगी लाइटें बाहू फ़ोर्ट को और भी ज़्यादा ख़ूबसूरत बना रही थीं। रात की रोशनी में फव्वारे बाग़ की ख़ूबसूरती को चार चांद लगा रहे थे।

"चलो किसी रेस्टोरेंट में कॉफ़ी पीते हैं।" आदि ने श्यामली का हाथ पकड़ने की कोशिश करते हुए कहा।

"नहीं..., बहुत देर हो चुकी है। " मुझे घर जाना है अब। श्यामली अपने हाथ पीछे करते हुए बोली।

"मैं छोड़ देता हूँ घर आपको।"

"सॉरी, मुझे ऐसा कोई सवाल नहीं पूछना चाहिए था आपको।" श्यामली चुप थी। मन में सिर्फ एक ही सवाल था। वर्जिन होना क्या है और औरत का शादी से पहले वर्जिन होना इतना ज़रूरी क्यों है ? आदमी हर पक्ष से दूध का धुला क्यों है? कुछ देर में श्यामली का घर आ गया था।

"सॉरी।" श्यामली को घर जाते देख आदि ने फ़िर से माफ़ी मांगी ।

"कुछ बातों के लिए सॉरी शब्द नहीं बना है अग़र आज मैंनें आपकी माफ़ी स्वीकार कर ली तो सारी उम्र मैं आपसे माफ़ी मांगती रहूंगी।"

आदि श्यामली का इशारा समझ गया था। उसने शादी के लिए इनकार कर दिया था । कदमों की गति तीव्र हो गयी थी। सैंडल की टक-टक की आवाज़ आदि के कानों पर प्रहार कर रही थी। उन कदमों की गति बहुत गतिशील होती है जिनका ज़िंदगी में लौटना नामुमकिन होता है।

श्यामली जा चुकी थी और आदि एक सवाल में उलझ गया था।

ooo

भूत प्रेत एक मिथ्या

–सतीश कुमार शर्मा

एक नौजवान लड़का जो एक गाँव में रहता था। घर के काम काज के अलावा खेती बाड़ी भी करता था। जिस इलाके में वह रहता था वहाँ कहीं पहाड़ और घने जंगल के अलावा छोटे–छोटे पानी के स्रोत भी थे और रात के समय जब पानी पत्थरों पर बहता था तो उसकी आवाज़ काफी दूर तक सुनाई देती थी। क्योंकि यह एक ग्रामीण इलाका था। शिक्षा का अभाव होने के कारण लोगों में अंधविश्वास का काफी प्रभाव था। आने जाने के रास्ते काफी दुर्गम और कठिन भी थे । क्योंकि कहीं पर पहाड़ पर चढ़ना पड़ता और कहीं एक दम ढलान आ जाती । इसके अलावा जंगली जानवरों का डर भी यहाँ के लोगों को सताता रहता। कई बार अचानक ऐसे हादसे भी हुए कि लोग पहाड़ की ऊँचाई से गिर कर अपनी जान से हाथ धो बैठे और कई बार रात के अंधेरे में जंगली जानवरों का शिकार बन गए । एक बार की घटना है कि उस नौजवान के चाचा पहाड़ों की ऊँचाई से गिर कर जान गंवा बैठे । जिससे सभी परिवारों में एक दुख की लहर दौड़ गई । उस नौजवान की माता जी ने उसे उसके चाचा जी के घर अफसोस करने के लिए जाने को कहा ।

चाचा का घर काफी दूर और बीच जंगल में था। आने–जाने के लिए कई छोटे टीलों को भी लांघना पड़ता तो कहीं बीच घने जंगल से भी गुज़रना पड़ता था। गांव में अक्सर जगह–जगह पर शमशान घाट बने हुए होते है। यह प्रायः पानी के स्रोत के किनारे ही थे। इनसे थोड़ी दूर पर एक बरगद का पेड़ और मंदिर भी था। नौजवान अपनी माता जी की आज्ञा का पालन कर सुबह ही के घर से निकल पड़ा। रास्ता लंबा होने के कारण वह चाचा जी के घर शाम को पहुंचा। अफसोस करने के बाद हालांकि सांझ हो चुकी थी और बूंदा–बांदी भी शुरू हो गई थी किन्तु उसने वापिस लौटने का निश्चय

किया और सभी से आज्ञा लेकर वापिस चलना शुरू कर दिया । अन्धेरा बढ़ता गया और बारिश की गति भी तेज़ हो गई, लेकिन इस नौजवान के हौंसले बुलंद थे और उसने अपना सफर जारी रखा। रात के अंधेरे में जब वह आधा रास्ता लांघ चुका था तो वह उस स्थान के निकट पहुंच गया जहां गिरकर उसके चाचा की मृत्यु हुई थी। नौजवान अपनी राह पर चल ही रहा था कि एक छोटे से कंकर ने उसकी पीठ पर दस्तक दी तभी उसने तुरन्त पीछे मुड़कर देखा तो उसे दूर एक सफेद वस्त्र पहने आदमी की शक्ल में एक साया दिखा। अब वारिश तेज हो रही थी और बादलों की वजह से घनघोर अंधेरा छाया हुआ था। इस नौजवान को डर लगने लगा, किन्तु उसने पीछे लौट कर नहीं देखा और अपने चलने की गति को बढ़ा दिया। बारिश ज़्यादा होने और डर की वजह से उसने एक बड़ी चट्टान का सहारा ले लिया ताकि स्थिति में सुधार होने पर वह अपनी यात्रा फिर से शुरू कर सके। कुछ समय बाद बारिश धीमी हो गई और वह नौजवान आगे बढ़ने लगा। जब उसने एक कदम ही आगे रखा था तो उसे वही सफेद वस्त्र वाला आदमी कुछ दूरी पर अपने सामने दिखा और यह नौजवान इस नतीजे पर पहुँचा कि यह कोई प्रेत आत्मा है।

भूत प्रेतों के किस्से अकसर गांव में काफी चर्चा में रहते हैं और अब तो इस घटना से इस नौजवान का विश्वास भूत – प्रेत में और भी बढ़ गया। साहस रखते हुए नौजवान ने अपनी यात्रा जारी रखी । ज्यों–ज्यों वह आगे बढ़ता, उसे महसूस होता कि वह सफेद वस्त्र वाला आदमी भी उसके आगे – आगे चलता जा रहा था। उस नौजवान ने अपने बुजुर्गों से सुन रखा था कि अगर किसी चिता की जलती लकड़ी अपने हाथ में ले लो तो बुरी आत्माएँ आपके पास नहीं आती । अब यह नौजवान इस ताक में था कि कब वह शमशान तक पहुँचे और जलती चिता की लकड़ी अपने हाथ में ले और इस प्रेत आत्मा से पीछा छुडाए । आखिर यही हुआ उसने रास्ते से एक जलती हुई चिता से एक लकड़ी अपने हाथ में ली और बूंदा–बांदी के बीच में इसे लेकर आगे बढ़ता गया। उस नौजवान ने यह भी सुन रखा था

कि प्रेत आत्मा मंदिर तक ही आ सकती हैं उसके आगे नहीं आती। हालाँकि उस नौजवान के हाथ में जलती चिता की जलती हुई लकड़ी भी थी, फिर भी वह सफेद वस्त्र पहने आदमी कभी उसके आगे हो जाता और कभी उसके पीछे रह जाता और यह नौजवान यही सोचता कि कब वह मन्दिर तक का रास्ता तय करे और उस भूत–प्रेत आत्मा से छुटकारा पाए।

धीरे–धीरे उसने अपनी हिम्मत जुटाए रखी और मंदिर तक का रास्ता तय कर लिया और उसके बाद उसने सुख की सांस ली । कुछ और रास्ता तय करने पर उस नौजवान के ताया जी का घर था। थोड़ी देर में वह वहां पहुंच गया। उसने जाते ही अपने ताया जी को सारी बात सुनाई। उसकी बात सुनकर उसके ताया जी ने आवाज़ लगाई और उनका छोटा भाई जो कि सफेद वस्त्र पहने हुए था, कमरे से निकल कर बाहर आया। तब यह भेद खुला कि यह तो वही आदमी था जिससे वह नौजवान सारे रास्ते डरता आया था और आते ही उसे बुखार हो गया। वास्तविकता यह थी कि दोनों एक दूसरे को भूत–प्रेत समझते रहे। जबकि असलीयत में ऐसी कोई बात ही नहीं थी। इसलिए सुनी–सुनाई बातों पर अंधविश्वास नहीं करना चाहिए।

ooo

कविताएं

कोई भी नाम दे दो

—डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी

तुम
मुझे कोई भी नाम दे दो
मेरे रिश्तों को कोई भी संज्ञा दे दो
मैं जीता जागता प्रतीक हूं
अपने समय का।

जबतक धरती का कोई सदस्य
भूख से बेहाल है
मैं उस भूख को जी रहा हूं
एक भी रूह यदि प्यासी है
तो वह प्यास मैं भोग रहा हूं।
हर नंगी देह का दर्द
झेल रहा हूं
मैं कब से
जेठ की धूप भरी दुपहर में
जलता है जिस्म मेरा
और पोष की डंठ में ठिठुर
भीग रहा हूं मैं
हर बंदी की कैद
काट रहा हूं मैं
सिद्धांतों की लड़ाई लड़
रहा हूं
युगों—युगों से मैं।

बहुत जोखिम भरा है
मेरे अंदर का सफर
शायद
बहुत दर्द ढोना पड़ता है
एक स्वप्न को जीवित रखने के लिए।

मुक्त करो मुझे
मैं तुम्हें
एक नया इतिहास दूंगा।

तुम
मुझे कोई भी नाम दे दो
मेरे रिश्तों को कोई भी संज्ञा दे दो
मैं जीता जागता प्रतीक हूं
अपने समय का।

ooo

ग़ज़ल

-डॉ. निर्मल विनोद

एक कब्रिस्तान आंखों में रहा
नित्य इक शमशान आंखों में रहा

याद की मकड़ी जहाँ जाला बुने
एक रौशनदान आंखों में रहा

नींद भी आती तो आती किस तरह
आपसा महमान आंखों में रह-

वो कभी इन्सानसा क्यों देखता-
उसकी तो शैतान आंखों में रहा

हाथ की सारी पतंगें कट गईं
और हर अरमान आंखों में रहा

ज़िंदगी से भेंट होती किस तरह
एक रेगिस्तान आंखों में रहा

ooo

हड़प्पा से छूटा हुआ आदमी

- डॉ सतीश विमल

हड़प्पा से छूटा हुआ आदमी
तुम्हारी प्रगतिशीलता से मिला
तो क़ैद हो गया
इतिहास की प्रगतिशीलता ने उसे
खंडहर बना दिया

हड़प्पा से छूटा हुआ आदमी
तुम्हारे तर्कों के खंडहरों में
छुपा बैठ है
खौफ़-ज़दा इतिहास सा

०००

एल-2, रेडियो कालोनी,
राजबाग़, श्रीनगर-190008 (कश्मीर)
ईमेल:satishvimal@gmail.com

कतौते

डा. रत्न बसोत्रा

आई बहार
भमरे गाने लगे
गीत गुंजाने लगे ।

****

पिता का साया
दु:खों से बचाता है
जब तलक रहे ।

****

देखा न कभी
ईश को पवन को
मन में विश्वास है ।

****

संसार फंसा
शंकाओं के जाल में
उलझता ही जाये ।

****

नयन पथ
ले जाये दिल तक
प्रेम भावनाओं को ।

****

नयी पीढ़ी तो
भूल गयी संस्कार
कैसे सुसंस्कृत हो ।

****

देखो दर्पण
दिखाये समय को

कैसे बदलता है ।

****

सावन आया
मन व्याकुल भया
सजनी मिलन को ।

****

सूने गगन
मन पक्षी उड़ता
व्याकुल सा होकर ।

****

किसान खुश
लहराती फसलें
झूमते खेत देख ।

ooo

कविता

–नरेश कुमार उदास

टी.वी. स्क्रीन पर
आये दिन
दिखता है
भौंडा–नगांपन।
दिखते हैं
लिपे पुते चेहरे
बात–बात पर
चीखते चिल्लाते
रोते – लड़ते।
आये दिन
दिखती है क्रूरता
हिंसा मारधाड़
या फिर
अकेला नायक
दस–दस गुंडों से लड़ता है
और अंत में
हमेशा जीतता है।
फिल्मी नायक
नायिका को उठा लेता है
अपनी बाहों में
दोनों नाचते हैं
चूमा–चाटी करते हैं।
बहुधा धारावाहिकों में
हत्थकंडों के प्लान

बनते रहते हैं।
भावुकता में बहते
पात्र बात–बात पर
आंसु बहाते हैं।
औरतें ही
औरतों की दुश्मन बनी हैं
कितना सारा झूठ
रंगीनियों में लिपटा
परोसा जाता है
हर रोज़।
जबकि असल ज़िंदगी में
ऐसा नहीं है
यहां पसरी पड़ी है भूख
मंहगाई कमर तोड़ती है
आदमी इन सब से
लड़ता, टूटता रहता है
उसे कुछ और
सूझता ही नहीं।
यह अलग बात है
टी.वी. की स्क्रीन पर
आते हैं कई विज्ञापन
मायावी झूठ का जाल
मात्र भरमाता है
जुगुप्सा जगाता है।
कुछ दर्शक
इन झूठी बातों में
फंसकर रह जाते हैं
और अपना जीवन
बरबाद कर लेते हैं।
क्योंकि बहुत सारे

झूठ को रंगीनियों में
सजाकर
उसे नमक–मिर्च लगाकर
बार–बार दिखाया जाता है
इस टी.वी. की स्क्रीन पर।

०००

म.न. 64, गली न. 3, लक्ष्मीपुरम,
सैक्टर बी–1, चनौर, बनतालाब,
जम्मू–181123
मो.–9419768715

ग़ज़ल

—अनिला सिंह चाड़क

रंजिशें इतनी बढ़ीं हम घर से बेघर हो गए
फूल जैसे हाथ मैं खंजर ही खंजर हो गए

यह सदाएं किसकी हैं जो टकरा के लौटी हैं अभी
अब कलेजे मांओं के पत्थर ही पत्थर हो गए

बर्फ के कुछ बुत बनाकर रोकर बच्चों ने कहा
तुम ही रहोगे अब यहां हम घर से बेघर हो गए

आस्तीनें कम पड़ीं जब सांप रखने के लिए
आदमी के जिस्म में सांपों के अब घर हो गए

कौन से रंगरेज ने लालिमा दी बर्फ को
पेड़ पौधों की जगह लाशों के बिस्तर हो गए

खेल खेला गोलियों से बच्चों ने कश्मीर के
इस धरा पर दुष्ट सारे अब सिकंदर हो गए

ooo

नदी

—गोवर्धन यादव

मेरे अंतःस्थल में
बहती है एक नदी
"ताप्ती"
जिसे मैं
महसूसता हूँ अपने भीतर
जिसका शीतल, पवित्र और दिव्यजल
बचाये रखता है मेरी संवेदनशीलता
खोल,कंदराओं,जंगलों और पहाडों के बीच
बहती यह नदी
बुझाती है सब की प्यास
और तारती है भवसागर से दुष्टों को
इसके तटबंधों पर खेलते हैं असंख्य बच्चे
स्त्रियां नहाती हैं
और पुरुष धोता है अपनी मलीनता
इसके किनारे पनपती हैं सभ्यताएं
और
लोक संस्कृतियाँ लेती हैं आकार
लोकगीतों लोक धुनों पर
मांदर की थापों पर
टिमकी की टिमिकटिमिक पर-
थिरकता रहता है
लोकजीवन

ooo

हाइकु

—यशपाल निर्मल

1.
पृथ्वी आकाश
हवा पानी व आग
जीवन तत्व।

2.
मन में मैल
करे है गंगा स्नान
देह निमानी।

3.
दाता एक वो
भिखारी जग सारा
थके न वोह।

4.
मेरे मालिक
सारी दुनिया तेरी
सिर्फ तू मेरा।

5.
खिल उठा है
मेरा मन बगीचा
तेरी यादों से।

6.
निष्ठा हो दृढ़
जमात करामात
सफल कार्य।

7.
प्रकृति गुरु
सिखाए सब कुछ
सीखें न इंसां।

8.
रमता योगी
न थके न ही रुके
बहता पानी।

9.
मासूम बच्चे
अपना घर भूल
मस्ती में खेलें।

10.
ऊपर नीचे
तू ही तू है मालिक
जल थल में।

11.
जो चले गए
फिर लौट न आए
कहां हैं गए?

12.
बहुत जरूरी
आगे बढ़ते जाना
दौड़ते हुए।

13.
पलों क्षणों में
जीवन बीत जाए
पहाड़ जैसा।

14.
कोयल कूके
सुनता कोई नहीं
किसे सुनाए।

15.
उम्र हो गई
मिलते हमें तुम्हें
हैं अनजान।

16.
होगी सुबह
रात बीते तो सही
दिन चढ़ेगा।

17.
रूठना तेरा
सांसों का रूठ जाना

है मेरे लिए।

18.
निर्मल नीर
सूख गया आंखों से
बहता लहू।

19.
निर्मल ज्योति
पवित्र प्रेम भी तू
सांसों की डोरी।

20.
तेरा शहर
लोग भी तेरे ही हैं
डर किसका?

21.
ढूंढते उसे
उम्र गुज़र गई
हाथ न आया।

22.
नई सोच है
बूढ़ों का क्या करना
पुत्र विचारें।

23.
जीवन गाड़ी

चले अपने आप
चालक कौन ?

24.
बेरोज़गारी
क्या-क्या न करवाए
बड़ा सताए।

25.
कलयुग है
इंसां इंसां को खाए
आदमखोर।

ooo

इंसानियत

–हेमा चंदानी अंजुलि

मैं इंसानियत हूँ..
आजकल बेघर हूँ..
सीमेंट सी वैचारिक दीवारों ....
और कंक्रीट के मानसिक धरातल के मध्य निवास करते
पाषाण हृदय मानवों ने, अब अपने हृदयों से
मुझे कर दिया है निष्कासित
दे दिया है वनवास
इसलिए आजकल मैं भटक रही हूँ
अपना अस्तित्व खोती भावनाओं के सूखे जंगल में
ना जाने कब ख़त्म होगा ये वनवास
कब होगी वापसी....
घर वापसी के इंतज़ार में
मैं इंसानियत....

ooo

वर्तमान पता -:11/1287,
तिरुपति विद्यापीठ हायर सेकेंडरी स्कूल के पास,
मालवीय नगर, जयपुर , राजस्थान 302017

संबंध

—केशव मोहन पांडेय

संबंधों का महीन धागा
जिसे बड़े मनोभाव से
दृढ़ करते थे पिता,
माँज—पोंछकर
चमकाती रहती थी माँ,
उसे कमज़ोर करते—करते
तोड़ दिए हम सबने
अपनी—अपनी विवशता के झटके से
अपना—अपना तर्क देकर
सारे स्नेह—बंधन।

संबंधों का घना पीपल
जैसा कभी नहीं देखा दूसरा कहीं
जिसके तले बैठकर
काटी थी सबने
पूस की ठंडक
बिताया था माघ का पाला
पीते—पीते हर स्वाद का काढ़ा
परिवार और पड़ोस भी।
जेठ की तपती दोपहरी में
समय काटते चाचा, काका, भैया
और हम सब
खेलते, चर्चा करते
पी—पीकर बेल का शरबत,

कई बार उपेक्षित हुए पीपल को
लील ली अहं की नदी
और अब नहीं दिखता
संबंधों का वह घना पीपल।

संध्या के पखेरुओं की तरह
अब हमउम्र भी
नहीं दिखते कतारबद्ध उड़ान भरते
सब सम्मिलित हैं
एक–दूजे को पीछे करने की
प्रतिस्पर्धा में।

अब बार–बार डराते हैं
धोबीघटवा, हजरिया और डोभ के बुड्डुआ
डराता है छतुअनिया–भूत
खरबन्ना का बेयार
और डराते हैं बुढ़वा बरम बाबा भी।

अब, सड़ गया है संबंधों का महीन धागा
ढह–बह चुका है
संबंधों का घना पीपल
फूटी आँख भी नहीं देखना चाहते हमउम्र
फिर भी हम चल रहे हैं
अपने–अपने रास्ते पर
अकेला–अपरिचित–सा
टकराते हुए
नित्–नए संबंधों के बवंडर से।

ooo

कुछ छूट तो नहीं रहा

-आशा पाण्डेय

घर से निकलते समय
तुमने पूछा था
कुछ छूट तो नहीं रहा है तुम्हारा
देख लेना अलगनी
बाथरूम
आलमारी ठीक से |
आदत है तुम्हारी
सामान को फैलाकर रख देने की |
मैं दौड़ी थी अलगनी की ओर
और उतार लाई थी
अपना गीला तौलिया |
आश्वस्त हुई थी खुद भी
और तुम्हें भी किया था आश्वस्त
कि सब कुछ रख लिया है मैंने
अपने बैग में |

पर माँ, जानती तो तुम भी थी
और मैं भी कि –
छूट जाता है बहुत कुछ तुम्हारे पास
तुम्हारे बिस्तर पर छोड़ आती हूँ

चैन की नींद
बगीचे में अल्हड़पन
आँगन में छोड़ आती हूँ खिलखिलाती हंसी
और कमरे में बेपरवाही |
सब कुछ माँ, सब कुछ
मैं स्वयं छूट जाती हूँ यहीं तुम्हारे पास
पूरी की पूरी माँ |

ooo

अमरावती, महाराष्ट्र

आज की रात

-राजऋषि वर्मा

आज की रात, एक अजीब सी हलचल है
जैसे कुछ अनसुलझे से सवाल हैं
आँखों में नींद नहीं तो फिर क्या है?
जैसे कुछ अजीब से हालात हैं
बदलता हुआ मौसम, अधूरा सा दर्द
कुछ अजीब सा नज़ारा जो रोज़ नज़र आता है
हो जाए तो सारा जहां सुहाना लगता है
नहीं तो एक ख़लती सी रात जैसी लगती है
आज की रात, एक अजीब सी हलचल है
जैसे कुछ अनसुलझे से सवाल हैं
आँखों में नींद नहीं तो फिर क्या है?
जैसे कुछ अजीब से हालात हैं
अधूरी सी इच्छाएं, अधूरी सी ख्वाहिशें
कुछ अजीब सा मन जो समझ नहीं आता है
हो जाए तो ये रात बदल जाएगी
नहीं तो ये दर्द कुछ दिन बाद भुलायेगी
आज की रात, एक अजीब सी हलचल है
जैसे कुछ अनसुलझे से सवाल हैं
आँखों में नींद नहीं तो फिर क्या है?
जैसे कुछ अजीब से हालात हैं।

ooo

'आशियाना' नागवानी स्कूल रोड।
पोस्ट ऑफिस दुमाना। पिन कोड १८१२०६
(जम्मू तवी)

सूरज

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

सूरज बाबा! तुम्हें प्रणाम।
कितना रूप - स्वरूप ललाम।

बड़ा आग का गोला हो तुम
लगते हो बिल्कुल फुटबाल,
भरी हुई हैं गैसें तुममें
शक्ति - ताप से मालामाल,

हर दम निकला करती लपटें
जिसमें हैं धातुएँ तमाम।

प्रतिदिन सुबह चमकने लगते
आ जाते हो अंबर में,
तनिक नहीं आलस करते हो
जनवरी से ले, दिसंबर में,

जब दिखते हो दिन कहलाता
रात में करते क्या विश्राम।

जाने कबसे बँधी नियम में
धरती लगा रही चक्कर,
ग्रह, नक्षत्र. चंद्रमा भी तो
परिक्रमा कर रहे निरंतर,

मौसम का क्रम बदला करता
वर्षा, जाड़ा, भीषण घाम।

किरणों से ही ऊर्जा पाकर
वृक्ष बनाते हैं भोजन,
तुमको देख नियंत्रित होते
सकल सृष्टि के आयोजन,

हमें विटामिन डी सँग देते
सौर ऊर्जा भी अविराम।

थोड़ी शक्ति हमें भी दे दो
नाम देश का हम चमकाएँ,
तिमिर कुहासे दूर भगाकर
आगे बढ़ते ही जाएँ,

कैसे और कहाँ रहते हो
हमें दिखा दो अपना धाम।
सूरज बाबा! तुम्हें प्रणाम ।

ooo

117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

अपना ही छप्पर

-डॉ. सतीश चंद्र शर्मा 'सुधांशु'

जब भी आँधी चली उजड़ता
अपना ही छप्पर।
लोहे को ही क्यों अग्नि में
झोंका जाता है।
फिर लोहे को लोहे से ही
ठोका जाता है।
मूल्यवान हो जाता लोहा
अग्नि में तपकर।।
फिसलफिसल-,गिरगिर कर चींटी-
दीवारें चढ़ती।
कोशिश करते उनके पल्ले
हार नहीं पड़ती।
शिखर वही छू पाता ,रुकता
कभी न जो थककर।।
सच है सबसे पहले सीधा
बृक्ष कटा करता।
खिड़की,फर्नीचर बन घर की
मान बृद्धि करता।
टेढ़े बृक्ष मरा करते हैं
चूल्हे में जलकर।।

ooo

प्रधान संपादक 'नये क्षितिज'
ब्रह्मपुरी, पिंडारा रोड बिसौली-243720
बदायूँ)0प्र0)मो0-8394034005

हाइकु

-सत्येन्द्र छिब्बर

1. करोगे छल
पड़ेगें माथे पर
चिंता के बल।

2. होगी उमंग
तो उड़ेगी पतंग
सभी के संग।

3. ज्ञान फूल है
जितना भी खिलेगा
मान बढ़ेगा।

4. उदय भानु
मिट गया अंधेरा
हुआ उजाला।

5. रक्त का दान
होता है महादान।
बचती जान।

6. खुली किताब
पढ़कर देख लो
लिखा हिसाब।

7. उंगली लिखे
अब कंप्युटर पे
कलम मौन ।

8. हम सभी का
बढ़ाता है हौंसला
सही फेसला।

9. खरी ना खोटी
कमाते हम सब
श्रम से रोटी ।

10. भरे उड़ान
बुलंद हौसलों से
मिले मुकाम।

11. होनी चाहिए
लक्ष्य पर निगाहें
जीत निश्चित ।

ooo

पता:- 17/653 चौपासनी
हाउसिंग बोर्ड,जोधपुर।

पेट की भूख

- सरोज बाला

पेट की भूख
जब सताती है
तो भुला देती है
धर्म-कर्म
मार देती हैं इच्छाएं
जला देती हैं स्वप्नों को
अंगारे नन्हीं हथेलियों पर।
पेट की भूख
मार देती है सोचने की
भर देती है ज़हर
जिन्हें उगलते रहते हैं
ज़रा ज़रा सी बात पर।
पेट की भूख
सुनने नहीं देती
दादा-दादी की कहानियां
कानों में गूंजती हैं
धमकियां शाहूकारों की ।
पोत देती है कालिख
गोरें चेहरों पर
डाल देती है छालें

हाथों में
बना देती है सोना
सबकी नजरों में।

ooo

लघुकथाएं

वेलेंटाइन

-अश्विनी कुमार आलोक

हम उड़े जा रहे थे निर्भ्रांत और निश्चिंत। रंगीन गुफाओं से होकर फूलोंभरी वादियों तक पहुँच गये।मैंने उसके हाथ छोड़े ,तो उसने एक छलांग लगायी और मेरे गले में बाँहें डालकर झूल गयी। मैंने उसको एक हाथ से दबाकर सीने में समेट लिया और दूसरे हाथ से बाल सहलाते हुए होठों की एक मीठी जुंबिश ले ली। हमारी गंध सिर्फ हमे नहीं लता-द्रुम को तरोताजा कर रही थी और रंग - बिरंगे पक्षियों ने भी केलि- कौतुक से मादक ज्वार उठा दिये थे।मेरे मुँह से अचानक निकल गया : '' शैव्या! ''

शैव्या ने मेरे होठों पर अंगुली रख दी और दूसरी ओर इशारा किया। ओह!यह क्या , हम दोनों की चोरी पकड़ी गयी थी। मेरी गर्दन से शैव्या के हाथों की पकड़ तो ढीली पड़ ही गयी थी , मैंने भी घबराकर उसे छोड़ दिया।शैव्या आकाश की ऊँचाई से गिरती हुई मुझे पुकार रही थी और मैं उसे बचाने के लिए उसकी ओर लपकते हुए हताशा में चीख रहा था : '' शैव्या ! मेरी शैव्या ! इस वेलेंटाइन डे में हम एक दूसरे में सदा के लिए समा जायेंगे।हमें कोई अलग नहीं कर सकता।''

पर न जाने शैव्या किस खाई में गिरकर गुम हो गयी और मेरा सिर गुफा की दीवारों से रगड़ाकर ढीला पड़ गया। मैंने कुछ आवाजें सुनीं :

'' एनिस्थिसिया का असर कम हुआ। अब इन्हें होश आ जायेगा।''

मैंने आँखें खोलीं: '' ओह!शिप्रा!मेरा ऑपरेशन हो गया ?''

'' हाँ।'' उसने मेरे माथे को प्यार से सहलाया और तलवे रगड़ने लगी।

'' पर , शशिकांत! तुम बेहोशी में भाभी के बजाय किस शैव्या को पुकार रहे थे?'' पास खिसकते हुए मेरे दोस्त ने मुझसे पूछा , मेरे मुँह से कुछ

निकल भी नहीं सकता था , शिप्रा ने उत्तर दिया : '' इनके दफ्तर के बॉस की पत्नी है,दोनों एक-दूसरे को जी जान से चाहते हैं।''

'' भाभी!'' मेरा दोस्त मेरे निजी मामले की तफ्तीश करने लगा , तो सफाई मैंने ही दी : '' उदय! उनके बड़े उपकार हैं मुझ पर।''

अस्पताल के अहाते में बड़ी सी गाड़ी रुकी ।मैने निगाह उठायी : '' अरे , बास शैव्या को लेकर आ गये ? ''

भरी - पूरी देहवाली शैव्या ने मेरी पेशानी पर हाथ रखा , तो मैं उन्माद से सिहर उठा।

'' भाभी! शशिकांत और शैव्या एक- दूसरे को बहुत चाहते हैं। शैव्या ने शशिकांत के लिए वेलेंटाइन डे पर फूलों का गुलदस्ता मंगाया था। आज चौदह फरवरी है न। गाड़ी में है। मंगवा दूँ। '' बॉस ने मेरी पत्नी के चेहरे की प्रतिक्रिया पढ़ी। मेरी पत्नी स्वयं उठकर गुलदस्ता उठा लायी और शैव्या की ओर बढ़ा दिया: '' दीदी! अपने हाथों से दीजिए।''

मैंने बास को देखा , उनके होंठों पर मीठी मुस्कान चहक रही थी,मेरी पत्नी ने प्रगाढ़ अपनत्व से शैव्या की ओर हाथ बढ़ाया और मेरे बास की ओर देखकर मुस्कुरा दिया:

'' साहब! हमारा और आपका वेलेंटाइन एक- सा है।''

'' हाँ भाभी! मेरा प्यार तो शैव्या की खुशियों का गुलाम है।''

मेरे दोस्त ने शायद इतनी असहजता महसूस की कि वह उठकर अलग खड़ा हो गया। शैव्या ने अपने हाथों से मुझे गुलदस्ता भेंट किया। मैंने भी कह दिया:'' आई लव यू शैव्या !''

अस्पताल में शायद हर कोई इस पहेली में उलझ गया था।

ooo

जवाब

-कृष्णचंद्र महादेविया

वर्ष 1992 का वह दिन था । मकोक सिंह की कलाकारी पर प्यारे जोशी और मियां शाकिर अली तप्सरा करने लगे थे ।

"यार जोशी, तुम तो अपने दोस्त की तारीफ करोगी ही । किंतु मकोक सिंह ने इस प्रदेश के लिए किया ही क्या है ? इसे कौन जानता है यहां ?" मियां शाकिर अली ने प्यारे जोशी से कहा ।

" क्या मतलब कौन नहीं जानता भाई ?"

"माना तेरा दोस्त है पर मियां थिएटर तो दिल्ली में करता है, फिल्में मुंबई में । इस प्रदेश के लिए क्या किया ?"

"इसका जवाब मैं नहीं दे सकता । वह देख मकोक सिंह सामने से आ रहा है । आज का दिन इसी के नाम है ।"

प्यारे जोशी ने चहकते हुए कहा। हाथ मिलाकर मकोक सिंह उन दोनों को लोअर बाज़ार मशहूर चने भटूरे की दुकान में ले गया। तीनों ने बड़े चाव से चने भटूरे खाए। सचमुच बहुत स्वादिष्ट चने भटूरे थे। मकोक सिंह ने रुपए निकालकर दुकानदार की ओर बढ़ाए।

"लालाजी लीजिए ।"

"नहीं-नहीं मकोक सिंह जी, मैं आपसे रुपए नहीं ले सकता ।"

"प्लीज़ आप चने भटूरे के पैसे ले लीजिए ।आप तो हम पर भार चढ़ा देंगे ।"

"क्यों शर्मिंदा करते हैं मकोक सिंह जी । आप बहुत बड़े कलाकार हो कर भी मेरी छोटी सी दुकान में पधारे हैं । आप जी तो पूरे प्रदेश के गर्व हैं, हम पहाड़ियों की शान और प्रेरणा हैं ।आपकी प्रेरणा से

कितने ही लोग सिनेमा , विज्ञापनों और थिएटर में काम करते अपने परिवार का भरण पोषण करने के साथ नाम भी कमा रहे हैं ।"
बगलें झांक रहे मियां शाकिर अली को जवाब मिल गया था ।

ooo

डाकघर महादेव , सुंदर नगर
जिला मंडी, हि० प्र०- 175 018
मोबाईल 78763 27144

उम्र

-हरीश कुमार 'अमित'

रात का एक बज चुका था। सोफ़े पर उनींदी-सी बैठी मोहिनी रमेश का इंतज़ार कर रही थी। दोनों बच्चे सो चुके थे। तभी घर की घण्टी बजी। मोहिनी ने दरवाज़ा खोला तो नशे में चूर लड़खड़ाते हुए रमेश ने घर में प्रवेश किया।

"इतनी ज़्यादा पीकर आए हो?" मोहिनी ने पूछा।

"अरे भई, मेरा बर्थडे है आज! ख़ुशी भी न मनाऊँ ? पूरे चालीस का हो गया हूँ आज!" रमेश ने लड़खड़ाती ज़बान से कहा और सोफ़े पर अधलेटा-सा हो गया।

मोहिनी कुछ कहती, इससे पहले ही रमेश फिर बोल उठा ,"मैं तो अपने हर बर्थडे पर ऐसे ही ख़ुशी मनाता रहूँगा – चाहे साठ का हो जाऊँ या अस्सी का! देख लेना!"

"उम्र बढ़ने से क्या होता है ? पड़ोसवालों का फ़ौजी बेटा बीस साल की उम्र में सीमा पर शहीद हो गया , लेकिन अपना नाम अमर कर गया।" मीनाक्षी के मुँह से निकले इन शब्दों को सुनते ही रमेश का सारा नशा हिरन हो गया।

ooo

304, एम एस 4,
केन्द्रीय विहार, सेक्टर 56,
गुरुग्राम 122011(हरियाणा)
मोबाइल 09899221107

साया

–बिंदिया रैना टिक्कू

वह झील किनारे बैठी ताक रही थी उन शिकारों को जो चमकती हाउसबोटस् की रोशनी के सहारे बह रहे थे। और डल के बहते पानी में तैर रही थी उसकी वो मासूम तस्वीर भी। शिकारे वालों की खुशामद भरी आवाज़ों को नकारती वह वहीं सीढ़ियों पर बैठ गई। उसके चेहरे पर झील किनारे लगी हाउस्बोट की लाईटें जब पड़ रही थीं तो उसकी झपकती पलकों में बचपन के मंज़र भी चमकते नज़र आ रहे थे। हल्की सी मुस्कान से चेहरा और भी निखर रहा था। हाथों में कुछ कंकर हिलाते-झुलाते वह गुनगुनाने लगी , "वलो माशोक़ म्याने..." गीत की पंक्तियों के साथ -साथ हाथों के कंकर धीरे-धीरे सरकने लगे थे। यकायक चेहरे की मुस्कान ठहाकों में बदल गई।

चेहरे पर देखते ही देखते आँखों की नमीं बहने लगी। कंकर अब पूरी ताक़त के साथ दबने लगे थे और बढ़ते वेग के साथ वह उन्हें झील के हवाले कर रही थी। ऐसे, जैसे किसी को पत्थर मार रही हो। झील में डूबने लगे कंकर और आँखों से बहते आँसू। शिकारा वालों की खुशामद, पहले धमकी और फिर ललकार बनती सुनाई दे रही थी। ढलते सूरज के साथ ढलती नज़र आ रही थी चेहरे की रौनक़ और बिखरता जा रहा था काजल, ठीक वैसे ही जैसे तब बिखरा था उसकी खोई हुई इज़्ज़त के साथ।

झील की खामोशी उसे चीखने पर मजबूर कर रही थी। कानों में जैसे कई आवाज़ें एकसाथ चीख- चिल्लाहट सी सुनाई पड़ रही थीं। ना जाने उस एक पल में क्या हुआ कि वो चेहरा लहुलुहान , परेशान सा उठ कर भागता नज़र आया। जैसे पीछा छुड़ा रहा हो किसी साये से। भाग रहा हो अपने आँगन से , दौड़ रहा हो जीवन की तलाश में। उसने एक बार भी उस रंगीन झील की तरफ़ मुड़कर नहीं देखा।

ooo

बाल साहित्य

किस्सा चाचा तरकीबूराम का

-दिविक रमेश

चाचा तरकीबूराम और किसी के प्यारे हों न हों, पर बच्चों के बहुत प्यारे हैं ।गाँव भर में कोई ऐसा बच्चा नहीं है ,, जो उनकी बैठक में न जाता हो। चाचा तरकीबूराम भी हर वक्त बच्चों की मदद के लिए तैयार रहते हैं। बस कोई बच्चा पहुँच जाए अपनी समस्या लेकर, वे सब कुछ छोड़-छाड़कर उसे सुलझाने में लग जाएँगे। वे अक्सर गाँव में ही रहते हैं। बहुत ही जरूरी हो तभी शहर या दूसरी जगह जाते हैं - वह भी एक दिन भर के लिए। असल में न तो उनका दिल बच्चों के बिना लगता है और न बच्चों का उनके बिना। अब तो चाचा तरकीबूराम के किस्से दूसरे गाँ व के बच्चों तक भी पहुँच गए हैं। किस्से भी दस-पाँच हों तो! अब यही किस्सा ले लो!

गाँव में तालाब के किनारे एक छोटा-सा प्राइमरी स्कूल है। वीनू इसी स्कूल में चौथी कक्षा का विद्यार्थी है। करीब एक मही ना पहले उस बेचारे पर मुसीबत टूटी थी।

एक दिन जब उसने आधी छुट्टी में अपना खाने का डिब्बा खोला तो दंग रह गया। खाना गायब था। उसकी माँ रोज़ बढ़िया-बढ़िया चीज़ें उसके खाने के लिए रखती थी। उसने सोचा शायद माँ आज खाना रखना ही भूल गई। उसने भूखे पेट ही किसी तरह

बिताया। पेट में कूद रहे चूहों ने उसे परेशान तो बहुत किया , पर बेचारा करता भी क्या।

शाम को घर पहुँचते ही उसने माँ से शिकायत की--- "माँ, आज तुमने खाना क्यों नहीं रखा ?" माँ ने वह शिकायत सुनी तो हक्की-बक्की रह गई। उसने तो अपने हाथ से अच्छा-अच्छा खाना डिब्बे में रखा था।

अगले दिन माँ ने वीनू के सामने ही डिब्बे में खाना रखा। आधी छुट्टी में जब वीनू ने डिब्बा खोला तो रुआँसा हो गया। खाना फिर गायब था। उसने अध्यापक से शिकायत की तो अध्यापक ने सब बच्चों को डाँटते हुए पूछा-- "वीनू का खाना किसने चुराया है ? सच-सच बता दो वरना सब को मुर्गा बनाऊँगा। लेकिन किसी ने चूँ तक नहीं की।

वीनू के एक अच्छे दोस्त मटरू ने खाने में से थोड़ा वीनू को दिया। वीनू ने उतने खाने से ही किसी तरह गुज़ारा किया। घर जाकर उसने माँ को सारा किस्सा सुनाया। उसने यह भी कहा-- "माँ अगर कल भी किसी ने मेरा खाना चुराया तो मैं भी किसी का खाना चुरा लिया करूँगा।" माँ ने वीनू की बात सुनी तो प्यार से बोली-- "तुम्हारा गुस्सा बहुत ठी है बेटे! लेकिन कोई गन्दा काम करे तो खुद गन्दा काम करने से समस्या नहीं सुलझती! और फिर सज़ा गन्दा काम करने वाले को ही मिलनी चाहिए! तुम चोर को पकड़ने की कोशिश करो! कल तुम और मटरू चोर पर पूरी नज़र रखना।"

अगले दिन फिर वही हुआ! वीनू और उसके दोस्त मटरू ने ध्यान तो खूब रखा था पर न जाने चोर खाने पर कब हाथ साफ कर गया। बेचारे दोनों बहुत उदास हो गए। वीनू को तो लगा था कि अब वह कभी दोपहर का खाना नहीं खा सकेगा। उसे रोज ही भूखे पेट पढ़ना पड़ेगा।

मटरू ने बहुत दिमाग लड़ाया कि चोर को पकड़ने की कोई तरकीब सूझ जाए ताकि उसके दोस्त को भूखा न रहना पड़े , लेकिन सब बेकार। आखिर उसे अचानक तरकीबूराम का ध्यान आया। उसका चेहरा एकदम खिल गया। वह चहककर बोला--वीनू , तुम्हारा चोर मिल गया! तुम्हारा चोर मिल गया! " वीनू ने इधर-उधर देखा , वहाँ कोई नहीं था। तभी मटरू ने बताया-- "अरे, हमें तरकीबू चाचा का अभी तक ख्याल नहीं आया था। चलो उनके पास। वे जरूर चोर को पकड़ लेंगे।

"अरे, हाँ, तरकीबू चाचा का तो ध्यान ही नहीं रहा था। आज स्कूल से लौटते वक्त उनके पास चलेंगे। " उस दिन उनका बाकी का समय बहुत ही आराम से कटा।

शाम को घर लौटते वक्त वे दोनों पहुँच गए तरकीबू चाचा की बैठक में। तरकीबू चाचा बड़े मजे से बैठे हुए थे। बच्चों को देखा तो खुश होकर बोले- "अरे, आओ-आओ, वीनू-मटरू! आज कई दिनों बाद आए हो। क्या कोई नाराज़गी है भई अपने तरकीबू चाचा से?"

"नहीं, चाचा, नहीं! यह बात नहीं है । असल में पिछले कई दिनों से हम बहुत परेशान हैं । स्कूल में बेचारे वीनू का कोई खाना चुरा लेता है। इसे भूखे पेट ही रहना पड़ता है। मास्टर जी ने सब बच्चों को खूब डाँटा भी, लेकिन किसी ने भी तो नहीं बताया कि चोर कौन है ।" मटरू ने बताया।

"अच्छा तो बात यह है !" चाचा तरकीबूराम ने गम्भीर होकर कहा। जब वे गम्भीर होकर सोचते हैं , तो अपनी मूँछों को दोनों ओर से मरोड़ने लगते हैं । मूँछों को मरोड़ते हुए उन्होंने पूछा-- "कितने दिन से यह किस्सा चल रहा है ?"

"छह: दिनों से , तरकीबू चाचा!" वीनू ने उत्सुकता के साथ बताया।

"ऊँ, तो मास्टरजी की डाँट खाकर भी किसी ने नहीं बताया कि चोर कौन है ?"

"नहीं चाचा!" मटरू ने एकदम बताया।

घोड़ी देर के लिए सब चुप हो गए।चाचा तरकीबूराम ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। दोनों बच्चे उनकी आँखें खुलने की प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में चाचा तरकीबूराम के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ती नज़र आने लगी और उन्होंने झट से आँखें खोल दीं। फिर उन्होंने धीरे-धीरे कहा- "तुम्हारा चोर पकड़ा गया समझो , वीनू! अब जैसा मैं कहूँ, तुम दोनों वैसा ही करो।"

"हमें क्या करना होगा, चाचा-" दोनों ने पूछा।

"सुनो!" चाचा ने दोनों के कान में कुछ कहा। सुनकर दोनों उछल पड़े।

अगले दिन स्कूल से छुट्टी होते ही वीनू और मटरू सिवाले वाले पेड़ के पास पहुँच गए। चाचा तरकीबूराम पहले से ही वहाँ मौजूद थे।

तीनों पेड़ के मोटे तने के पीछे छिप गए। थोड़ी ही देर में किसी के आने की आहट नज़दीक आ गई। किसी की आवा ज़ आई- "हे पेड़ वाले भूत! लो यह एक पूरी और सब्ज़ी! आज वीनू पूरी और सब्ज़ी लाया था। मैं यहाँ पेड़ की जड़ में रख रहा हूँ। तुम खा लेना। अब तो तुम रात को मुझे डराने नहीं आओगे न?"

"अरे, यह तो शैतान लखमी की आवाज है। अ च्छा तो यह है चोर!" वीनू ने बहुत ही धीमे-धीमे कहा।।

तभी चाचा ने मोटी-सी, भद्दी-सी आवाज़ निकालते हुए कहा- "शाबास, लखमी! मैं खुश हुआ। अब मैं तुम्हें रात में डराने नहीं आऊंगा!"

आवाज़ सुनकर लखमी बहुत खुश हुआ। वह बोला-अच्छा तो भूत जी, मैं जा रहा हूँ।" यह कहकर वह चलने को हुआ ही था कि वीनू-मटरू के साथ चाचा तरकीबूराम ने सामने आकर उसे पकड़ लिया। वह भौंचक्का-सा रह गया। वह रंगे हाथों जो पकड़ा गया था।

उसने चाचा तरकीबूराम से बहुत माफी माँगी , लेकिन चाचा तरकीबूराम उसे पकड़कर सीधा मास्टरजी के पास ले गए। लखमी असल में पहले भी कई बर अपनी शरारतों को लेकर चाचा तरकीबूराम से माफी माँग चुका था। चाचा भी माफ करते रहे थे।

मास्टर जी ने सारा किस्सा सुना तो उन्होंने लखमी को बहुत डाँटा और अगले दिन उसके माँ-बाप को बुलाकर उसकी शिकायत भी की। इतना ही नहीं , स्कूल के सारे बच्चों के सामने उसके गले में 'चोर' की पट्टी लटकाकर , उसे घुमाया गया। लखमी ने जब नाक रगड़-रगड़कर यह कहा कि वह कभी चोरी नहीं करेगा, तभी उसे माफ किया गया।

अब तुम यह तो ज़रूर जानना चाहोगे कि आखिर तरकीबूराम चाचा की तरकीब क्या थी , जिसे सुनकर वीनू-मटरू उछल पड़े थे और जिसके कारण लखमी की चोरी पकड़ी गई थी।

भई, हुआ यह कि चाचा ने उनके कान में कहा था कि वीनू अगले दिन खाने के डिब्बे में एक पर्ची भी रख दे , जिस पर भद्दी सी लिखावट में लिखा हो- "मैं सब जानता हूँ। तुम रोज़ वीनू का खाना चुराकर अकेले-अकेले खा जाते हो। अगर आज तुमने थोड़ा-सा खाना मेरे लिए नहीं रखा तो मैं रात को तुम्हें बुरी तरह डराऊँगा। मैं सिवाले वाले पेड़ का भूत हूँ। स्कूल से छुट्टी होने के ठीक आधे घण्टे बाद तुम आज के चुराए हुए खाने में से थोड़ा खाना लेकर पेड़ के पास पहुँच जाना और उसकी जड़ में रखकर मुझे आवाज देकर बता देना। इध-उधर बिलकुल मत देखना।"

बस तरकीबूराम चाचा की तरकीब कामयाब हो गई। लखमी ने उस पर्ची को भूत कि लिखी पर्ची समझकर वैसा ही किया , जैसा पर्ची में लिखा था। उसे तब तक यह तो पता ही नहीं था कि भूत-वूत कुछ नहीं होता, सो आ गया चाचा के शिकंजे में। अब तो समझ गए न?

लो, मुझे एक और किस्सा याद हो आया। तुम भी क्या कहोगे कि चाचा तरकीबूराम के ही किस्से सुनाने पर लग गए। अच्छा चलो यह किस्सा फिर कभी। अब तुम अपने कोर्स की किताब पढ़ लो। शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि चाचा तरकीबूराम यह कभी नहीं चाहते कि उनके किस्से सुनने-पढ़ने वाले बच्चे अपनी स्कूल की पढ़ाई में फिसड्डी रहें। उन्होंने खासतौर पर कहा था कि उनके किस्से उन्हीं बच्चों को बताए जाएँ, जो खूब मन लगाकर पढ़ते हों।

ooo

एल-1202,ग्रैंड अजनारा हेरिटेज,
सेक्टर-74, नोएडा-201301
मो. 9910177099,
divikramesh34@gmail.com

समुद्री ईगलों की अद्भुत उड़ान

-डॉ राकेश चक्र

नानखाना से जैसे ही स्टीमर साढ़े आठ बजे सुबह गंगासागर की ओर चला , वैसे ही सभी यात्री परम आनंद से प्रफुल्लित हो गए। बंगाल की खाड़ी का समुंदर खुशियों की हिलोरें लेकर हम सभी यात्रियों में अपार खुशियाँ भर रहा था। जल पक्षी , जिनमें मुख्यतः समुद्री ईगलें आसमान में उड़ानें भर रहीं थीं , वह सचमुच परीलोक से बिल्कुल कम न लग रहा था।

समुद्री ईगलें हमारे स्टीमर के आसपास अठखेलियाँ करने लगी थीं। देखकर ऐसा लगा कि हम बच्चे और बड़े उनके साथ - साथ उड़कर आनन्दित हो रहे हैं। जीवन में प्रथम बार ऐसे अद्भुत दृश्य के दर्शन हो रहे थे। सभी ने अपने - अपने एंड्रॉयड स्मार्टफोन मोबाइल निकाल कर दृश्य कैद करना शुरू कर दिए थे।

सुमन और संजू तो यह सब देखकर तालियाँ बजा - बजा कर भाव विभोर होकर फूले नहीं समा रहे थे।

मौसम मनभावन था , अर्थात् बहुत सुहावना, गर्मी न सर्दी । जबकि सुबह को ट्रेन में तेज़ हवाएं चलने के कारण ठंड का एहसास हो रहा था , क्योंकि हम स्वेटर आदि नहीं पहने थे।

हम सभी लोग कोलकाता से पौने तीन बजे माला होटल छोड़कर रेलवे स्टेशन सियालदाह की ओर चल पड़े थे। जो बिल्कुल पास में ही था। बाज़ार से होकर जब गुज़रे तब देखा कि मछलियों से लदे दर्जनों वाहन आना शुरू हो गए थे। दुर्गंध फैल रही थी।

सियालदह रेलवे स्टेशन के आसपास का बाज़ार रात - दिन गुलज़ार रहता था। अर्थात् रतजगा होता रहता था , या कहें मछली बाज़ार - सा लगा रहता था। पता नहीं लोग सोते भी थे या नहीं।

हमारे प्रबंधक पंडित आशीष जी ने सभी सहयात्रियों के टिकट आदि ले लिए थे। हम सभी ट्रेन में बैठ कर सियालदह रेलवे स्टेशन से ठीक चार बजे प्रातः के लोकल ट्रेन से नानखाना के लिए चल पड़े थे। ट्रेन में प्रातः काल समय होने के कारण भीड़ अधिक नहीं थी।

पंडित जी ने कीर्तन प्रारंभ करवा दिया था। दो - चार किलोमीटर के फासले पर स्टेशनों पर ट्रेन रुकती रही। मार्ग में केला , नारियल आदि के पेड़ बहुतायत में लगे थे। घरों के आसपास भी तालाब और केला , नारियल आदि के पेड़ बहुतायत में दिखे। तालाबों में मछली पालन भी हो रहा था , ऐसा हमें लग रहा था।

मौसम बहुत ठंडा हो गया था। सरसराती हवाएँ चल रही थीं , जबकि कोलकाता से चले थे, तब वहाँ सर्दी का अहसास बिल्कुल नहीं हो रहा था। आसमान में बादल भी छाए हुए थे। सभी को अपनी खिड़कियों को बंद करना पड़ा।माधवपुर , निशिदिनपुर, काकद्वीप, काशीनगर, लक्ष्मीकांतपुर आदि स्टेशनों के बीच तालाब और धान ,

सूरजमुखी के खेतों से शोभायमान था तथा कुछ खेत खाली पड़े थे। लोगों ने बताया कि बकरियों , और कुछ पशु नीलगाय आदि ने फसलों के कटने के बाद शेष अवशेष को चर लिया है ।

ट्रेन अंतिम रेलवे स्टेशन अप नानखाना पर लगभग 7 बजे आकर रुक गई थी। सभी यात्री लघुशंका और दीर्घशंका के लिए प्रतीक्षारत थे, क्योंकि लोकल ट्रेन में शौचालय आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी। स्टेशन पर भी शौचालयों की स्थिति ठीक नहीं थी। सफाईकर्मी ने प्रतीक्षालय को भी ताला लगाकर बंद कर रखा था , जिसे स्टेशन प्रभारी से शिकायत कर खुलवाया गया था। यहीं से हम स्पेशल ठेले रिक्शों में बैठकर बंगाल खाड़ी के तट पर स्टीमर में जाने के लिए पहुँचे थे।

ईगलों की उड़ानें सभी यात्रियों को प्रफुल्लित और आनन्दित कर रही थीं। मेरे पास कुछ खाने का सामान था, जिसे मैंने ईगलों की ओर उछालना शुरू किया तो ईगलों ने हवा में लपक -लपक कर पलक झपकते ही ऐसे चोंच में ले लिया कि अजब गजब दृश्य हो गया। जो भी समुंदर में गिर जाता उसे भी वह पलक झपकते ही चोंच में भरकर ले जातीं । मेरी देखा - देखी अन्य यात्री भी इस सुखद अनुभव को लेने लगे। क्योंकि स्टीमर में ही खाने - पीने का सामान बेचने वाला भी था , जिससे लोग क्रय कर ईगलों को डालते रहे।

दो ईगलें आसमान में एक -दूसरे से चोंच मिलाकर प्यार का इज़हार क़रतीं तो कभी अकेले ही उड़ानें भर -भर आकर्षित करतीं। जो

खाने की चीजें जल में रह जातीं उसे मछलियां तुरंत चट कर जातीं। तो कभी ईगलें ही मछलियों को समुद्र लहरों से उठाकर आहार बना लेतीं। बंगाल की खाड़ी का सागर का बहुत विशाल था। चारों ओर नीले रँग का जल ही जल देखकर सुखद लग रहा था। ईश्वर की विशाल सृष्टि का अपार दर्शन।

समुद्री छोटे-बड़े जहाजों, स्टीमरों का आवागमन था। उनमें कुछ यात्री-स्टीमर थे, तो अधिकांश मालवाहक। सागर के हिलोरों के बीच बड़ी मछलियाँ उछाल मारतीं, तब अद्‌भुत दृश्य लगता।

नानखाना से गंगासागर की दूरी लगभग इक्कीस किलोमीटर थी। संजू और सुमन भी ईगलों को खाने की चीजें डालकर खुश हो रहे थे, साथ ही उनके मम्मी और पापा भी।

एक-सवा डेढ़ घण्टे का सफर कैसे पूरा हो गया , पता ही नहीं चला।

जैसे ही स्टीमर गंगासागर जाने के लिए टापू पर रुका। वैसे ही सभी यात्री एक-एक उतरने लगे। यहीं उतरकर हमें मैजिक से कपिल मुनि के मंदिर गंगासागर जाना था , जहाँ बंगाल की खाड़ी में गंगा आदि नदियाँ सागर में मिलकर अपनी मंज़िल अर्थात् यात्रा को सम्पन्न कर अपने अस्तित्व को सागर में विलीन कर महासागर बन जाती हैं।

संजू अपनी बहन सुमन से बोला , " देखो दीदी आज कितना अच्छा लगा, शायद परीलोक-सा। "

सुमन हँसते और अपने भाई को प्यार करते हुए बोली , ऐसा तो हमने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। "

सभी यात्री मैजिकों से गंगासागर की ओर रवाना हो गए थे।

ooo

90 बी,शिवपुरी
मुरादाबाद 244001,उ.प्र .
9456201857
Rakeshchakra00@gmail.com

निबंध

कला माँगने की

-नंदन पंडित

हमारे यहाँ प्राचीन काल से ही याचकी कला की उपेक्षा की गई है। एक ओर जहाँ नृत्य कला , वादन कला, काव्य कला, हस्त कला, युद्ध कला, वाक् कला आदि अनेकानेक कलाओं को समय , समाज ने सिर-माथे पर चढ़ाया। प्रगति के साथ-साथ हर दिन नए-नए कौशल अनुसंधानों से इन कलाओं को हरा-ताजा बनाए रखा। इनकी कनिष्ठा अँगुली भर भी साया रखने वाले व्यक्ति को समय , समाज ने सीमा के आगे बढ़कर मान दिया। इन्हें अमुक श्रीकलाकार, फलां श्रीपुरस्कार इत्यादि सम्मानसूजक नामों , पुरस्कारों से उद्भबोधित व सम्मानित किया। दूसरी ओर वहीं **रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाय। '** कहकर याचकी कला का घोर निरादर किया है। समाज ने सदा माँगने वाले को हेय दृष्टि से देखा है। उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया है। मँगता, भिखारी, कामचोर, जाने कैसे-कैसे और किन-किन नामों से सम्बोधित किया है।

इसमें कोई दो राय नहीं , हमारा समाज सदा पूर्वाग्रह से ग्रसित रहा है। बनी-बनाई धारणा के तहत हमेशा किसी के प्रति उदार तो किसी के प्रति कठोर रहा है। उदाहरणार्थ जाति व्यवस्था ही ले लो। सवर्णों विशेषकर मनुवादियों को सिर पर चढ़ाने वाला समाज, दलितों को कोरे भूमि पर भी दस हाथ दूर बिठाता था। यह तो भला हो अंग्रेजों का कि वह यहाँ पंगु धारे और हमारे जात-पात की इन

जटिल ज़ंजीरों को ढीले कर गए। यही याचकी कला के साथ हुआ है। तमाम सवर्ण कलाओं के बीच , मनुवादी समाज ने इसे सदा से अस्पृश्य, दलित माना है। स्वतंत्रता के पहले व स्वतंत्रता के बाद अनेकानेक क्रान्तियाँ हुईं हमारे देश में। इसमें कृषि से जुड़ी हरित क्रान्ति हो या अंतरिक्ष से जुड़ा मिशन चंद्रयान हो। शांति व वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से पोषित गुटनिरपेक्ष आन्दोलन हो या लेज़र व जेट आधारित आधुनिक युद्ध क्रान्ति। सब जगह गहन शोध व कौशलों का आमूलचूल विकास हुआ है। लेकिन याचकी विद्या का सदैव निरादर किया गया, कभी भी इसके पुनरुद्धार का प्रयास नहीं किया गया।

हालांकि हमारे समाज की यह सबसे बड़ी भूल है। समाज ने याचकी विद्या एवं कला का कभी सम्यक अध्ययन व मूल्यांकन ही नहीं किया। हमारा ध्यान कभी इसके कौशलों पर गया ही नहीं। हमने इसके स्याह पक्ष को ही देखा और उभारा। यवनिका की दूसरी ओर, कभी इसके विलक्षण, पारलौकिक, जनदुर्लभ कौशलों पर कुदृष्टि भी न डाली। कितना बड़ा विज्ञान और साहित्य समाहित होता है इसमें। स्वभाव से ही केवल 'ल' जानने वाले मानव के अदेय मस्तिष्क की बंद मुट्ठियाँ खोलने के लिए मानव हृदय शास्त्र का कितना सूक्ष्म व गहन अध्ययन , मृदुभाषी एवम् अक्रोधी होने का सतत् अभ्यास तथा अटूट धैर्य की आवश्यकता होती है। दुत्कार , फटकार कई बार लात भी महाराज भृगु का कोमल चरण समझकर झेलना पड़ता है। लोग याचकी को हल्के में लेते हैं। लोगों को बहुधा कहते सुना जा सकता है, माँगने में कौन सी बड़ी बात है? मुँह उठाया और

पहुँच गए।..लेकिन न भाई न। यह आपकी बहुत बड़ी भूल है। या तो आपने कभी याचकी का सुवसर नहीं प्राप्त किया या फिर आपको इसकी अधकचरी जानकारी दी गई है। अथवा आप विपक्ष के हैं और जानबूझकर इसके कौशल को नीचा दिखाना चाहते हैं। एक बार आप किसी से कुछ माँगकर देखिए। ..हाँ हाँ! पड़ोसी से साईकील ही माँग लीजिए। फिर आप समझ जाएँगे याचकी कला की महिमा। मेरा दावा है, आप लाउडस्पीकर लगाकर इसकी महिमा बखानेंगे। आप खुद सरकार से इसके प्रशिक्षण व संवर्धन की माँग करेंगे।

फिर भी, समाज ने जिस विद्या और कला को समय के झंझाओं में उलझ-उलझकर मिट जाने को छोड़ दिया था , भला हो विलक्षण जीवटता वाले दशरथ माँझी सदृश निघरघट्ट याचकी विद्या के पुजारियों का जिन्होंने नितांत उपेक्षा भरे प्रतिकूल परिस्थियों में भी इसे जिलाए रखा। सरकार ने सहयोग न दिया, न सही। समाज ने निरादर किया, सिर माथे पर। किन्तु अपने हुनर से उन्होंने याचिकी विद्या को जीवित रखा।ये अदम्य जिजीविषु अपने धैर्य व लगन के बल पर एक से एक महाचुहिट्ट, एक से एक कृपण, एक से एक परम ज्ञानी-विज्ञानी तर्कशास्त्रियों के हाथों से ऐसे याचना-फल उड़ा लेते हैं जैसे कि चढ़ी रजनी की भरी पलटनों के बीच से मयंक तिमिर चुरा लेता है। हमने तो ऐसे-ऐसे निपुण याचक-पुरोधाओं को देखा है कि वे परम याचकी विरोधी, हर बार माँगने पर न देने की कसम खाने वाले परम बुद्धिमान, तथाकथित माडर्न आइंस्टीन के आँखों से भी बार-बार सुरमा माँग लेते हैं।

संसार में घोर अनियमितता है। हम जो नहीं होने देना चाहते, जिसके बारे में हमारे सपने तक नहीं सोचते , वह हो जाता है और जिसके होने के लिए हम एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे होते हैं , वह नहीं होता। इसे विरोधी लोग अनियममितता न कहकर संसार की विचित्रता भी कह सकते हैं। खैर , याचकी कला लुप्त हो गई होती लेकिन **जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।**

अम्बेडकरजी के संविधान ने हमारे देश में लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली क्या लागू की? याचकी विद्या के दिन बहुर गए। वोट माँगने के नए-नए कौशल खोजे जाने लगे- प्रारम्भ में तो नवीनता के चक्कर में जनता ने उत्साहपूर्वक बिन माँगे मत दिए लेकिन बाद में उसका मोह भंग होने लगा तो राजनेताओं ने जनता का मत पाने के लिए, माँगने के नए-नए कौशल- मसका लगाना (चिरौरी करना) , लुक्का दिखाना (धमकाना) , सब्ज़बाग दिखाना आदि , खोजना शुरु किया और देखते ही देखते एक लुप्तप्राय हो चली विद्या और कला का अनजाने में ही ऐसा विकास व प्रसार हो गया कि वह अन्य सभी समकालीन प्रतिस्पर्धी विद्याओं व कलाओं से बहुत आगे निकल गई। अब हम पूर्ण भरोसे के साथ कह सकते हैं कि **हम न मरबु, मरिहँय संसारा।** याचकी अर्थात् माँगने की कला शाश्वत काल तक जीवित रहेगी।

ooo

गाँव- गजाधरपुर, पोस्ट - अयाह,
इटियाथोक, जनपद- गोण्डा, उत्तर प्रदेश
पिन कोड- 271202, मो॰ 9415105425

संस्मरण

बेटियोत्सव

-आर्यावर्ती सरोज "आर्या"

मेरे मंझले भाई का विवाह पड़ा था। उसी पावन अवसर पर सभी भाई-बहन एकत्रित हुए थे और अब मां और पापा का पचासवां परिणोत्सव दिवस आने वाला था। हम सभी भाई-बहन मिलकर सोच रहे थे कि कैसे मनाएं मां-पापा का वैवाहिक उत्सव कि वह एक यादगार बन जाए , इस विषय को लेकर विचार विमर्श चल रहा था परन्तु कुछ सार्थक हल न निकल सका अतः विवाह सम्पन्न होने के पश्चात हम अपने -अपने घर चले गए। मैं भी अपने निवास स्थान गोरखपुर में पहुंच गई।उन दिनों मैं गोरखपुर के बेतियाहाता सर्राफ रेजिडेंसी में रहती थी।

मेरे मन मस्तिष्क में वही विचार उमड़-घुमड़ कर योजना का रूप देने को उत्कंठित था परन्तु कुछ सूझ नहीं रहा था। सभी भाई -बहनों ने अपने-अपने विचार रखे किन्तु मैं संतुष्ट न थी। मैं मां पापा के परिणोत्सव दिवस को एक और नए दिवस का रूप देना चाहती थी, कुछ ऐसा जिससे वह दिवस सदा के लिए महत्वपूर्ण हो जाए। मेरे मन में एक विचार आया क्यों ना मां पापा के परिणोत्सव दिवस पर गांव की सभी विवाहित बेटियों को बुलाया जाए और उन्हें इस खुशी में शामिल कर उन्हें उपहार भेंट कर विदा किया जाए ? बेटियों के लिए साड़ी दामादों के लिए पैंट शर्ट का कपड़ा और उन दोनों के लिए उपहार स्वरूप चांदी का रुपया।

गोरखपुर में ही मेरी बालपन की सखी भी रहती थी । मेरा कोई भी कार्य मेरी सखी के बिना पूर्ण नहीं होता खरीददारी से लेकर

विचार-विमर्श तक परिणामत: अपना विचार मैंने सखी के समक्ष रखा वह भी बहुत खुश हुई परन्तु फिर थोड़ी चिंतित होकर कहा- "क्या तुमने जो योजना बनाई है उसमें पूर्णतः सफल हो पाओगी? कहीं तुम मज़ाक न बन जाओ, मुझे तो इस बात का भय है।"

मैंने कहा- हम प्रयास तो कर ही सकते हैं , कोशिश करने में क्या हर्ज़ है ? "मेरे भीतर एक दृढ़ आत्मविश्वास अंकुरित हो चुका था। उसी दृढ़ता से मैंने उसकी आंखों में आंखें डालकर कर कहा-- "कोशिश तो मैं करूंगी"

थोड़ा विचलित होते हुए उसने कहा-"फिर.. भी..! सोच लो एक बार इतना बड़ा कार्यभार ले रही हो अपने कंधे पर ,...निभा पाओगी...? तुम्हारे कहने से सारी लड़कियां आ सकेंगी ? कहीं असफल ना हो जाओ,...बस इस बात का डर है मुझे।

"सोच लिया,...जो सोचना था, और फिर जब तक हम किसी कार्य की शुरुआत ही नहीं करेंगे तो सफलता अथवा असफलता कैसे मिलेगा ? सखी! तुम्हें पता है ना कि तुलसी दास जी ने राम चरित मानस की रचना की थी जब उनकी सारी प्रतियों को विरोधियों ने यह कहकर जला दिया था कि इतने सहज और सरल भाषा में राम कथा कैसे लिखी जा सकती है ? किन्तु आज देख लो ,वही रामचरितमानस प्रत्येक हिन्दू के घर तुम्हें मिल जाएगा।"

तुम्हारी दृढ़ता को देख कर अच्छा लगा ,मै और मेरी शुभकामनाएं दोनों तुम्हारे साथ हैं।"

मैंने कहा- "पुनः एक बार विचार करो सखी! वो पल कितना अच्छा, कितना सुखद होगा जब गांव की सारी लड़कियां अपने ससुराल से मायके एक साथ एक पास होंगी ? कुछ कारण बस कुछ

लड़कियां नहीं भी आ सकीं तो भी हम अपनी ओर से प्रयास तो कर ही सकते हैं ? असफलता के भय से हम शुरुआत ही न करें ये तो उचित नहीं। अब सखी की पूर्णतः सहमति थी। सफलता- असफलता के परिणाम को परे धर मैं अपने तन- मन से कार्य को अंजाम देने में जुट गई।

मैंने अपने भाई -बहनों से फोन पर बात कर सभी कार्ययोजनाओं को चिंहित कर उन्हें समझा दिया वे सभी मुझसे पूर्णतः सहमत थे। मैं मायके जाकर एक सप्ताह तक रुकी और घर - घर में जाकर सभी बेटियों का मोबाइल नंबर लिया सभी को फोन कर निमंत्रण दे आमन्त्रित किया। एक लड़की का नंबर लेने जब उसके घर पहुंची तो उसके पिता जी ने कहा- "सरोज तू इतिहास रच रही है, तूने वह कार्य कर दिखाया जिसके विषय में अब तक किसी ने सोचा ही नहीं।"

सारे गांव के लोग मेरे इस कार्य से उत्साहित और आनंदित थे। सभी भाई-बहनों की सहभागिता से मैंने खरीददारी भी कर लिया। साड़ी मैंने गांव की बहुओं के लिए भी खरीद ली।

गांव के जो बुजुर्ग दामाद थे उनके लिए धोती और कुर्ता खरीद लिया। चांदी के नोटों पर विवाहोत्सव दिवस की तिथि और दिनांक सन् आदि अंकित करा दिया। अब वो दिन भी आ गया जिस दिन के लिए सारी तैयारियां चल रही थी। इस दिन को हमने नाम दिया *बेटियोत्सव* इस महोत्सव में भाई बहन सभी साझेदार थे किन्तु बहनों का विशेष योगदान रहा।

१० मई को १००% तो नहीं लेकिन 80% बेटियां इस महोत्सव में सहभागी बनीं। मेरे गांव की एक बेटी जो कि मेरे पापा की बुआ लगती हैं पापा से कुछ आठ -दस वर्ष छोटी होंगी , उन्होंने मुझे गले

लगाकर कहा- "पच्चीस वर्ष बाद आई हूं इस गांव में वो भी सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारी बदौलत। आंखों से अश्रुझरित लड़ियों के साथ भावविह्वल हो पूर्ण आवेश में कहे जा रहीं थीं , बड़े पुण्य का काम किया है तूने। भोज कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात मैं मां और पापा के हाथों सभी लड़कियों और दामादों को उपहार दिलवा रही थी। गांव के सभी बड़े भैया लोग आ , आ कर मेरा माथा चूम -चूम बस एक ही बात कहे जा रहे थे हमें हमारी बहन पर गर्व है।

जब मैं जायज़ा ले रही थी कि कहीं कोई छूट तो नहीं रहा खाए बिना या जिसे उपहार न दिया गया हो ? तभी टेंट के पीछे से आवाज़ आई , सरोज! मैंने उस तरफ कदम बढ़ाया जिस ओर से आवाज़ आ रही थी , मैंने जैसे ही टेंट का परदा हटाया , देखा एक लड़की मुझे पुकार रही थी। मैंने पूछा- "तुम यहां क्यों खड़ी हो ? चलो भोजन कर लो। तब उसने कहा- "नहीं, मैं नहीं आ सकती सबके बीच !"

"क्यों, क्यों नहीं आ सकती तुम सबके बीच ? तुम तो लड़की हो", मैंने कहा ।

उसने कहा- "नहीं, मेरी शादी हो गई है, मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया है। इस लिए सबके बीच ना तो खाना खाने आ सकती हूं और ना ही उपहार ही ले सकती हूं।"

मैंने विस्फारित नेत्रों से उसे तकते हुए कहा - क्या कह रही हो तुम ? यह सब कब और कैसे हुआ ? उसने आप बीती सुनाई ।फिर मैंने कहा - इसमें तुम्हारा क्या कसूर है ? तुमने तो कोई गुनाह नहीं किया है । मेरे साथ चलो सबके बीच। मेरे बार -बार कहने पर भी उसने मेरे साथ जाने से मना कर दिया अतः मैंने उससे कहा- " अच्छा एक काम करती हूं , मैं तुम्हारे लिए खाना पैक करवा दे रही

हूं बस पांच मिनट रुको। मैंने एक साड़ी, एक चांदी का रुपया और खाने का पैकेट उसे ला कर दे दिया। उसने कहा- आप बहुत अच्छा काम कर रही हो। उसकी आंखों की कोर से आंसू टपक रहे थे मेरी पलकें भी भीग चुकी थीं।

ooo

आर्यावर्ती सरोज "आर्या"
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

व्यंग्य

पांडेय जी और पुस्तक मेले का शगल

-लालित्य ललित

पुस्तक मेला सामने है।लोगों को रामधुन लगी हुई है कि मेले में जाएंगे और मेले के हो जाएंगे।कुछ उत्साहित लेखक अपनी पुस्तकों के आवरण फेसबुक पर पोतने से बाज नहीं आ रहे। एक के बाद एक पोस्ट फेसबुक पर आ रही है जैसे पॉल्यूशन महामारी की शक्ल लेने में हिचक नहीं रहा।हिचकी है साहब वह तो लोगों के दिमाग में अटकी हुई है।

आज पांडेय जी ने महसूस किया कि वैश्विक समस्या है लोगों में कि हर कोई चाहता है कि उसका नाम और प्रसिद्धि हो और ज़माने में उसका नाम हो लेकिन साहब सारा खेल दौड़ का है जो दौड़ेगा आखिर में जीतेगा भी।

दुनिया को समझने में पांडेय जी लगातार आंखें खोल कर देखने में लगे हैं कि देखने का चश्मा जरूर विकसित कर लेना चाहिए।आज पांडेय जी ने देखा कि एक लेखक मित्र ने एक पोस्ट लिखी और फेसबुक पर साझा की उसमें लिखा था कि अत्यंत दुखी हो कर कह रहा हूं कि इस पुस्तक मेले में मेरी इस बार भी कोई पुस्तक नहीं आ रही।लोग लगे है कि कमेंट करने। पांडेय जी सोचने लगे कि दुनिया के कहीं पहिए तो नहीं लग गए।

बहरहाल जिसे देखो वह मोबाइल पर लगा हुआ है। पांडेय जी के मन में तरह -तरह के विचार आने लगे कि पुस्तक मेला न हुआ मुआ जी का जंजाल हुआ।जिसे देखो वह अपनी पुस्तकों का आवरण साझा करने में लगा है।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मेले में फलाने दिन मेरी पुस्तक की मुंह दिखाई होगी।आपसे अनुरोध है कि मेले में आएं और अपना आशीर्वाद देते हुए पुस्तक अवश्य खरीदें।बात भी सही है। पांडेय जी ने यह बात दफ़्तर में आए एक मित्र से कहा कि यह बताइए आजकल युवा पुस्तकें काहे नहीं खरीद रहे!

उस मित्र ने कहा कि युवाओं की रुचि मोबाइल खरीदने और ब्रांडेड कपड़े खरीदने में ज्यादा है। अब देखिए हमारे इलाके का कल्लू नाई भी लेखक हो गया।

पांडेय जी का मित्र सत्य नारायण पहले मुस्कराया और कहने लगा कि ज़माना बदल रहा है मेरे दोस्त। देखते जाओ आगे पता नहीं क्या क्या बदलेगा!

कुछ लोग कहने लगे कि मेले में जरूर जाएंगे।नई पुस्तकों से मुलाकात हो जाएंगी और लेखकों से मिलने का मौका भी तो। पांडेय जी सुनते और हंसते हुए मंथन करने लगे कि पठनीयता का संकट वैसे का वैसे का है कोई भी बदलाव नहीं आया।पहले भी लोग पुस्तकें नहीं खरीदते थे और आज भी कंजूसी करते हैं।

हम्म! पांडेय जी ने गहरी सांस ली और कहा कि आप तनिक भी मत घबराइए। सरकारी महकमे और गैर सरकारी संस्थाएं लगातार कोशिशें कर रही है कि पठनीयता का संकट जल्द से जल्द खत्म हो। बात तो सही है।अंतर्मन कुमार ने कहा। बात तो पांडेय जी आप मन से सोचते हैं और दिल से लेते हुए जुबान पर ले आते हैं।

पांडेय जी ने कहा कि मेले में जाएंगे और देविका गजोधर से मिल लेंगे। अचानक से उनको सपना आने लगा। माने दूध महंगा हो गया। पेट्रोल महंगा हो गया और तो और सी एन जी तक। आदमी कहां जाएं और क्या खाएं।

सोचिए देविका गजोधर और पांडेय जी की गजब ट्यूनिंग है,मिलना तो बहाना है। देखते है कि इस बार पांडेय जी देविका गजोधर से मिलते है या सिर्फ यह भी एक आत्मीय बहाना है। वैसे बहाना बड़ा सुहावना है।

मौसम बदल रहा है। गर्मी अपने यौवन पर दहकने के मूड़ में है। पांडेय जी ने दफ्तर का भी पंखा चला लिया है। रात को सोते समय भी पंखा चला कर सोते है। उनका कहना है कि पंखे की आवाज से ही नींद आती है।

यह उनका तर्क है और सोचने का तरीका भी खुद का इजाद किया हुआ है। अब कोई सोचे तो वह सोचता रहे कि पांडेय जी ने यह विचार क्यों सोचा और किस लिए सोचा!

राधेलाल ने पांडेय जी को कहा कि क्या हाल चाल आजकल!
पांडेय जी ने कहा-

ज़माना बदल गया। पड़ोस के बुजुर्ग शर्मा जी स्वर्ग सिधार गए। उनकी क्रिया शनिवार को है आर्य समाज मंदिर में है। राम लाल सतीजा की नई पुस्तक आ रही है नाम है मेले के रंग और और स्थानीय चिंतन ।

राधेलाल ने नाम सुना और सिर पीट लिया कि क्या हुआ महल्ले ले लोगों को , जिसे देखो वह लेखक बना हुआ है। गंगू तेली भी लेखक बन गया और छज्जू नाई भी।

तभी चिलमन गांव से शहर में आता हुआ दिखाई दिया। पांडेय जी ने चिलमन से कहा कि क्या समाचार है गांव के!

चिलमन ने बताया गांव में गर्मी आने वाली है आनंदी बुआ के घर बतहुए की भाभी के बेटा हुआ है। गांव में चहल -पहल है। लोगों में खुशी का आलम है। इस बार फसल अच्छी हुई है। चिलमन अपने साथ कई सब्ज़ी और फलों की टोकरी लाया था। पूरा मुहल्ला खुश था, आखिर गांव की सब्ज़ी और फल की बात ही कुछ और है।

पांडेय जी ने चिलमन का स्वागत किया और कहा तेरे जाने से मेरी शक्ति कहीं अवकाश पर चली गई थी

चिलमन ने पांडेय जी के चरण छुए और मिसेज पांडेय को थैला देने भीतर चला गया।

पांडेय जी ने कहा अजी सुनती हो चाय बना दो,चाय पीने का मन है और हां चिलमन आ गया है। पकौड़े भी बना लो।
लाती हूं पांडेय जी तनिक रूक जाओ ,जब देखो आवाज़ लगाते रहते हो,मशीन नहीं हूं,बना रही हूं, इंतज़ार कीजिए, समझे न!

इतनी देर में पांडेय जी सपने में खो गए :

पुस्तकें देश और दुनिया से
मुलाकात करवाती हैं
नए विचार और नए संदर्भों से भी
परिचय करवाती हैं
देश के रंग
उसकी मान्यताओं से
उसकी परंपरा से भी
परिचय करवाती हैं
पुस्तकें नए आधार से भी
जहां मुलाकात करवाती हैं
वहीं इसकी
आत्मीयता से भी
रूबरू होना सिखाती हैं
पुस्तकें जीवन को
उसकी अभिलाषा को
उसकी उम्मीद से
पुस्तक ही परिचय करवाती हैं

पुस्तक ही लेखक को नाम,
प्रसिद्धि और अर्थ भी देती है
बशर्ते पुस्तक पाठकों की कसौटी पर
खरी उतरे।

उठो, महाराज जी। मुझे चाय लाने को बोल दिया और यहां अपने सपने में खो गए। चिलमन इन्हे उठा और चाय ले जा। मैं तो रुक्के लगा-लगा कर हार गई, बेटा।

जी, आप चिंता न करो। में ले जाता हूं।

उधर पांडेय जी ने चाय पी , पकौड़े खाए और फिर से चिंतन कक्ष में चले गए।

आखिर पुस्तक मेला बुद्धिजीवियों का मेला बन कर रह गया।

कुछ लोगों ने कहा कि मेले में खाने-पीने के स्टाल बड़े महंगे हैं। नत्थू ने कहा कि बुधराम ने भी यह बात कही थी।

मेरी मानो तो भैरो मंदिर के बाहर से छोले -भटूरे पैक करवाओ और भीतर को ले आओ।इससे बेहतर न तो कोई विकल्प है और न कोई उपाय।

पांडेय जी ने सोचा कि एक सज्जन और भी है वे अक्सर यह बात दोहराते है कि प्रगति मैदान मेट्रो स्टेशन के सटे हुए अड्डे पर खाने-पीने के स्टाल तो मौजूद है साथ ही नक्शे और चाय पीने के

ठिए भी रहते हैं। जिसे जो पसंद हो वह वहां से खा-पी ले और घूम-फिर आए।

राधेलाल ने रामखेलावन से कहा कि क्या हो रहा है भाई साहब!

रामखेलावन ने कहा कि कोरोना के बाद लगने वाले इस पुस्तक मेले में ज़ाहिर तौर पर लेखकों से मिलने का मौका मिलेगा साथ ही नई किताबें देखने का शगल भी पूरा होगा। मैंने तो बड़ा सा थैला रख लिया है , इसमें कुछ किताबें खरीद कर रखूंगा और कुछ उपहार स्वरूप मिलेंगी , वह रख लूंगा। राधेलाल ने कहा यह काम अच्छा किया, ऐसा करना अंदर खाने-पीने का सामान बड़ा महंगा है , बाहर से आते समय तुम मेरे लिए दो प्लेट छोले भटूरे लेते आना , तुम बढ़िया मित्र हो, उम्मीद करता हूं भूलोगे नहीं।

रामखेलावन का मुंह उतर गया , जैसे दूध फट गया हो और अब वह पनीर बनने से भी रहा।

क्या खेल है और क्या मायावी दुनिया!

जो सोचते हैं वह होता नहीं और जो नहीं सोचते वह हो जाता है...

पांडेय जी आजकल सोचते बहुत है , वैसे भी अंतर्मन कुमार का कहना है कि सोचना मनुष्य को चिंतनशील बनाता है और यही

ताकत होती है एक विचारवान मनुष्य की , जो सजग रहता है और उसकी पैनी निगाहें उसे प्रखर बनाने में सहायता भी करती हैं।

उधर रामखेलावन महाकवि से परेशान था , उन्होंने कहा था कि आपकी पुस्तक पर भूमिका लिख दूंगा , मगर महाकवि के पास समय नहीं था सो राधेलाल ने भी कन्नी काट ली, मानो आज़ादी का दिन हो और आसमान में पतंगें उड़ी जा रही हैं , वैसे भी चाइनीज़ मांजा बाज़ार में प्रतिबंधित था सो राधेलाल की पतंग कई बार कटी जिसे राम किशन पुनिया ने अपनी छत से पकड़ लिया। उम्रदराज़ होने के बावजूद भी उसकी पकड़ में कोई ढील नहीं दिखाई देती।

देविका गजोधर का फोन बज उठा, पांडेय जी के साथ डिनर फिक्स हुआ,और वह भी प्रेस क्लब में।

पांडेय जी सोच रहे थे कि बड़े दिन हुए जों का पानी पिए हुए। आखिर चीयर्स का अपना जमाना है जब पांडेय जी कहते हैं कि रिपीट कर देना तो देविका को पांडेय जी का यह अंदाज़ बहुत भाता है।

टिप्सी मुटरेजा ने कहा कि मेला -वेला ठीक है, मेरी तो कोई भी किताब नहीं आई , इस बार। राम जाने क्या हो गया है। कहीं भक्ति पूजा-पाठ करना पड़ेगा तभी गाड़ी सृजनातमक क्षमता वाली आगे खिसकेगी। वरना अपना ज़माना ऐसा है कि लगे रहो तो कोई पूछता है अन्यथा सब कहेंगे कि कहां गए वे लोग! ऐसा सोच कर ही डर लगता है। कोरोना ने कितने रचनाकार हमसे छीन लिए! कितने

दूर चले गए और जहां से कोई भी वापस नहीं आता। सोच कर ही सेंटी हो गई टिप्सी। भला हो रामखेलावन का जो दूर से ही दिख गए आइस्क्रीम खाते हुए, अब उन्होंने टिप्सी को भी आफर की तो टिप्सी ने कहा बटर स्कॉच लेना , मुझे वही पसंद है।

भाई लोगो मेला तो बहाना है इसी बहाने कइयों की भड़ास निकल जाती है आखिर चुगलियों का बाजार भी गर्म हो जाता है। और तो और भीड़ का हजूम भी देखते ही बनता है। किसी स्टाल पर कोई पुस्तक लोकार्पित हुई। बर्फी बंटी और भीड़ साफ। अब प्रकाशक सोचता है कि किताब तो पांच बिकी और चोरी हुई बीस। ये भी मेले के रंग हैं जो साथ -साथ चलते हैं उम्मीदों के संग और आशाओं के संग।

पुस्तक मेला जैसे आया वैसे ही अनगिनत यादें और स्मृतियां दे गया। कोई सम्मानित हुआ और कोई आप समझ सकते हैं।

पुस्तक मेला तमाम अनुभव के साथ संपन्न हुआ। कई मित्रों को नए अनुभव मिले, कइयों को कुछ कटु अनुभव भी। यही ज़िंदगी है और जिंदगी का स्यापा भी।

देविका गजोधर को पांडेय जी की कंपनी पसंद है जैसे पहले वह गीत पसंद आता था सबको, बेबी को बेस पसंद है।

बहरहाल सोते-सोते पाण्डेय जी बिस्तर से करवट लेते हुए गिर पड़े और कहने लगे मेरी पुस्तक का लोकार्पण था।

कहां गए मित्र वक्ता और कहां गई पुस्तक जिसका रिबन बंद था।

तभी रामप्यारी आई और कहने लगी कि पांडेय जी मैं तो आपसे तंग आ गई। जब देखो तब सपने लेते रहते हो। आज होली है और सुनो चीकू के पापा पुस्तक मेला निपटे तो हफ्ता हुआ।

उठो! और ओमप्रकाश से अंडे , ब्रेड लेते आना और चौरसिया से एक किलो पनीर। आज होली है, मेला कहां गया।

क्या मुझे दिन में भी सपने आने लगे। क्या मुझे देविका से प्यार हुआ!

पांडेय जी बाज़ार की ओर निकल पड़े आखिर महारानी के आदेश का पालन जो करना था।

क्या ज़िंदगी है जब जगजीत सिंह की ग़ज़ल सुनने का मन होता है तो सुनाने वाले के एल सहगल के गीत लगा देते हैं।

ओ म्हारा राम जी!

ये ज़िंदगी के मेले जो कभी कम न होंगे। बात को पांडेय जी ने दिल से लगा लिया। घर पहुंचे तो चीकू गुब्बारे भरने में लगा हुआ था, अब पांडेय जी को भी लगने लगा कि आज वास्तव में होली की रंगोली है तभी रामप्यारी ने पांडेय जी के गालों पर गुलाल लगा कर होली की शुभकामनाएं दे डालीं।

ooo

पुस्तक समीक्षा

सुविचार संग्रह : मेरी नज़र में

-डॉ. चंचल भसीन

आज के बदलते हुए समाज में शायद मनुष्य की क़ीमत कुछ नहीं रह गई है। जिन मानवीय कदरों-कीमतों की हमारे पुरखों ने जिस पर समाज की नींव रखी थी, उन मूल्यों को हम कहीं दूर छोड़कर एक ऐसे समाज में प्रवेश कर रहे हैं जहां पर हमारी परम्परवादी रूढ़ीगत मान्यताएँ टूट रही हैं, रिश्ते-नाते बिगड़ते जा रहे हैं। ऐसे समय में मनुष्य अपने-आप से कितना अलग होकर अपनी आकृति को पहचान पाता है यही आज के समाज के आदमी की कथा है।

ज़िदगी क्या है। किसे कहते हैं, क्यों कहते हैं। इसकी खोज में ऋषि-मुनि, वैज्ञानिक लाखों लोग लगे रहते हैं। इसमें कुछ खोजा जा सकता है संपूर्ण कोई नहीं जान पाता। काल और परिस्थितियों के अनुसार अच्छी या बुरी परिभाषाएं बदलती रहती हैं। व्यक्ति के जीवन जीने के उद्देश्य कई हो सकते हैं, जैसे- पैसा कमाना, कुछ बनना, कुछ बड़ा करना इत्यादि। लेकिन जीवन जीने का अर्थ यही नहीं होता, जीवन जीने का अर्थ है हम किसके लिए इस दुनिया में आए और क्या वजह है कि हमें यह जीवन मिला।

दरअसल, जीवन एक व्यवस्था है। ऐसी व्यवस्था, जो जड़ नहीं चेतन है। स्थिर नहीं, गतिमान है। इसमें लगातार बदलाव भी होने हैं। ज़िंदगी की अपनी एक फिलासफी है, यानी जीवन-दर्शन। सनातन सत्य के

कुछ सूत्र, जो बताते हैं कि जीवन की अर्थवत्ता किन बातों में है। ये सूत्र हमारी जड़ों में हैं। जीवन के मंत्र ऋचाओं से लेकर संगीत के नाद तक समाहित हैं। हम इन्हें कई बार समझ लेते हैं, ग्रहण कर पाते हैं तो कहीं-कहीं भटक जाते हैं और जब-जब ऐसा होता है, ज़िंदगी की खूबसूरती गुम हो जाती है। हम केवल घर को ही देखते रहेंगे तो बहुत पिछड़ जाएंगे और केवल बाहर को देखते रहेंगे तो टूट जाएंगे। मकान की नींव देखे बगैर मंज़िलें बना लेना खतरनाक है, पर अगर नींव मजबूत है और फिर मंज़िल नहीं बनाते तो ठीक नहीं है। केवल अपना उपकार ही नहीं परोपकार भी करना है। अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी जीना है। यह हमारा फ़र्ज़ भी है और ऋण भी, जो हमें समाज और अपनी मातृभूमि का चुकाना है।

भगवान परशुराम ने यही बात भगवान कृष्ण को सुदर्शन चक्र देते हुए कही थी कि वासुदेव कृष्ण, तुम बहुत माखन खा चुके, बहुत लीलाएँ कर चुके, बहुत बांसुरी बजा चुके, अब वह करो जिसके लिए तुम धरती पर आए हो। परशुराम के ये शब्द जीवन की अपेक्षा को न केवल उद्घाटित करते हैं, बल्कि जीवन की सच्चाइयों की परत-दर-परत खोलकर रख देते हैं। हम चिंतन के हर मोड़ पर कई भ्रम पाल लेते हैं। प्रतिक्षण और हर अवसर का महत्व जिसने भी नजरअंदाज़ किया, उसने उपलब्धि को दूर कर दिया। नियति एक बार एक ही क्षण देती है और दूसरा क्षण देने से पहले उसे वापस ले लेती है। जीवन का अर्थ है अपनी पूर्ण संभावनाओं के साथ खुलकर जीना। अपनी संभावनाओं का आनंद लेते हुए समाज और प्रकृति के संवर्धन और संरक्षण में सहयोग देना।

पुस्तक सुविचार संग्रह:

श्री चूनी लाल शर्मा डोगरी, हिंदी और उर्दू के वरिष्ठ साहित्यकार हैं जिन्होंने जम्मू-कश्मीर स्कूल शिक्षा विभाग और रेडियो जम्मू में अपनी सेवाएँ प्रदान की और रेडियो जम्मू से बतौर प्रोग्राम एग्ज़ीक्यूटिव सेवा निवृत्त हो गए। इन्होंने रेडियो जम्मू में कार्यरत रहते हुए हिंदी, डोगरी और उर्दू भाषाओं में साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं समसामयिक विषयों पर लेखन, संपादन तथा प्रस्तुतीकरण का कार्य किया। इसके अतिरिक्त, रेडियो रूपक, रेडियो दस्तावेज़ी वृत्तचित्रात्मक रूपक, एवं रेडियो रिपोर्टस के क्षेत्र में कार्य किया। आकाशवाणी के राष्ट्रीय चैनल्स हेतु अनेक रूपक लिखने और निर्माण करने का सौभाग्य भी इन्हें प्राप्त है।

इन की अब तक सुविचार संग्रह से पहले दो अनुवाद की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- पहली पुस्तक सैय्यद मुहम्मद अशरफ़ का कहानी संग्रह 'वादे सबा का इंतज़ार' का डोगरी अनुवाद 'पुरै दी निहालप' और सुप्रसिद्ध पंजाबी की साहित्यकार अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' का डोगरी में अनुवाद जिसे साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से प्रकाशित किया गया है। इस के अलावा कई भारतीय भाषाओं की कहानियों का डोगरी में अनुवाद डोगरी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका हैं।

यह पुस्तक लेखक चूनी लाल शर्मा जी की तीसरी पुस्तक है। जो 150 विचारशील विचारों का संग्रह है। भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और दर्शन पर आधारित है। जो विभिन्न धर्मों के पवित्र ग्रंथों में निहित हैं। विचारों के माध्यम से उठाए गए विषय पाठकों को सकारात्मक सोच और सही मार्ग अपनाने और उस पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। लेखक ने इन सुविचारों के विषयों को तीन भागों में बाँटा है-

पहला भाग:

सामान्य व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित विषय:

इस विषय के अंतर्गत 90 सुविचार, मानवीय मूल्यों, ईमानदारी, नैतिकता, सामाजिक मूल्यों, सादगी का मार्ग अपनाने दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर ज़ोर दिया गया है। इन छोटे-छोटे सुविचारों में जीवन के गूढ़ रहस्य हैं जिसे अपनाने से जीवन को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। इन विचारों में-पराक्रम, विद्या, कृतज्ञता, नागरिक भावना, जागो रे जिन जागना, सहनशीलता, हमारे संस्कार, श्री राम की विनम्रता, नेकी से नेकनामी, पश्चाताप, एकांत आत्मचिंतन, जैसा आहार, वैसा विहार, हमारी सोच, रैदास जी का संत संदेश, करुणा, लोभ, प्रसन्नता, आदि।

संग्रह का पहला विचार 'पराक्रम' जिस का अर्थ शौर्य, बहादुरी अर्थात् जीवन की चुनौतियों का सामना करने का उत्साह है। लेखक ने राम चरित मानस के सुंदर काण्ड के माध्यम से पाठकों को समझाने का प्रयास किया हैः

"कादर मन कहूँ एक आधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।"

अर्थात् कठिनाई का सामना पराक्रम से करना चाहिए न कि केवल प्रभु का नाम जपने से। कठिनाई का सामना न करना कमज़ोर मनोबल और आलस्य की निशानी है। भगवान श्री राम का आदर्श सिखाता है कि समय आने पर पराक्रम अवश्य दिखाना चाहिए। पराक्रम सभी में छिपी निडरता है जो इसे पहचान लेते हैं वे अवश्य रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को दूर करते जाते हैं। "नेकी से नेकनामी" अर्थ साफ़ है कि हम अच्छा करेंगे

तो उसका परिणाम भी अच्छा होगा। हमारी भारतीय संस्कृति में सफल जीवन की कसौटी धन और संपत्ति नहीं बल्कि नेकी और परोपकार है। नेकी से नेकनामी और बदी से बदनामी मिलती है।

सुविचार नाम का विचार जिसमें लेखक ने रवीन्द्र नाथ टैगोर की परिभाषा से समझाने की कोशिश की हैः-

"सदा प्रसन्न रहो। इससे मस्तिष्क में सुविचार आते हैं तथा चित्त शुभ कर्मों की ओर लगा रहता है।"

इसमें कोई दो मत नहीं है कि विचारों से ही व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन आता है सुविचार अर्थात् शुभ विचार, सुंदर विचार अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। व्यक्ति को निराशा से निकालकर आशा में ले जाते हैं आशा का दामन थामने वाला व्यक्ति आशावादी होता है। प्रगतिवादी होता है। ऐसा व्यक्ति सकारात्मक सोच के साथ चलता है और अपने मार्ग की कठिन से कठिन बाधाओं को दूर करके अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। सकारात्मक व्यक्ति रचनात्मक कार्य करता है और प्रसन्न रहता है। अर्थात् सुख की इच्छा करो अपने लिए भी तथा दूसरों के लिए भी। ऐसे और भी उपदेशात्मक विचार है।

दूसरा भाग:

दिवस-अवसर विशेष:

इसमें 35 अलग-अलग धार्मिक गुरुओं के सहित भारतीय महापुरुषों के विचारों को संकलित किया गया है। ये सभी विषय समाज में समावेश, सह-अस्तित्व, शांति और सद्भाव का संदेश देते हैं जैसेः- श्री गुरु

नानक देव जी का संदेश, जिन्होंने अपनी वाणी के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश दिए उसे भक्ति, मानवता तथा एक ईश्वर बात की बेजोड़ धारा कहा जाता जा सकता है। उनके जन्म से पहले समाज जातिवाद, अंध विश्वास तथा धार्मिक संकीर्णताओं में उलझा हुआ था। इन्होंने जाति व्यवस्था, सामाजिक बुराइयों, अशांति, बैर-विरोध को नष्ट करके एक सभ्य समाज की स्थापना की। इन्होंने किरत करना और वंड छकना का आदर्श मंत्र दिया। यानि मेहनत की कमाई करना तथा बाँटकर खाना।

पूज्य श्रीगणेश- हमारी संस्कृति में कोई भी शुभ कार्य करने के लिए शुभ मुहूर्त देखा विचारा जाता है और जब कार्य आरंभ करना हो तो पूजा पाठ से किया जाता है। इस समय सर्वप्रथम जिस देव को आमंत्रित किया तथा पूजा जाता है, वह हैं गणपति। जहाँ तक कि हम दैनिक पूजन तथा चिंतन से पूर्व भी गणपति गणेश का स्मरण करते हैं। जो विघ्न-बाधाओं के हर्ता हैं, बुद्धि दाता, सुख समृद्धि तथा सौभाग्य के स्वामी हैं, देव हैं। वे प्रथम पूज्य इसलिए हैं कि हमारी सृष्टि अलग-अलग ऊर्जाओं का समूह माना जाता है। इन ऊर्जाओं पर यदि किसी का नियंत्रण न हो तो दृष्टि में उतर- पुथल मच सकती है। गणेश का शाब्दिक अर्थ है घन+ईश गणों के स्वामी। गणपति सर्वव्यापी है, सर्वोच्च चेतना है। पर आज की युवा पीढ़ी ये सब भूलती जा रही है। वे पश्चिमी सभ्यता में पूरी तरह से डूब चुकी है। जिससे अपने संस्कारों का हनन हो रहा है।

व्यक्ति की पहचान उसके कार्यों से होती है। देश और समाज के लिए महान कार्य करने वाला व्यक्ति ही महान कहलाने का अधिकारी बनता है। आधुनिक काल में जिन महानुभावों ने भारत को नवचेतना, नई दिशा नई ऊर्जा दी उनमें बड़ा नाम डॉ. अंबेडकर का भी है। डॉक्टर

अम्बेडकर एक विधिवेता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ तथा एक समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। उनका कथन है:

"जीवन लंबा होने की अपेक्षा महान होना चाहिए।" अर्थात् जीवन में कुछ सार्थक होना चाहिए, जिस से समाज का भला हो सके और आप के बाद भी समाज आप को याद रखे। ऐसे ही कई और भी विचार इस विषय के अंतर्गत रखे गए है जैसे-

बच्चे मन के सच्चे,(बाल दिवस) नारी शक्ति के सम्मान का पर्व नवरात्रि, शक्ति उपासना का पर्व नवरात्रि, भगवान महावीर का संदेश, विजय दशमी, श्रद्धा और प्रेम का पर्व- भाई दूज, संविधान निर्माता डॉ. अंबेडकर, महाराजा हरि सिंह, याद-ए-कर्बला-मुहर्रम, प्रेम प्यार के मसीहा यीशु मसीह, माह-ए-रमज़ान, हज़रत मुहम्मद साहब का पैग़ाम, हज़रत मुहम्मद साहब ने फरमाया, गुड फ़्राइडे का संदेश, हमारा गणतंत्र, लीला धर श्रीकृष्ण, रक्षाबंधन, कारगिल के शहीदों को नमन, नाग पंचमी, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक पुरुष सरदार पटेल, नव वर्ष हमें सिखाता है, राष्ट्रभाषा हिन्दी, बुद्ध वाणी, पुण्य एवं स्वास्थ्यवर्धक तुलसी, मानवीय मूल्यों के रक्षक गुरु तेग़ बहादुर वगैरा-वगैरा ऐसे कई विषयों पर आधारित विचार इस भाग में संकलित हैं।

तीसरा भाग:

गांधी जी का जीवन दर्शन:

इसके अंतर्गत हैं 25 विचार, ये गांधीवादी विचारों और दर्शन पर आधारित हैं। जिसे अलग-अलग शीर्षकों से जैसे-गांधी जी की

व्यवहारिकता, मानवता के पुजारी गांधी जी, और अधिक पाने की भूख, गांधी जी की नज़र में है-सच्चा धर्म, गांधी जी की दृष्टि में कर्मफल, जहाँ मानवता वहाँ गांधी, हमारे विचार हमारी पहचान, गांधी जी का शांति संदेश, भारत छोड़ो आंदोलन, गांधी जी की नज़र में सात पाप, बदलाव के बारे में गांधी जी का नज़रिया आदि कई और भी विचार।

ये समकालीन समाज के लिए प्रासंगिक हैं और भविष्य में भी समाज में प्रासंगिक होंगे। महात्मा गांधी ने कहा था कि मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा ईश्वर है और अहिंसा उसे पाने का साधन। यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना पहले था। गांधी दर्शन भटके लोगों को रास्ता दिखाने का काम आज भी कर रहा है। संसार के हर कोने में तथा हर काल में उनकी विचारधारा हर इंसान को मानवता और राष्ट्र प्रेम का मार्ग दिखाती रहेगी।

आख़िर में, कहना चाहूंगी कि हिंदी साहित्य के पाठकों के लिए एक श्रेष्ठ पुस्तक है, जिसमें विभिन्न विषयों के विचारों को एक जगह समेट कर रखा गया है।यह लेखक के गहन शोध और परिश्रम का नतीजा है। हर वर्ग का पाठक इस पुस्तक को पढ़े क्योंकि इसमें बहुत ही विचारणीय विचार हैं। हर व्यक्ति को इसे अपने जीवन में अपनाने की ज़रूरत है। एक बार फिर लेखक को श्रेष्ठ कृति के लिए बहुत-बहुत बधाई।

ooo

45-ए, कृष्णा नगर
जम्मू-180016
मोबाइल नं. 9419128788

शीराज़ा हिन्दी (द्विमासिक)
लेखकों से अनुरोध

1. शीराज़ा हिन्दी में छपने के लिए भेजी जाने वाली सामग्री यथासंभव सरल और सुबोध होनी चाहिए। रचनाएँ प्रायः कृति देव 10 फांट में टंकित रूप में भेजी जाएँ। **रचनाओं के साथ मौलिक अप्रसारित एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र भी भेजने का कष्ट करें।**
2. अनुवाद तथा लिप्यंतरण के साथ मूल लेखक की अनुमति भेजना अनिवार्य है। इससे रचना पर निर्णय लेने में हमें सुविधा होगी। मूल कविता का लिप्यंतरण टंकित होने पर उसकी वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ प्रायः नहीं होंगी, अतः टंकित लिप्यंतरण ही अपेक्षित है। रचना में अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर **और ई मेल भी देने का कष्ट करें।**
3. सामग्री के प्रकाशन विषय में संपादक का निर्णय अंतिम माना जाएगा।
4. रचनाओं की अस्वीकृति के संबंध में अलग से कोई पत्राचार कर पाना हमारे लिए संभव नहीं है।
5. समीक्षार्थ पुस्तकों की दो प्रतियाँ भेजी जानी चाहिए।

पत्र व्यवहार का पता

संपादक

शीराज़ा हिंदी,

जे. एंड के. अकैडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़

कैनाल रोड, जम्मू 180016 , जम्मू व कश्मीर

ई मेल – trcjkaacl@gmail.com

Regn. No :28871/76 **June – July 2023**
ISSN : 2279-0330 **Total No. 275**

Published by the Secretary on behalf of
J&K Academy of Art, Culture and Languages, Jammu
Printed at Government Ranbir Press, Jammu.